

प्रथम सर्ग

भील भारतक मध्य भारत उदित भाष्यक मानु
नागु जगमग ज्योति यश जग रूप माला मानु
बुद्धि विद्यायल-विमयसै बदल विश्वाह नाम
कान गरिमा मुखक गणना सतत हो सभ डाम

भूप नीलिक रीति पालयसै सतत रदु दस
सुदय चन्द्रक चन्द्रिका जग चमक अनिशय स्वगत
आपदायक समय कुरुकुल विदित भारत धाम
हस्तिनापुर राजधानी भूपक परम ललाम

ताहि धंशक वंशधर दुर कुमार भाषी भूप
जेठ आम्बर, छोड रोगी भाग्याहंक अनुकप
जेठ कुमरक नाम छल भूतराष्ट्र जग-बिलयात
जेठ पाण्डु कहाड तनिकर बुद्धियल अश्रुत

जेठके भेल भील गाही पुत्र परम सुशंस
एकसँ बधि कुदिल छल सभ, भेल तेँ विध्वंस
छोड रोगी भय प्रतापी पुत्र पाओल पाँच
देव-अंगहिँ कथिल मृनिवर बात मामिअ सौच

"तं वरन्तः श्रोतुमर्हन्ति
सर्वसद् - शक्ति - हेतवः ।
हेमः संतत्यन्ते ह्यगमो
विश्वहिः श्यामिकापि वा ॥"

—कालिदास

धामे अंशदि सै युधिष्ठिर, भीम बायुक अंश
रुद्र-अंशदि श्री अर्जुन अंशकुल-अवतंस
नकुल श्री अहोदेव माद्रिक ननय जग-प्रवृत्त
ई इह लोदर रहति सुरवैद्य-अंशदि ज्ञात
यदि पाँचो वीर अनुभव विदित जगत अनन्य
गरि अर्जुन मार्यमहि सम सखुमे अतिधन्य
पाण्डु-पुत्र पाँचो पाण्डव नाम जग भरि जान
नवात कीरव जगनमे धृतराष्ट्रिक संभान
अश्व जे धृतराष्ट्र ते नहि नृपति-वद जग देल
अथ कनिष्ठो पाण्डुर नृप-वद प्रतिष्ठित मेल
रावि पाण्डु महाप-वद निज राजवंशक रोति
प्रजा-पावनने प्रशंसित बहु प्रयोग सुनीति
नीतिमे अनि मित्रु मंत्री विदुर मान्य विशेष
राजकाजक मन्त्रालय सुयश पसरल देश
शाप वश शंति शल राजक पाण्डु मत्त सुरवाम
नेन ने धृतराष्ट्र ननय भूरवद तेहि शाय
नय नृपति, नय नये अनुमान करवि देश प्रचार
प्रजा शक्ति कर वा अशक्ति कर, न करतकर विचार
होधि शिक्षित सबहुँ राजक मुख्य करतव्य मानि
विनिय विधि आचार्य द्रोणाचार्यके सन्मानि
देस एक समय पाँच राजक तमिह संग लगाय
अनुविद्या सिद्धि कीर्य पाण्डवो मन लाय
जयम हो शिक्षा-परीक्षा ओति अर्जुन लेधि
कय प्रशंसा द्रोण सभ मन आशियो शुभ देखि

माहसे द्रोणहिँ छोकाओल जीत दुपदहिँ आनि
गुरु-प्रतिष्ठा पति कर गुरु-दक्षिणा मन मानि
द्रोण परम प्रसन्न मन, कहि 'पाँच !' आशिय देल
ताहि दिनसँ पार्थ संज्ञा भय विशेषण मेल
अंग-अंगक गठन हुनि लखि जोश मनमे पाण्ड
वीर रस तनु धारि कय जनु मेदनीम टाड़
दण्ड भुज कोदण्ड सम दय जग उदण्डहिँ प्राय
हुमहिँ पार्थ प्रचण्ड शनक कर प्रमण्डक नाश
काम-अव विजयी जनिक हन-उद्योतिहँ जनि रोल
मनिक संगहु समरमे यश-अस्थ अर्जुन लेख
जनिक सुविशुण आपरा मन मदन उन्मद भयल
ततय श्री मय धर्म चलहत विषय पद नहि भयल
नय कनय संसर्ग सद्यो बुद्धि जग जग पार
योगदिक रोगे रसायन विविध गुण दृशीय
सतत शकुनी सन कुसंगी रहति कीरव संग
निरत कत कत कुंडलका पर दुष्टाक मर्ग
रहति कणक सन मन्त्रवा मन्त्रणा मै दश
भीति धर्म सुपातुरी परिपूर्ण पाण्डव पस
पाण्डवक मन मीति-रत, दुनीति कीरव ध्यान
हुहुक समेलन बुझक धिक दूध-अमल समान
भाय सय, शकुनी महायक जनयपुट निधान
पदल सुधीन-द्वयमे कूट-नीतिक ज्ञान
घिलटि जार मरि जाय पाँचो जे ने पायय राज
ताहि हेतुक कतेक कोशल कथल रवि रवि स्याज

राज भोगक सोम करार होम ने हिय-बोव
साहि कारण फाज क-कर जगत उंचो सोम
सोम शयनस्तभावसमधिक सुकिस साहिविचारि
कंस विज किनहुँ लपोक पर अंश लय कर मार
भाय-भास्कर भास्कर नम शिलरस हरि सेल
तदपि मोघा प्रचलत नव कूट बनुइत मेल
हूट-पीत प्रचलत आतप, असह सभकौ लाग
अन्य-अन्यहि तोपत भय कहुँ चाह लय पर त्याग
दलक मज्जहिसे सुभी घन घुमहि नभ चढ़ि गेल
घरत वातक प्रेरणालें शान्ति मति लन लेल
बहल कूट पिहाहि बड़का विपति कामक भय
अंतमें ताकाल भय रह हारि शान्ति स्वभाव
कूट मोति प्रकाश होय कयल कनयोक देनि
हृत्पद रक्षक पाण्डु पलक चकल कर धिनु देनि
प्रजा पोटिन कर पाण्डु अग्रह दुर्विज भेल
पुनः-कलह छुपयत धूमिध देश-दुख ले गेल
कुल-कलह की कलह-कारक करिय मत विजयस
धंश धंशक रगड़ अग्रजक धंश धंशक नाव
कयल भारत भाग दुह एक लेल कीरव भाय
सेन पाण्डव पांच भाइक हेतु देल वैराग
पांच पाण्डव सेन गच्छि जे भेल हुनका देश
इन्द्रप्रस्थाहि अग्रत रक्षालि राजधानी धंश
सकल हुम्नरताक सीमा भगर रचना नीक
मुचनभरिमे भय एकरहि अग्रह कहये थीक

सुघरु दिखी अति प्रयत्नहि लेन कय रसि देल
जकर उपमा जगतमे कवि ताकि धकि रहि गेल
देखि शोभा भगर सुरपुर भूप मन ललचाय
तनय सुखदायक विचारहि ॥ इति हिय हरपाय
राज-भवनक भव्यतालें भव्यता भय होन
भयहि की कहुँ तानि लोकक लेल दुवि अनु कोनि
सौधगर रुड़ एरुड मसिदन भजा रह फहराय
भवय हम इन्द्रासनहुलै, कहय हाथ उटाय
अं सुमेह सुमेह अथलक तैं कि तुलना पाव
निय नव रचमाक शोभा की ओगध द्रव्याय
विश्व परिखामे पड़ल लखि पद्म छोड़ भान
सौध दाहो दुखय उलिगुह हेतु कयल पयान
नभ धिनुप्रियत लोधपर मणि-स्वयिन कलश प्रकाश
अनगनित रवि दुधित कर अनु दिवसपतिरौ हाल
दिव्य दीपक दीति अतिमय चमक चकमक देखि
नखत नभ तजि नगर-शोभा अनु रहल निखि पैंकि
राजपथ राजित अग्रुम सतत सिद्धिंत चारि
पार्श्व पथ तस्वरक शोभा अधिक जग सुगकारि
वनल वीथी घटुन बहुविध विविध भौति सभारि
स्थल लभ सन वनल रह से मलिन मस्तुहि नारि
घाटिका चिटपायली फलपुन नमित बहु डारि
धनी मानी नम्र भय रह, कहय अनु परचारि
दिवस-निशि भरना भहरि रह घाटिका घर बीच
अनु प्रगटि पाताल-गंगा सतत रह जल खीचि

कुसुम कानन कुञ्ज सुखित अमल अमरक भीर
रसिक रस-सम्पद रमित रस रहल जे नहि थीर
सुधासन खलिसहि भरल सरनिरखि सुरसर सुध
कटिकमणिले रचित धल भल जगत जन मन लुब्ध
हल सारस धन्याकारिक बहक चहुँ ओर
कज कुमुदिनि कुसुन रचित रसिक-चित अनु चोर
घरनु विश्वक विविध विधिले धुस पीस बजार
गलक गण गणना-प्रयुक्तहुँ पायि सक नहि पार
नृप सुधिप्रिय नीतिरत नित चारि भाय सहाय
प्रजा पूरक सम्पदासँ सतत रह हरपाय
प्रजा प्रभुकेँ पूज्य मानय देवदेव समान
चिकिषि नृप पालक पिता सम राखि मारमे श्वाभ
नृपति नियमहिँ निरत नय-पथ अनय धर नहिँ कान
कपट दिसि दग अमहुँ नहि पड़ ओष ग्रथ से जान
रहत सम जन सुखित सभ जन बहि लहरि आनन्द
प्रजा पाण्डव-राजमे सभ युधि पद निर्दोष
हो प्रदोषहिँ शब्दमे तहँ दोष शब्द उचार
नयचपू रति रमित गतिरै करय क्रोध प्रचार
रागमे अनुराग गायक मावकेँ दिन-पाम
दिक गणना मध्य आशय ततय सोमक नाम
शब्द विग्रह भवण सुनि पड़ देवप्रतिमहि ठाम
दोद कोकिल-काक दामे पुत्र पोषक काम
कपिअहिँक चित निरत चिन्ता बाढ जरणक सत
नारि नच दग-घोर सुष-मन-धन हरणमे दह

पापहिँक भय सभक मनमे, धर्महिँक एक लोभ
मोह मातस मनुज जन्मक, प्रणहिँक चित लोभ
इन्द्रप्रथक शत्रुजित दुधि पार्थ रसक थीर
विमय बल यश वदय नित नित निरखि शत्रु अधीर
देखि दुर्योधन दुखितमन द्वेष द्विगुणित जागु
शुक्ल यतनहिँ दुष्टता करपाक पधमे लागु
अर्जुनक के कहि सकै अलि सकल सौर्य-प्रताप
यशकथा जग मध्य जनिहर एकसँ एक थाप
द्रीपदी-उद्गाह हेतुक नृप नरपति धाम
भूप भरि सुधनक भरल भल सभा शोभा ठाम
एकसँ सुल एक वीरक मण्डली जुटि गेल
मोक्ष पर दय ताव पुनि पुनि कमर कसि कसि लेल
मत्स्यलेखी प्रह पुरयमे जगत थीर ने दल
पार्थ नाम सत्य कथ कहुँ बेचि देलन्हि दल
उठल जयजयकार सुमनस कथल सुमनक वृष्टि
पायकेँ जयमाल द्य कहुँ द्रीपदिक हिय छष्टि
जीति जग नृप विज स्वयंवर द्रुपदतनया लेल
जेँ जगतमे शोर विजयक अर्जुनक भय गेल
मानि माइक बात पाँचो माय कयल विवाह
मातृभक्तिक भाध रत भय करयि सब निर्व्याह
देखि बिलवय्या सभक मन ई करय विश्वास
प्रकृति पाँचो मर्मइन्द्रिय संग कर सुल वास
सबहुँकोँ सौजन्य समसँ आत्मभाव विशेष
केयो किनकहुँसँ ने कहलान धरिध मन विश्लेष

जो दुपदतनया-स्वरूपक लालची जग भूप
ते कदक धिक हुनक सन अलि एक हुनके रूप
विशेष्यजन करयमे जो कैयो कहि मन वेधि
सोन पीतारि दुख कहि कहि व्यर्थ अपयग लेधि
एक पुरुषके नारि अनेको पूर्वजालसे देखो
एक नारिके पाँव पुरुष, ई नये रीतिके लेखी
धर्म-भीरु पागुडय कहु धर्मक कयल किये अपमाने
एहन गहन छेकटगे की हो, के कय सक अनुमाने
उतटल काज अवश दुखदायक है ई जग जन जान
ते ई चित्त चित में सब खन होअ न आनक आन
श्रीकृष्णक मन रक्तक सभ मन बनल रहथि सभ ठाम
ते देखक धिक सभका मन दय की होइतु परिणाम

द्वितीय सर्ग

श्रीकृष्ण रक्तक प्रसन्न सदैव जाहि
आपत् अनेक दुन में डरि जाय ताहि
देवात दुःखक वशा यदि होय प्राप्त
ओ कौतुकीक किहु कौतुक मानु न्यात
धर्मक - चिन्तन सदा भगुरक विच
धर्मानुसार सभ कर्महि मे प्रवृत्त
धर्मवैलम्बि अथि धर्मक अंश-जान
ते धर्म नामहि सुधिष्टिर विश्वक्यात
योभक्तु भीम लकुटादिक जे कनिष्ठ
सखर्म चिन्तक सदा सकर्मनिष्ठ
आज्ञा अधोन नृपहीक विराजमान
श्रीकृष्ण रक्तक सदा मन मध्य ध्यान
हो नित्य - कृत्यक मिथ्या समयातुकृत
जे किछु हो सयहिने धर्मक - मूल
से दष्टि राजधि सदा सभ राजभृत्य
ते धर्मराज - यज्ञ वाई नित्य नित्य
मन्त्री सुमन्त्र सविशेष सुमन्त्र वृत्त
धर्माधिकारिक विचार विशेष स्वच्छ
अन्यान्ध भृत्य निज कर्मक बालु पत
वाई पशोधन सुपुण्य समैक सख

मुकादि रत्न खचितो रचितो विशेष
नम्रातपो कनक - दंडहि यद्व देश
सिंहारसो सजल होरहि सँ अनूप
के पार पाव महि अनुभुत रोचि रूप
शोभा असोम दल सभ्य सभाक वेश
भूपाल भव्य सभ बैसल देश देश
दृष्टाऽऽतुरै रगहि भूपक नाट पेख
स्वाहीक चातक यथा धन वीश नेक
भूपाल भ्रातृगण संगहि जँ पधार
मे मोल सभ्य सभ रचागत हेतु टाढ़
मोदै उन्नाह विरुदावलि चन्दि - कुन्द
मुशैक छहि चल चामर मन्द मन्द
आसीन धर्म नृप - आसक उच्च जाय
अन्यासो पर विराजल कारि भाय
जे मन्त्रणाक नृपसँ महि भार सेत
ले लावधानहि उपस्थित आवि भेल
राजे सुवचन कवि सुन्दर श्वेत देश
मे कृपाकर कटा छिति छापि वेश
मुन्यक भालारि विलक्षण तहहि राज
हो भान संग शशि तमस्कपुन्द - राज
धै चार चामर सुधारि सुचारि नारि
ढारैत कज कर कद्वय मंभकारि
बोधो कराए रह भूपण नादयान
आस्थादुनार्थ कर आकुल सुहमान

भूपेन्द्र मौलि मुकुटायत शीति देखि
माणिक्य मौलि रत्नमाणि अनूप देखि
ई भान हो नृपति मीक हई विचारि
नीक स्थले - ग्रह गणो रह रूप धारि
केयूर कुण्डल विराजित की अनूप
अन्यान्व भूपण विभूषित अंग भूप
चस्त्रादि दिव्य महिपोचित सजवेश
जे देख मामथि मने महि मे सुरेश
दृष्टाथे दण्ड भल राखल ताहि ठाम
जैसो कदापि कहिसो नहि होय काम
राजाक हेतु थिक राखव ई अवश्य
तेँ कैल धारण मुधिष्ठिर नीतिचर्य
देशिक नव्य रचने परमोष्ठ रूप
नारायणे सन प्रजा परिपाल भूप
आराति हेतु हर कोषित होथि भान
एके मुधिष्ठिर विभाति त्रिमूर्तिमान
ने हो नृपेन्द्र मन् सँ भन मे विकार
ई सर्थवा नियम सँ हिय मे विचार
माती प्रजा मनहि पुवहु सँ विशेष
जे राज में नहि कदापि पड़े कलेज
पाल प्रजा परम मोति क रीति राखि
जे आव भेँटु मुद सँ मृदु वैन भापि
के देखि पूति अभिलाष अवश्य ताहि
दानादि मध्य कहियो नहि हो कोताहि

प्रवृत्त भेष धलि देखु प्रजाक कट
जाली मनुष्यक लक्ष कष्ट आनि नष्ट
आवाह वृद्ध सभ निर्भय रूप ज्ञान
हुष्टे एतच्च यम शासक भूप मान
न्यायाधिकारिण धर्महुमे सुधर
प्रवृत्त न्यायक विवेचन सीर-नीर
जे हो विचार सनकाल विशुद्ध न्याय
न्यायार्थ व्यक्ति कहियो धिमुको न जाय
शास्त्रीक सूत्रधर शासनभार धारि
कस्य पालन कडोर कह विचारि
हो राज काजक विवेचन की अनूप
जे देखि ताहि पथ मे चहु आन भूप
प्रत्येक काजक निमित्त विचारि काज
कम्पादनार्थ नियम पृथक समाज
सम्मान्य सम्मति प्रजाक विशेष स्थान
जे ने प्रजाक चित हो कहियो मलान
कोयो धनाधिक कोपहुँखे विशेष
रत्नादि वस्त्र वद्ध सञ्चित धन बेश
आवाहलीगहुँ अवारित आय शाय
धर्माय पुन कह के गनि पार पाय
नकार्य राज बहुसैन्य रखैक धोक
है राजनीतिक विचार विचारि नीक
समस्त राज्य चतुरंग प्रवीण थीर
जे देखि देखि अरि हो मन मे छधीर

ले थीर-भूद रचना रनि भक्त भा
आनो कला अमित युद्ध जितैक लंग
अभ्यास हेतु नित कीनुक मध्य लीन
जे युद्ध शासन निधि पारहु हो प्रवीन
चारो नियुक्त बहुतो वहु भेष धारि
की हो कते सतत देखि रहै विचारि
चर्चा जलाय पुन रैयति बिस्त भाष
एकान्त पायि मयुके सभ से सुनाव
भूपाल संग सचिवादि शानेक दल
हो मंत्रणा कठिन कोटिक राखि लल
गुहाशयी घर अमात्यक जे विचार
तकै निमग्न मन सोचधि बार बार
आकस्मिके मधुर शब्द हैं शुद्ध गान
दूरस्थिते तब हैं मधु सुनैत कान
की थोक ताहि हित धर्मल निश भेल
भूमे ने देखि पड़ने नम दण्ड देल
से देखि देखि सभ भेल विचारप्रसा
तकी नितक कत के रहु सेल स्वस्त
जे जे विचारि दजला सभ व्यर्थ भेल
तैओ कतोक जन सोचि सुगाय देल
हु सोपरान्त सुख राज करैत जानि
आमन्त्र कोषक प्रयाह विद्वत् मानि
कां इष्ट आवधि एते मिलवाक काज
सन्धर्ष गान करसंगहि थीर बाज

की कर्ण अर्जुन दुःख मतभेद जानि
जें से निवृत्त भव जाय सुबुक्ति ठानि
तैं आवि चाहि निवारण होअ हन्ध
ई तेज तप्त सपनैक दुःख असन्द
मौनायलम्ब किछु काल करैत तर्क
ई पाकशासन थिका अपवा कि अर्क
से सोच नीचहि युधिष्ठिर के विचार
आकाश देखि अति हर्षहि ई उचार
ऐसु विनेद-रथ मार्गहि मध्य जाय
इन्द्राक नेत्रगण दीपित ने देखाय
ने ई थिकाह रवि, इन्द्र ने ताकि जासु
ई किछु आन महिमा मय मुर्ति मानु
की आह पुण्य क प्रभाव प्रसन्न भेल
ओ दुर्दशाक दिवसो सप्त दूर गेल
की दिव्य देह दिवि देखि पड़ेछ वैद
देववि नारद अचर्य थिकाह खेद
की ऊर्ध्व पुण्ड्रक प्रभा चमकैछु भाल
अंकुश मुग्धक विराजित दिव्य ताज
माला विशाल गर शोभित की अनूप
देखू प्रसन्न छवि नारद दिव्य रूप
की पुण्य पुञ्जक प्रभा प्रकटायमान
प्रत्यक्ष तेज तप दीपित भासमान
अगतस्थ इष्ट-पदपंकज मध्य ध्यान
ई ताल शुद्ध स्वरसँ रत सामगान

निश्चै विचारि सप्त स्वागत हेतु भाय
ले पाय-अर्थ पथ धीचहि दीदि जाय
भूमै उपस्थित विलोकि महासुनीश
पञ्चाङ्ग पाण्डव पद्मभुज राखु शीश
भै ठाढ़ पाण्डव प्रसन्न गवाय माथ
आनन्दमग्नहि विनम्रहि जोड़ि हाथ
मौनायलम्ब किछु काल हृदय विचरु
भक्तानुरक्त वन भूपति ई उचार
“सो धाम धन्य, नर भव कहै क श्रीक
जे पाय पूत पद-पद्म-पराम नीक
जे देवदेव नित सेवधि पूर्ण काम
से आवि भाग्यहि उपस्थित पहि ठाम
दिव्यासनो पर सुआदर युक्त आनि
पूजा विधान रूप कै रदु श्रेष्ठ मानि
हो पाँव भारक हृदय पुलकायमान
की पाँच तरु तन मध्यहि प्राप्त प्राण
धै हाथ पद्म पद्म धोयल शुद्ध पारि
भक्तानुरक्त सप्त मस्तक लेल डारि
अन्यार्थना कर'क योजनमे समस्त
धी नारदागमहि सँ सप्त भेल व्यस्त
ई नम्रता सज्जनता सत्सत्त्विक
ई भक्ति भाव दिनयाम्बित जे अनेक
आनन्द भै कहु सुनीश कथा अनूप
ई धीक प्रेम कुलजातक शुद्ध रूप

ई सुनि कै रहल पाण्डव मोन धारि
गुनेक थीक सकरा मनमें चिचारि
आनन आनन विलोकथि पाद पग
ले मानि लेथि मन मंगल मोद सग
ई देखि नारद उचारल यात वेश
अर्थ करी जनु अहाँ अतिथी कलेश
मैं गेल आएर विशेष करु निवृत
आवापुरक लखि भेल प्रमोदचित्त
कुन्ती सुनीश सुभ आगम भेल जानि
हा हरे कहराव पुण्यहि प्राप्त मानि
ले द्रोणो सपदि आगत ताहि अम
आनन साथहि करु सुनिहैं प्रणाम
आसीत देल सुभ हर्षहि ई सुनाय
सुभय भिदयविजयीक कहाउ माय
आते विनम्रहि दुहकर जोड़ि ठाढ़ि
कुन्ती दुताउ गिअ मानस आर्ति बाढ़ि
"संसार सार सुख नागरि मान सैह
पुनीह पुन गहि फोर सेलाय सैह
ई लालका कय गुड़ारिक हे रुपातु
उत्तीपुराउ जन जादिर छी दयालु"
आरु सुनीश सभ पुरत बिस आश
अर्थप्रसन्नभि, जनु होउ अहाँ उदास
माखी प्रयास बढुते मरती लगाउ
आते विलोकि फल हरे विशेष पाउ"

ई सुनि सुनि मन पुरत मानि काम
कुन्तीक संग पुनि द्रौपदि के प्रणाम
आशावलिनि दुइ हर्षित होय भेलि
आवातुसार गुह-माराज मध्य गेलि
यहाज्जली नृपति सोदर संग ठाढ़
भक्तानुरक्त मन मोद आनन्द पाढ़
आनन्द-अधुन प्रपाह कहैत नैन
दख्य प्रकाश मनमें, सुखमें नैन
ई देखि नारद जबाक व्यावृत्त
"येत, सुनू हमर आगम की गिनिस
पाओल राज प्रतिपालिअ राजनीति
जे थीक भूष भुविहक सुयोग्य रीति
संसार में सम चलो सत मार्ग धारि
दे के विचार सभकौं हम दी उचारि
ते तीन लोकहुं अमी अहंछीअ जानि
जे थीक साधुक क्रिया करतय मानि
हेमन्त सूर्य सनमान प्रजाक ध्यान
मध्याह्न मीध रवि शत्रुक चित्त जान
न्यायाधिकार रत पावल सूर्य कय
ई थीक रीति नित राखव भूमिभूष
जे पुत्रहीन सकरा हित पुत्र रूप
जे तातहीन जन ताहि पिता रूपक
माता पिहीन जन रक्तक रूप माय
चित्त विहीनक सदा चित्तमें सदाय

माथो अनाथ जन हेतु अभृत्य भृत्य
जे धनुडीन तकरा कृत प्रभु कृत्य
राखी सदा एहि प्रकारक बिस ज्ञान
ई धोक भूपक क्रिया सब काल ज्ञान
जे उद्योगिन प्रती तकरा लबाउ
जे हीन दीन तकरा बल दे उदाउ
जे जाहि योग्य ततवे कल लेव नीक
मालीक रुप चुपके रक्षक धीक
देखीअ दोष-रहिते सब राजकाज
पाली प्रजा परम प्रीतिहिं त्यागि व्याज
बुनिच बुख-दलनार्थक जे प्रबन्ध
ई चित्त चिन्तन करी कत कै नियन्त्र
जे रीति नीतिक धिया रहिं राज काज
जे भाइ लेवहुं कथा न किछु व्याज
जे उतमोत्तम प्रबन्धक नित्य ध्यान
ते देवराजक सभा मग होश गान
कस्य प्रभुक हितहित भाषि देव
क्षोभी क्षुपाय धिके अग्रमार लेव
खान्धार भूपक दुखी सग लोक-वेद
ने दोष सुनि मम आगम ई सखेद
ओ चन्द्रमौक गुण तेजि कलहुं वाज
ई छिद्र दर्शक जगैक सदैव काज
से मो स रूपहिं कथा कइ कान आय
ई छुद्र रीति दुवि स्वर्गहुंमें लजाय

जो नीति रीतिक निवाइये प्रवृत्त
लौं ई कोना सवहुं कैल महा कुवृत्त
जे सुनि कै अनुचिते मन मध्य लाभ
ई कोलि पूर्ण शशि लागल दोष दाग
की एक मागहि विशादल एनि भाय
से कोन शास्त्रक मते मन मानि न्याय
हेते अवश्य सबकां हर्षक गुल
मानू किया अहेक ई कगईक मूल
सोमो वृद्धसति दशा नहि देखि लेल
द्वाराक हेतु हुनका गति कोन भेल
लेखो अहाँ सवहुं कैलहुं ई अकर्म
ने बुझि लेलहुं मुदस्थक कोन धर्म
ई एनि नम्र मत अजुंन मै विनीत
जे धीक पैघक ओले पजबाक रीति
घट्टाजली कइल ई "सुनु योग-लीन
जे रीति धीतल कही हम व्याज हीन
ने भेल भाइ सभमे किछु मात्र भेद
पाछालि चित्त नहि मानल किछु वेद
आनन्दमग्न रहिके नियमौक हीन
जे धीति गेल सुखसँ बहुतेक हीन
से सुनि मन्द हैसिके धुन बाजु बाल
"की ई अहाँ सवहिं कां अक्षिप न हाल
देखी धरिअ जग जानि करी विचार
संसार सोदर-निभेदक प्रवृत्त दार

सुमेधसुख दुर सोदर ऐत्य राज
मनावले अवश जीनल देव-राज
मै मोत दग्ध इयि देवि विनोत्तमाक
मे गा दुह दुहु करे शुधि सुगुनाक
राजाक काज पर ऐयति राज दण्डि
अन्य पालन करे गुनि सोध्य-सुष्टि
अं प्रति कपहिं मजा कर ई फुकर्म
तै श्री अहाँ सवहिंको नहि हो अधर्म
आदर्श जानि सभ वैप्रद काज देवि
ई शोक नोक मन मध्यहिं लेवु लेवि
नै गैवर्को करक शोक विचारि सीति
ऊँ देव मध्य नहिं ह्वापि अके अनीनि
भूपाल न ति विपश्ये यवि डेम देवि
धर्मो पुरोण अयशे जग मध्य लेवि
तोय, नि मध्य समको सभ ई कहेवु
पेविक रीति मत एतेक जको अलेख
तै ई अहाँ सवहिंको नहि भेल नीर
ई अदो दोह-... अय शोक शोक
तै फुक किछु सत्ये निरु ई तिचारि
वाग्ही प्रस्थानि अतिथो यदि नोन वारि
न सदा पालय गुनाओन ई विनीत
'देवात कारण पछे' कपली अनीनि
मानाक दात सव मानव नीक जानि
तै पांच भाइ हम ई मत सेल मानि

माता पिता कहथि से कर्तव्य शोक
ई शास्त्रकारक कथा नहिई अलीक
जे रामचन्द्र प्रतिपालल सात-यात
तै मानि लेल जगमे यश भेल जयल
पाइबालि जाति पथलें द्विय हर्ष धानि
'मा! ई सनेस अनली' कहली पुकारि
ले खुनि कै घरहिंलें कहनैन्हि माय
भोग सहर्ष सुखलें मिलि पांच भाय
आशामती मत निवाइय मानि सीनि
तै भै मधुस सभ कैलहु ई अनीनि
भावी अमकल विनाशक युकि नोक
दे देव। पूज्य कृपया कहवाक शोक
ई मप्र भावक कथा मुनि सुनि लेन
कै कै विचार मन मे पुनि बाजि देल
"ऊँ दग्ध होय नहिं मारग नीक जानि
तै किछु बात हमरो सभ सीख मानि
वांटोअ पांच हर ई कहु यय दीन
जे हो समान सभमे नहि किछु हीन
से मानि सीख मनमे सभ भोग भाग
ई काल भिन्न थिक श्रीपदि मोह रयाग
जे ज्ञान अंश दिन मध्य करी प्रवेश
से वर्ष धारद न आविअ मोह देश
भै कै प्रती रहिअ कानन कै निवास
की तीर्थ देश अमलो कव दोष नाश

जें रीतिलें स्वयंके सुलभो दुमल्य
ताहो क्रमे नियम राखिय पाँच भाय
नौकार्य जे सभक देखिअ सैइ नोक
सोइदरें दानि नहि हो, करवाक थीक

ई युक्ति उत्तम विचारल जे सुनीश
र्याकार कैल सभ लागुअओ महोश
पाली अवश्य पकरा कह धर्म ज्ञानि
होवाक वृत्त सहने नहि होअ दानि
लासीक सम्मुख करो प्रण विन्योदरि
तेज स्वरूप अपने तरने विन्योदरि
मानो कथा कहल जे आर्त वृत्ति न्याय
प्राप्ते पछे प्रपाद पाछव पाँच भाय

ई बात सुनि अति दुर्गिभ भै सुनीश
भै माथ हाथ हँसि देखिअ ई अरीश
पाहो पराक्रम सदा दाय दृष्टि धर्म
दुःखो सहैत नहि त्याग करी सुकर्म

पुदव पुरटके विगति निकर पर होय परोश
को लवक युवाग्नि मध्य हो तकर समीचा
नँ करसय-पथ स्वरा करध नहि निक भिक जानु
विपति-तिमिर पढ़ि श्रीरक प्रकाशति वड़ मान

मध नत-शिर सुनल सुनि-वच सघड़ बिश लगाय
तयन पागडय जोड़ि युग कर कहल अति हरपाय के
करी किछु विगति हम पुनि सुनिअ मुनि मन लाय के
हमर अविमल जेहन अछि से अवश दीन पुराय के

माया ब्रह्म सदा रही नहि दुष्टी की काज कोना करी
ताहमे नय कूट फोडि पड़ने विगता-निमग्ने रही
दोषो कै कहु किछु वृत्ति न पड़े सै ई करी शायना
चेतन्यैक निमिरा आयि अपने शिखा करी सर्वदा
कतंग्ये धिक साधु संतक सदा रोही क नाथी व्यथा
रोगतो हित वेद कपड़िं पुछु देवधि भाय कथा
जेये आय विता समीप कहि कै प्रस्थान कै देल से
पाँचो पादय के प्रणाम किरसा आनन्द ह्व भेल से
प्रण के प्रण पालव कठिन ई जग के नहि जान
विधि पश विघटन काज मै देखक धिक रड़ हान

प्रणक पराभव पड़नहि
हो प्रण जाव
पुरुष प्रशंसित दड़ रह
जानिअ साँच

कौतुकी कृष्णक कला कहु के कहै
जुनहि जुन आनैक आनै कय रहै
रहयि जनिका परसदय निश्चै कही
पुनक परिणति सुनहिं मै कय रह सही



तृतीय सर्ग

श्री लक्ष्मि सुख सहित सयदि सवजहि नित पावधि
 लपनहुँ नहि केसो शोक सोखन मन लावधि
 राखनि निज गुणधर्म मर्म मंतिक सभ जानधि
 पाएइय पाँचो भाव सुजन शुद्धजन सम्मानधि
 राज-काज लभ होअ उचित नृपनीति निवाहधि
 घरक काजमे वर्यिक वात सभ जन प्रतिपालधि
 भवभाव नय भमहुँ होअ नहिँ कितकहुँ मनमे
 माम् एके प्राण बसे धृति पाँचो तनमे
 शान्ति-सहित सुख राज-योग रत दिन काये
 भाग्य-चक्र परिधमण पार्श्व त्रित दुखमय मेले
 जकर भावलो भमहुँ केसो बखनहुँ नहिँ कैले
 प्रपस्मात ले विषय राजगृह आवि तुलैले
 भाग्य-वर्कहिक भ्रमण मनुजकेँ सुख-दुख-दायक
 भाग्य-वर्कहिक भ्रमण करै रजहुँ महि-नायक
 भाग्य-वर्क भ्रमि करै सुनहिँसे अनरथ भारी
 मान राम नृप होइत भेला तिय संग बन चारी

भायो धिक प्रति प्रवल साहि निजय कय मानू
 सुनमे जानक जान होअ मिथ्या जनु जानू
 चुला सामयत जेव-भ्याय-हाता यश मारी
 इन्द्र-जाल गति सामयती भेला से मारी
 कालक बश मय विलय सरावरकेँ अनुमानिय
 कालक यश सुर मधुर यिजु हर अजकेँ जानिय
 काल कर कसंन्य-निरत बुडि छन नहिँ लायय
 कालक बश दिन सुखइ रेनि भयप्रदो लखावय
 छल निधीयमे धकित विषय निद्रा-वश भेले
 बुकि पड़ जगत प्रपञ्च सकल समठल भै गेले
 शान्त समथ से शब्द स्वमायिक जे सुनि पाथी
 धिक भव निद्रा भ्याल नास्तिका से भन लाबी
 भिलमिलाय किछु काल ज्योति शशि भय मेल मन्दा
 जनु-गुराद तम तानि सुतल आलस-वश चन्दा
 तातयति निज पतिक कोजमे बस-कम आगधि
 उरका कपहिँ केसो भूमिमे ताकथ थावधि
 नगर कोलद्वल शान्त शान्तिमय जगकेँ देखिय
 पड़े शब्द किछु काल ताहि प्रपवादे लेखिय
 नृप-गृह घण्टा घड़ी-घड़ीमे पहव जगाये
 तरु-शाखा पर चूक बाजि कय डबक उराये
 बखनहुँ कतहुँ शृगाल मूँकि कय गोर मचाये
 पहक-गण औंघाय ताहि सलकारि जगाये
 उरका-मुख मुख जोलि जोरकेँ बाट देजाये
 अथवा मेतक नाच समथ दीपक दरसाये

जान गिसे घोर अन्धारी भेल विशेषे
जनु निशि अचर पायि चाह कलि नगर प्रयेथे
दीग दिव्य धुति देखि हापरक भय मन भेले
मैं से वाहर नगर मध्य अवागित भय भेले
मार्ग लेव विग्राम भयि बाण भदि सुस्तायन
वदन शान्तिमय राख्य प्राप्त होइत की पायन
चलय उद्यमता ओर चीकि खुशुप अविचारी
जाहि लिखल नहिं छानि ताकि के हो सदाकारी
रसक नगर सुवत्त लय निज राख्य सम जन
जैं मे होम आहरण कतहु मित्रु देखति जन धन
गुन प्रगटल भेद नगर जन जनहिं राखे
तेश्रो लहर लुट अपन अभिमत अभिलाष
वागद्वय राजक सुवच ओर जन के नहिं जानि
तने कि लहर रई लयहुं मनमे अनुमानं
भावी भुन प्रचंड रूप लहर मे आओल
जकर पराभव परम पार्थ परलख्ये वाओल
तम लहर तमादुमहि चोराओल वन्दा-जानी
प्रियर पडुन मन सुगुनि चोराओल अपसर जानी
निद्रा कमकम जगत जनक दिन चेत चोरीक
भावी अर्जुन राजसुलक चोरी बिल खेलक
न्यायी नृप मन मनि नगर निर्भय निशि भाई
जतय लतय-रह पडल विभव धुति मन नहिं जाने
गोधधन धिक दीप देखि द्विज साहि ने दान्दधि
देहन पाखिहिं साहि हाँकि निज निज घर आनधि

जगत जीव जन लयहुं लतय लताय लितेही
लगाहि रही की दूर बनहुं चिताय नहिं तेही
निशि मे विप्रक गाय जाय बाधा लग बैलल
निद्रिग गृहपति जानि ओर-सुषुप्ति घर पैलल
तम पर अपर ने वरज शिखा सिर नहिंर मानी
तम धुति तम निशि मिलित मेह मन भमहुं न आरी
चनु चगल चहुं ओर चहै धुति रह समधाने
पद विगोलिका गतिहिं कह के ओरहि जाने
चलल ओर लय गाय हुँकरि ताकन बाधा निशि
जनु कह रह्य लयेत देगु भयप्रद अयि ई निशि
माछा ककशा नाद कैल द्विज दोइल आयल
देवल लहर लुट गाय लय जाय पदायल
दोकि पकड़ि द्विज माय कहल पर धन किए लेते
वरमी नृपतिक राज-मध्य वर अनुचित कैले
प्राप्त्य बलल दली ओर छोइल नाइ गोधन
कही नृपतिसैं जय युक्ति दिन आनल ई मन
पाय राज मासाद अर्त मे विम पुकारल
हाव ! माय ओर हरल ओरसैं लड़ि हम हारल
लज्जी कर धनु घाय अर्त परित्राण निमिते
उठथु जलथु भद्र पार्थ हरथु दुख के द्विजचिते
झारी कह, छुनु पात पार्थके किने अनायन
सेमापतिके कह धेनु छहैं विनु भद्र पायय
कोपहिं भावल विम, अर्जुनहिं जी न जगायय
देव शाप हम ओर अयय छहैं नशिण जायय

सुनिहाईं ज़ारो दोदि जा पकैय पार्थ जगौलक
चिप्रक जे आओश आर्ति से शीघ्र सुनीलक
सुनि धनुन बहराय चिप्रकें लगहि दशाओल
कहि समीपक कथा बहुत बिधि हुनहिं सुभाओल
चिप्र कहल धम-धेनु विप्रगल सुयमे मानधि
दूध दही दूत पंच गण्य संप्रद चित आनधि
देव वितर अग्नि मनुज पड़ साधक है जानू
कर्मपुत्र द्विज धेनु-दोन निश्चय मन मानू
कहल पार्थ अहैं एक धेनु हित सोच ने जानू
देव गाय दश विप्र पयस्विनि निश्चय मानू
पाण्डव कुल जन-हुल दूर करयामे पारथ
नगपाले लिय हाँकि बाल भय सुनु यथारथ
भायु विप्र धिक् सुरभि रत्निणी ज्ञान जगत जन
रूपक हेतु है मुख्य धर्म श्रुति शास्त्र ध्यान मन
की मूल ओ चाँदल कोर है नियम भ जानी
गोहरणी गोहमन पाप निश्चय मन मानो
रूपति नीतिमे प्रथम प्रजा-पालन मन मानिय
आन आन जे बाल लपटुकेँ गोरोँ जानिय
राज-मूल धिक् प्रजा, तकर रक्षा बिनु केने
की फल यश धन धर्म केयो भूपति चरि नेने
आवेष्टहिं कह पुनः "पार्थ! है निश्चय मानू
छठम अंश रूप लेधि प्रजा-रक्षण हित जगनू
जा ने हमर ओ धेनु चोरसीं अहैं छोड़ायव
तो पापी पद अयश पाण्डुकुल सभ जन पायव

पार्थ विप्र-धन सुनल, सुनल सुन सोचाईं भारो
जनु विवि चाहि कर पाण्डवदु आयाचारी
धर्म नामसँ जनिक जगतमे यश भल आओ
से निरङ्ग शशि अंक पवन है चाहे काँ
कहल विप्र अहैं पवन सोच की मनमे लाओ
गाइक महिमा रोम-रोम पुक्ति की अनठाओ
जन्मायधि नय दूध मनुजकाँ पालन करनी
अन्त समयमे होधि गाय चैतरणी तरणी
गो ब्राह्मण रक्षु बाल धर्म कृत्रिक सभ जाने
मल पालथ मे अति प्रयोग पाण्डव कुल माने
रक्षु छुड़क विचारि आद आलथ ओ करवे
अयश शोर जन होयत घोर नरकहुमे पड़वे
कहल पार्थ की एक गाय हित गज्जन भायो
के हम, के अहैं, तकर नेद किहु मन बहि राखी
होय जमेक अनिजाय धेनु ततवा हम देवे
के सभ विधि सप्तपद पाप भागो नहिं देवे
है मुनि के द्विज कहल बुझल जे कहलहुँ पापी
चोरक बरसैं अहैं वरुँधो धेनुक दानी
पाण्डव-कुलमे पार्थ नामसँ की प्रख्याते
तैओ कायर किये यनी की अजगुत बाते
मिथ्या वीर्य पार्थ धर्म-आइअर मिथ्या
मिथ्या यश विस्तार प्रजा पाइक मल मिथ्या
मिथ्या रत रूप देश बात सुन मानो मिथ्या
मिथ्या गौरव करव कोरवक प्रति प्रति मिथ्या

पार्थ कहल, बस बहुत कहल सुन रहु भव भोगी
हमहुं पाण्डुकुल-भात मनहिं कुल-गौरव राखी
सना-पात्र छिज जाति सङ्ग हस कथन अपनेको
कल्पित कणहि महार आय बाजव थिक पको
गिरि आयहु यल दोधि, अचल निज नाम सेटाघरि
उदधि त्यागि निज नियम उड़लि संसार दुखाधि
कारि परित्यजि बहि, बकि निज तेजो डारधि
पाण्डव कुल नहिं भस्म चिपव सपनहुं पद धारधि
ई कहि अर्जुन शुभ मनहि कलस्य विचारधि
धनुष द्रौपदी-भजन भूप निज समय बितावधि
हुई न बिनु भद्र भेल, भद्रप अनने सुद-त्यागी
दुद-भूप शासन पङ्क मजा सब मन तुल भागी
पार्थ नाम ये सारत-जमक हित बित नहिं जानत
ती पुनःपार्थक सुयश घोष तेजि दोषे काजत
नष्ट होम बढ बेद ने धर्मक भेद नशापय
प्राण-मणे पहि काज साधनहिंमे मन लायव
लायव धनुष अचर्य विमहुं के भेल जोड़ाव
प्रात होइत हिय हय सहित घन लीरहुं आयव
रहत दीर कुल सुयश जगतने युग-युग जानी
रिः अनित्य ई वेद, सत्य तकटा कय मानी
बलल चित्तमे सोधि द्रौपदी-शयनक नेहे
आपल तेदि हन उमहि वेग मन प्रिया स्निहे
क्य धिर खखल सासि बलव के धैलक सीती
चल विभ्रन्ध नयोद कैलि-गृह मन भय प्रीती

आवि द्वार नै ठाढ़ गाढ़ तुल भन्ने जागत
सोचि सुमरि प्रण पूर्व प्रेमपथसँ मन डारल
करी अपन कर्तव्य पराभव पड़े ने शीले
ये केवाड़ सुनु स्वरहिं जगावक उपक्रम कैले
प्रिये ! प्रिये ! नहिं नृपति-प्रिये ! सुनु सुनु मन घानी
आयव मन्दिर मध्य काज आरत निज जानी
सुनि अति आनुर शब्द येति जित सुधि बिसराओलि
बदली चौकि बेदाय द्रौपदी द्वार जोड़ाओलि
कहलि, आठ भाई एकन भूप तिरा यह जानू
बहु-कहु की भेल कते, भेद जनु किनु मन जानू
की किनु कैल प्रपञ्च शत्रु, की थिक किनु जाने
भेल कोनो उत्पात नगरमे, हो अनुमाने
जाय भजन ले अस्त्र-शस्त्र अर्जुन ई भावल
अयलहुं पही हेतु पती ई जे कुल राखल
महायोध मे भेल तकट प्रतिकारो करये
प्रण पालवने विषय भमहु पद एक ने धरये
पार्थ प्रीत निज प्रणहि जय के धनु ले कामल
विम-धेनु हित खँचि कान धरि जोरी लानल
जाय जाय ललकारि शोरसँ गाय होड़ाओल
ई विज भेनु अशोक आशियो हुमिसँ पाओल
जागत सुनि ललकार कोलाहल नगरहिं भेले
की थिक दौड़ल सवहिं पार्थ पथमे चल गेले
देवल गाव जोड़ाव परम हर्षित बल आबधि
ई रक्तक रस कोल रहथु सब देव मनार्थ

जावि शास कय होल महल बाहर तत्कालहिं
भवन गमन नहि थोक उचित विष बारह साहसिं
मानल मनमे हर्ष सुवश थिर निज कुल रागल
राशि राज सुख भोग शोक मनमे नहि मौखल
आदुर दुखसँ दुःखसुता सुपय गहि तैले
बोकि चरित से पुत्रल किम्रै निद्राधुत कैले
कहत प्रीपदी, भेल नगर किनु यह कन्याले
जावि अनधर पार्थ लेल शर धनु निज हाथे
मुक्तिहिं सुप अगुताय माय बाहर ई देगल
राज भोग दृष्ट मुल्य सार्न कय पार्थ अपेखल
पुष्टि नृम सप्त वात भूपकेँ अति पुत्र भेले
जनु इति मर्महिं अकस्मान् शले अति गेले
कहत पार्थसँ उचित थीक नहिं आई गृह त्यागी
के विवेचना भुक्त अहाँ नहिं दोषक भागी
जेठ केलिगृह समन छोड दोषी नहिं मानी
विकथि पिता सम जेठ, वात ई शास्त्रक जानी
पुनः पुनः कर जोड़ि पितय पुन वचन सुनाओल
पुनः यह वस्तु ममय मुकुट मनि केँ अम्हराओल
भेल मुनिक समीप वचन प्रदो एक संगे
तमन नयन जो रही हायन ने की प्रण-भंगे
कहत सुप श्री शास्त्र नयन पर करी विचारे
शास्त्र-अपरा अयश दोष थिक कह संसारे
गार त्याग बनयास मुल्य थिक नीतिक चाणी
से थक हावश वर्ग रही एकरा हम मानी

कह अर्जुन ई कथा पहन खन हम अनुमानी
पाल जवोधक बोध हेतु अनु भागी वादी
धर्मक गति अति सुदम कहल अपमहि को जानो
तखन कही ई कथा कोना भै कह दइ जानी
कहत युधिष्ठिर तीर्थ दयक गमने प्रथ कैलहुं
तीर्थ वनी निज राज अमृ वन-वासी भेलहुं
रहत सदा सम्मिलन सबहुँसँ, छारि भय मानत
प्रथ मर्त्यादा रहत जकर दश जग जन जानत
कह अर्जुन रघुनाथ पितहुं प्रथके प्रति पालल
बौद्ध वर्ग सहर्ष अपन राजहिंकेँ त्यागल
की नहिं हल ओहि राज विपिन तँ अनते मोल
सहि सहि काट करेक प्रथहि समवासी भेला
काहागममे राम निवेधक के जन आओत
तकर हेतु प्रण कयल अपश कल मरये पाओत
दुर्वासगम भेने लक्ष्मणे दोषक भागी
राम दण्ड दे देल, यदपि अतिशय अनुरागी
अपि नृधीनि दप अस्थि सज्जन प्रण पालन कैले
वनल इन्द्र कर अस्त्र जाहिलेँ जग पश लेले
थिक अनित्य ई देह तिल थिक धर्मक कजे
जाहि पुण्य बल मनुज आय बल देव समाजे
सुप शिवि पत्नी प्राण रक्षकक प्रण मन मानल
दे देव देहक मांज बाजसँ बाजी खानल
अंग काटि सभ देल मोह ममता नहि राखल
पूरि अल पुत्र विष्णु मुक्ति वच सादर भावल

सदल गाय तित धान करधि नृप नृग सम दानी
 वत धेनु बेल हान दोष ई भ्रमवश मानी
 ते गिरगिट भै स्रग्भृक मे दियल गमाओल
 धर्मक गति अति ठेढ़ निगम-आगम समुझाओल
 सम जग आपनहुँ कहल धर्म गति हउमे जानू
 युक्ति प्रपञ्चक कथा ईश चंचक मन मानू
 धर्म स्वच्छता चाह मलिनता पाप चिकारी
 ले जन से पथ गइधि होधि नरकक कधिकारी
 शृणु-भंगुर संसार कैसी मे रहल मे रहते
 भव सागरक मथाह पड़ल सब कम-कम बहते
 रहत जगतमे लोक पाथरक धर्म लधर्मक
 ते पिक समझा करक चित्त चिन्ता शुभ कर्मक
 सहि के कत-कत करइ सबहुँ मिलि काल गमाओल
 जौ भण-पालक मध्य मथम गणना वश पाओल
 जौ विधे पद देव सुयश नशते ध्रुव जानू
 बहु धन-सञ्चित सत्त जाणि फूकथ सम मानू
 मुनि वारथ मुज पैत वधारथ बात विचारल
 युक्ति यत्नमे सोचि भूपति निज भतमे डारल
 कहल रहव नहि अहाँ ताहिसे होयत हानी
 दुष्टक प्रबल प्रपञ्च पुञ्ज रसक नहि जानो
 अहिँक पलाक सम काल शत्रु मय मय मन मानधि
 होयत परामथ अग्रश ताहि निश्चय जिय जानधि
 त कथ करि छल क्षम माश करये सम लाओत
 निह-शून्य बन आनि जगुको धूम मचाओल

अहिँक परोचे परम परामथ हम सम सेवे
 बुझि पद शत्रुक कूट-नीतिसे नशिय जेवे
 अहिँ थिनु हम ई कहो कथ से तथे मानू
 विनु प्राणक पुतरी समान पारइव-कुल जानू
 कर्ण कर्ण-पथ पड़त जगन तनु अभिमल बाणी
 भवश आबि सपात करत से, हम अनुमानी
 धीर रहत नहि कैसी युद्ध साक्षत जो जगने
 जितितहिँ अजुन जितल पारइयहुँ भाषत तजने
 वहत धनु ते अपल चित्त करि रण मधमाती
 अरु - शस्त्रले सज्ज संग गज-दाँड-पदाती
 करत घोर संग्राम परामथ पड़ले मारी
 के विनु अजुन होयत प्राणहुक रक्षा - कारी
 पड़त परामथ परम बात जौ ई हम जगितहुँ
 तौ तारइ कत नियम इठहुँ की कानहि धरितहुँ
 भेद-भाव नहि छले-पुर्व त सब मिलि रहितहुँ
 पड़त जौ किछु दोष दोष तेजि से बढ सहितहुँ
 जनिक नाम सुनि शत्रु सतत भव पावे भारी
 जनिक जगत यश जाणि रहल रण रिपु-संहारी
 जनिक बाहु-बल यलें रही निश्चय सभ जन
 सदन सहोदर त्यागि हाथ से करधि गमन यन
 कहल पार्थ जनु करी सोच हम नहि बिस्वामय
 देखव देश विदेश तोर्य सम परिचय पावव
 बाटव यन विनाय केरि हम घुरि घरसाथव
 शत्रुक कत जे कथ तकल सम कतरि मेढाथव

भीमक खन भल भाए' पली रहल भै रहला
हुनक गदा - आग्रात शत्रुमे कहु के सहला
उघत रणमे टाङ्ग देखिके के करि सिद्धता
ककर र्पे विक कहु सर्व - कणि कर धै भिद्धता
हीन - जनक दूख दुर करव जग विक पुरुषारथ
पदि असमञ्जस धैर्य धरव करतव पुरुषारथ
प्रण कय प्रण - पथ गहन गमन जन कह पुरुषारथ
निकट लंकटक सीन दहव साँचे पुरुषारथ
कह नृप अहं धर्मव मर्म सम तत्त्वक जानी
विद्या बुद्धि विवेक पौरुषक पूजक , मानी
सभ विधि छी निश्चय्य लखन वहुतो को कहवे
अवधि सन्त धरि अजुन विद्योदक पुख सम सहवे
वहुत शोहत वेगमे लजि नृपतिके अजुन तहाँ
कहु अ.गु. प्रेम-अनुद उमड़ल तानिमे भरलौ अहाँ
धैर्य - नट अवनम्य मानी उचित विपत्तिक कालमे
रही नितय सनत ई धिक सहज गुण भूपालमे

कहे छी अिनछे गुनू ई कथार्क
मने धैर्य धैके विलाक ध्यार्क
रह स्वादय जिनै कथा मोर मानू
कने पार्य आलाल चाणी बखानू

की रामचन्द्र किरि किल न , राजभोग
पाओल की ते पुनि के नल राज योग
व्यामोह व्यागु. धव धैर्य, विचार बात
हेनक दीर्घ निधि की नहि हो अगाल

देल गीर्वाण - पति-गर्व के चुरे के
मेक मल - नोक अगहि उछेने
एहन भीरुण परतछु जेहि पक्ष मे
रहथि सभ काल ई जग जगोने
जे केओ साहिसें उछतं पुद्धरत
सहजमे नशत ले अवश जानू
जितमे धैर्य धव खोजकेँ त्याग कव
शत्रुसें जनु उक बात मानू

चतुर्थ मर्ग

धी सुभिधिर अर्जुनक दुख - नीतिका सन सुनि कथा
निद्रि तमिर पट समटि चलि भेलि सानि के मनमे व्यधा
रमित दिक्षुति नारि पहिरलि श्वेत अम्बर आव की
अकसकाय उषा धिलोकलि वदन-पट उनटाव की
नखन नभमे छपल से लखि रहन सन अनुमान हो
जेहन उखरल समा नेने सभ्य धल सुदसान हो
प्रथम पाशु पहारि नभकेँ स्वप्न कैलक मान हो
नारि नभ मेरुनि विद्युत्तहि हार ले, ई कान हो
निद्रि निद्रि निद्रि निद्रि निद्रि - निरत तारा सहमे
नभमे रहकेँ सुनी धी मङ्ग कर रत - रहमे
नभमे - एण ताकि थाकलि परम व्याकुलि जे भेली
मुख भरीन्हि हरि मानहि साजसे की छवि गेली
प्रात होइतहि पूर्व दिशमे लालिमा नभ भेल जे
अम्बर स्वागत हेतु शरणाँ फरल दिग सति बेल से
सगल - कोणक अनल दक्षिण - अनिल पायि प्रथम
पहरन पलाही सैह जानू कल्प अन्तक रूप थे

सुदिमे सन कर्मनिष्ठ होय, ई मन मानि के
पैघ छत अनुमरत छोटे इन्दु ई अनुमानि के
प्रात कालहि बेल आहुति हृदय अनलहि आनि की
पूर्व दिश तकरे शिखरहि लालिमा थिक, जानि ली
चकल तब पर चिड़इ चढ़ - चढ़ करै चेतन जग भरे
निरखि दिनमणि - ज्योति मोहि गान मङ्गल अनुसरे
पञ्च-अग्रहि ओल - कण भर पुष्प - पुत ई धुमि पड़े
दिवसपतिकेँ सकल तरुवर अर्घ्य ले अर्पण करै
निशि निशाचर अलय लेँ जनु रहलि भूमि उराय के
पुनु पताल ले जाय ले कहु धरत मोहि लुकाय के
ओल-कण रहु घाम भरि तन दुवि रोमाह छाय ले
प्रात दक्षिण - पवन परछहि सुजहि जाय सुखाय ले
पायि निशि जग कत कुडम्भी करय पाप अपार ले
ताहि लेँ भय जाय अनिशय अवह भू केँ मार लेँ
अमहि अमरण अङ्ग-अङ्गहि मध्य रह छवि छाय के
दूषि रोमाहि प्रगट प्रातहि रहय जग दग्धाय के
उरय उदयाचलहि प्रातहि उदित रवि - छवि भेल जे
इन्द्र वन्द्यो - आलके धन रखल कम्पक - छेज से
ई प्रसङ्गे धीक आयय जगन गतिसेँ कानमे
प्रात खाँभ प्रसीद दुहु सन करयि नभ मैदानमे
पूर्व दिक्षुति शक्ति अम्बर के रहल श्रुति साधना
ताहि ले निज तन समारथि उपकरण आराधना
लालिमा नभ लाल पहिरन पञ्च थिक, ई मान हो
विश्व रवि थिक भात लिखुर - दिन्दु ई अनुमान हो

वेष्ट स्वर - धुन विम - चहु रहु वृद्ध कर कुश धारि के
करधि प्रातक कृत्य मन है उचित मन्त्र उच्चारि के
वेष्टि आहुति शुचिहिमे शुचि सुषहि आउष समारि के
पाठ--पूजा निरत सभ जन ध्यान चित निरधारि के
परिक पथ प्रस्थान के रहु बान्हि पाये संगमे
कृषिक कर्मक वन हागल कुपक आस उमङ्गमे
पुंक्ति पतिभरमीक पहुँचलि प्रात पतिघट डाम के
यूथ-यूथक भगन - आगम परम शोभित धाम से
मुदित चकवा-दण्डिक चित सन्मिलन उहु पाय के
मुदित देविअ धेनु चरवाह दूध पान कराय के
मुदित शुभि पद सर सरोरुह पुञ्ज-पुञ्ज विकासमे
पवन परमहि भूमि भुक्ति रह सुमुदितिक परिहालमे
शुचिन सजि शुद्ध कुमुद मै रह भुनल मुक पक्ष्माय के
दुषित अविशय पशु उसको धुत-कोटर जाय के
दुषित दग मुनि यदुरी तयमे लटकि रह मानि लो
कफरो सुखद ककरो दुःखद सन जग पहिलो जानि ली
धान प्रमाण जगज जन हारि दुकि पड़े अकुलाय के
जग सन्धहि भूष भगनहिमे वसल जनु आय के
जग नरक शामोद उलरत दुर्गाहिमे दुख पायि के
जग भय जनु से मिखाओल मोद-दीपक शान्ति के
पथ हेतुक वस्तु मस्तुत पार्थ निज-हित कैल जे
स्वरूप कपहि निज निवाहक उपकरण भरि सेल से
माय गृहिणी राज-भवनक त्याग भोग अनूपके
मुकल भन-जन-मोद अहिना आत्म-शानी रूपके

पार्थ प्रताक कृत्य के सभ लोक सेल बजाय के
पलक धिक यन आन सत्वर कहल से समुदाय के
सगत मै निज कस्त-शस्त्रहि भूष भीम प्रणाम के
आशिषो सहदेव नहुलहि दैल शुभ मन - काम के
कहल सन मिलि रहन समस्तन सहस्र जेठक बातके
जोडहुक परितोष राखन रोष मनसँ कात के
पवन वेधनके वषायन सहिवेकक बन्धन
प्रवल परिपन्थक प्रपञ्चहि पदम नहि एहि कर्मसे
पार्थ नर्महि कहल, की कहु जे कहल अहि पूर्वमे
गोन मै रहनेक भेलो सुगत बात अपूर्व जे
देखि के घर जन दरा जे उचित करतप से कर
जे न दोषी होइ हम सभ असह दुख सहयो वर
भीम भाषल, कहन की हम अहाँ छोटे भाइ की
हुक हुज्जत बीच सभके छोडि के बन जाइ ली
एक भाया अहि निशचिन हो विपत्तिक कालमे
आईके गेने शुभि पड़े अहि पदम दुष्क जालमे
हाइ गाइ विपत्ति में रहु नकुल सहदेवो हुय
हुसह भाइ विदोह सँ हत ज्ञान मै गेला जनु
कहथि नहि किछु दकतकी लग लगू भरि भरि मोर ली
मन धिया निक वैप वृक्ष बिपरि कानन सोर ली
दुषित ललि, कहु पार्थ, की भय करी दुष्क बात के
शश शृगाल समान करि की सहत भीमक पात के
अरि कर्ण - करि कर आक्रमण ली केहरी सन आयवे
भारि मस्तक फारि मुला कात - सुपत जग पाववे

1 2 3

८ व र्ग

पूज्य हवि कुल - देवता रक्त अवश्ये होधु से
जे पुनर्देव अर्थात् हमारे इस कल पर देधु से
देव देवी जोक जे जग पुरधु से मन कामना
वनहुँ में मनदेवि रहिणि रहधु घर मे हम जेना

ततहने सात्ताक पद पर पार्थ कर शिर राज के
कर प्रदान विनीत भावहिँ बचन करणहिँ भावि के
द्वगध सभ अपराध जे मन, अयुध सुत कृत जानि के
दाव माझक सम्य सभ छन धीक, ई मन भावि के

कति जहासी मतहिँ दासो आवि कहू विजलाय के
दुखिा नित हवि छादि दीपदि भवन-द्वारहिँ आय के
फहलि, दरशन करण पावी कितव देध सुनाय ई
कल सगर के कृपा अभिलाष देधु पुराय ई

पार्थ, श्रीयदि, आर्ति मन पुनि कएल तहँ मर्यादा ओ
ताहि छनक तरंग हृदिगत बुझि उकत के जान ओ
नेह गृहणी, गेह सुवि पुनि चाह बित विजगायके
अणु - प्रतिज्ञा - पूर्ति हेतुक कह अवस धन जायके

सोचि, पद पथ देधि मन में करधि कत कत भावना
की कथा कहतीह कलुषि, करव की लसु साधना
दाय भिक्षित कमल कन मुख देखितहुँ विदुसेत जे
देखय पुछ - गज गज्जिरे सन नयन नीर हरीत से

बेल बरान श्रीयदी केँ दूर द्वादि सौँ लहाँ
दुखित दीना चौदि तुहु पव उपर ओ लसली तहाँ
यथा सह अवलम्ब हेतुक बल लता लजबाय के
पावि नहि आपार, भूजहिँ जाय लसु लपटाय के

करठ छुटित मुहुरि कानधि परसि श्रिय-पद हाथ सौँ
चिहुर अहँदिष भूमि लोदण बसत विगलित माथ सौँ
नयन नीर प्रवाह अबिरल दीन-वदना श्रीयदी
पहण ओभरायल सेमारें कगत सौँ कमला नदी

कइल अर्जुन, सुनु भिये ! किछु धैर्य मनमे भारि के
कसन की कर्षण धिक से बात देखु विचारि के
पिता कुल पति कुलक दिश हग वै लमहू हिय शोककेँ
विरति पवने धैर्य धरने उचित धिक जग लोककेँ

ताकि पति-मुख नमित-शिर मे श्रीयदी कहू कानि के
ई विपति पदि गेल अहँकाँ एक हमरहिँ जानि के
नारदी उतपात कैलन्हि निषमकत धमाय ई
बाछ छल जो विषम विष सन अमिष बेल मुभाय ई

को कहव ककरा कहव हम कर्महीना छी सुनु
दुख भोगक हेतु नारिक बेह हम धैलहुँ जन
की कतहु संसारमे पति धान हो एक नारिक
भेल की नहि होयत की नहि एक यपने हारि के

को कहव को दशा होयत भमित भाग्यक चक्रमें
काल सन ई काल पुनि पद दिवसहिं क जति चक्रमें
मनहि पुनि पद पछन हनरा पहन सन गति भेल हा
उदधि उपगत लखि परसमनि परसितहिं धदि गेल हा
श्रीपदी - मुक्त दुखद बानी पार्थ सुनि दुःखित भेला
कोन विधि बोधव प्रियाके सोन मे से पदि भेला
गमन पुनि के ई दशा अवि तेजि के जो आवये
जगन आनन रूप भिज पर श्रीपदीसे पायके
हास शृङ्गारक प्रमोदहिं हास दिन मोठे अते
फलनि कलश - कथन कथना के रूधि सम्प्रति सते
मते लाली मोठ रात्रि पान-बीजा लायके
तते देखिथ रात्रि धितु से मूर्ह रहल सुजायके
सोच मे किछु काल मनहि पार्थ रहला मौनमे
की कोना परिपोधु दिनका विन नहि हो गौनमे
जो न सम्बोधीय सो ई अवश मानिथ बातके
प्राणव्यतिक प्राण एहिजन हागते एहि गातके
श्रीपदी - हुँ करमें पार्थ लेख उठाय से
चाहू - पारहि पद मे को गेलिह अङ्ग समार से
मोक्षक लतिका कनकगिरिमे लपट अनुमान हो
प्रीति ऊपन बिरह लपित छाम हन दुति मान हो

दृष्टतिक दुख-दुलित मानस विकलता अति बाढ़ हो
वरप बारह कट कटत की लोच हियमे गाढ़ हो
अधु नहि थिक नैन द्रीपदि थीक धिरह मकाह ई
कमहि बाह्य धैरजक तट बाढ़ि बाढ़ अथाह ई
धैर्य धै कहूँ पार्थ मागल, छुनु प्रिये । हमरो कथा
उचित सम्प्रति थीक त्यागी अहाँ ई मानस-व्यथा
समय प्रश्रामक उपस्थित मे अमलत थीक ई
तै अवस मम कथा मानी बात पुनि के नीक ई
जो रहव घर मारि वश कहि हँसत जगतक लोक जे
दृष्टतिक दुर्नाम पसरत कत वृद्धे शोक से
पुन्य सन धै कीलि - दर्जन करव धुवये जानवे
कचश भागी जनक जीपक मरन सन को मानवे
पतिक प्रलहित देखि देखे तन तिया हरिचन्द जे
कष्ट सहि दासो द्विजक भय रहति छलि दिन मन्द से
अयशसं वयदाक दित सिय अमलकुण्डहि भलि गेली
जै प्रसूतित पुण्यनामा जगत मध्य यही मोही
पतिक प्रल पथ मारि कण्टक भै रहि नहि नीक ई
वरप बारह अयधि पुरमय उदधि दुर्मेम थीक ई
श्रीपदी कह, हारि मानिअ विधि विधानक मेवसे
मरव जीउव धीउमे रहि दिन वितायथ खेवसे
पौव तथहि सृष्टि रचना होय सन जग जान ई
थिकहुँ पौवो तत्व पौवो भाय मम मन मान ई
मध्यमे रह तेज से अह जीवतक आधार थी
अहँक दिन मण तुच्छ तन धारण करव धुक भार ई

पद्य कहलन्हि हमर निषिद्धि तामर आरे मित लागये
सतत सुभ मन कामनाखँ इष्ट देख मनाथये
सुनि प्रीति कानि कहलन्हि पति वधन थिक मानये
छोट धाति पिआल इष्ट खन दश मम जानये
पार्थ कह, हम चयन-वदहि धन पयान करैत छी
पाकवे प्रथ उचित तँ भय निहुर आइ तेजैत छी
धन मे पुनकामिनिक से करब अहँ मन मानि कै
माक सेवाने मे प्रुति हो भगन दाखब जानि कै
कहल प्रीति, थिकहुँ दासी अवश वचनो पालये
अमहुँ हम आवाक विपथे पद एको नहि घालबे
देख-विनरक पद मनाथ अहँ रित छुल सँ रहो
अथवि चिनने छन एको अहँ नहि रहय अनसँ कहो
पुर्ब जगन कुकर्मविक फल आइ हमरा भेल हा
गरवहुक अ काश सम्प्रति नहि विधाता भेल हा
अकि अभागलि हमर सनि नहि जगत मे तिय आन हा
प्राणति प्रस्थान पर नहि कर पयानो प्राण हा
धन अथविक दिवस समस्त जय क माता मानि कै
सुमरि सुनि गुनगनी गनि विन विलायक कानि कै
तन रहो निर्लज्ज प्राणक चर्म रूप जनाव कै
होयत अमुगामी भने सुख निव संग लगाय कै
कहम छोला अहँ जाड, मना करय नहि धर्म थिक
अहो उचित चित लाड, आवाधीता थिकहुँ हम
दे लागबना अमुंम कैल यात्रा
पाइबालि चित्तै वदु शोक मात्रा

देखू दशा मृगति चित जानू
ओ इष्टवसाहत भेलि जानू
द्वारेक मिस्थाधित ठाकि भेली
चिन्ताकुले खन बिलादि बेली
ओ निर्नमेने टकसँ निरेख
पाइबालि पाइबालिके भेलि लेख

भेल नगर भरि छोर पार्थ यात्रा जन कैगमिह
द्विजक धेतु हित प्रणक पार्थ पथमे पद बेलमिह
जाकि चकित चित बाल पुन दयाकुल अति भेले
प्रजा कज्जपर असह शोक-पाछा पकि गेले
कयी कह द्विज दश धेतु यात्रा की ई दठ ठानक
प्रण कडोर सौ सुले नगर भरि सभकाँ जानल
कयो नारदकेँ मित्र कथा कत कोधदि भाषे
कयो कर तर्क-धितकै फेरि लाधि अमिलावे
सुनि भुति जे भुति जाल मक जे अरमजानी
पौराणिक पुन अर्थरेतसँ जे बल ध्यानी
कथिक भिक्षुको अपर अनेको जन वध मेहे
संगहि पार्थक बलक हेतु सभ त्यागल गेहे
धनु निवृत्त सौ संन-जगन जगत सुर मनहि मन
कल कल कलकय धन अनु रिपु सन रन रहले
ओकपण कृष्ण कहि कब मममे प्रणम
बीभस्तु त्यागि बलछाई स्वदेश धाम
जानी वया जगत जीवन सुख जान
मायाप्रपञ्च तेजि लागधि इष्ट-ध्यान

पाँचम सर्ग

मनहिं श्री मनमोहन ध्यान धे
गृह चित्तोदक चिरहिं ज्ञान के
बलधि पार्थ तत्तत्कृत रूप जे
'द्रुतचिन्तित' होक स्वरूप जे

प्रणक पक्ष छोड़ावय मोहलैं
मन चिमोहित वेश सिनेहलैं
पथ पयानहुँ पार्थक रूप तैं
'द्रुतचिन्तित' होक स्वरूप जैं

सुनिक शापक जे जगसं प्रथा
सुमरि के पुनि भाइक ओ व्यथा
गमनमे चित्त दोचिल मै रहै
द्रुतचिन्तित तैं गति भैं रहै

कुलक गौरव दील देवैत से
पुनु मियाक दशा सुमरैत से
उठ छुने-छुन भाव अशेष जैं
द्रुतचिन्तित जाति विशेष तैं

प्रणक पुनिक हेतुक शोभता
सुमरि मोह प्रशा गति-सम्भता
पक्षल द्वैधहिमे मन जाहिसैं
द्रुतचिन्तित हो गति ताहिसैं



निरन्तर पार्थ पधारथि देशलैं
विकल व्यग्र प्रजा अति बलेशल
बललसंगहि त्यागि स्वगोहकैं
हर चित्तोद विषद्विंत मोहकैं

तयाहैं छोड़ि बल गृह-काजकैं
अवश त्याग कर पड़ि राजकैं
विरह कातर भैं कहु कानिकैं
रह प्रजा बच गद्गद भासिकैं

अहह माथ! शत्रु किछु पार्थना
सुनहु ठाढ़ रह कय शत्रुना
जहैं खली अपने तहैं जायये
सकल लौक्य तही हन पायये

सकल सेवकके गति की कह
कहत के प्रभु देशहिंमे रह
मनहिंमे रह देव मनायकैं
सुयश लेधु छपाहु किरायकैं

सबहुँ व्याकुलतैं मगलैं तहाँ
कहय कातर भैं हुलसैं महाँ
विधि निशीयाहैं मेकठ हाय की
धरक शीप उठा बलु हाय ई

कय प्रभो हम जी घर में रही
अवश शोर न होयत की मही
कहल पार्थ करी दठ ने तहाँ
सुयश धर्म कहीं, घर है कहीं

कत प्रजा पशुभावय लागु जी
कहल पार्थ सली अनु आशु ती
अवधि पुरण के हम आवये
तखन मोद महा खन पापये

मुनिक समुलमे मण केल है
तकर पुति एधे कद भैर है
नहि करी मण जी करवे करी
तखन मण अर्जुन ने डरी

सयहुँ भाव कहैत कथा कते
जवरि देव निचाज करी अते
रह सदा समकौ गमनागमो
नहि सुली मन हो घर स्वागमो

कहल अर्जुन श्यामिअ मोदके
विसरि जाइ विनाइ-विदोहके
निन विनेत विलम्ब कह कते
मणक पुतिक प्रातहि ही पते

बहुत दूर ने दी अरियात है
हुमिअ शास्त्र विरोधक बात है
थिक अमंगल मानु प्यानमे
फिरबनीक विचारिअ ध्यानमे

कहु हुकोवर सत्य कहैत की
सबहुँ शास्त्रक शास्ति लहैत की
हुमिअ पुष्पक साइक मोद जे
करय करण है मन लोहके

कहल पार्थ, सली नहि मोदमे
धरिअ घोरज बन्धु-विदोह मे
अवश आव अयाल मुखे फिरी
दिलय अमित है चितमे चरी

करधि जे किछु श्री भगवान की
शुभक हेतुहि है कद प्यान की
कहिअ निर्वन तो पिहितो वषा
घन-घमण्ड यथा जपला-धमा

कद समर्पण जीवन हैशके
रहु निश्चित बले जगदीशके
जखन जे सुख दुःखक भावना
पड़्यती कद कृष्णक चिन्तना

बहुत भेल कथा दुहु भोरखें
मिजल बदन कते दग नोरखें
विषय मै किरवे मन भायके
सयहुँ कीरि विद्या कद भायके

सलधि ताकधि कीरि दुहु दुहु
शुपतिखें कहु भीम रहु रहु
पथहुँ मे जतया धरि देवने
सफल लालच लोचन लेखने

रग किमर्थ-किराय सिनेहमे
निरखु अर्जुन ना भरि रोहके
एहि चिह्नोहक दर्शनके कनी
लिखि एकै कहु की कवि-सेवनी

चलल कामल पंथाहि पार्थ ओ
सफल त्यागल सौख्यक स्वार्थ ओ
तृतीय आश्रम अण्ड प्रवेश के
सहधि जे जगमे जन फलेश के

पथहि पांथ कते मितु संगमे
बलल जाधि कथाक वसंगमे
बिसरि आलप बेग बसातके
सहि कते पद कण्ठक धानके

एह सुगन्धित मन्द बसात जे
करय शीतल पांथक गत से
अस्मित धैर्यधि गालक छाँदमे
सुभधि जीवनदायक दाहमे

बहु सुगन्धित पोषधि पानि जे
धरति स्वादित धनुहि छानि से
पथहि पोषरि-कृपक पानिके
विशधि स्वाद सुभा सन मानिके

सुभग कञ्चन-मन्दिर मे जौ
शयन दूधक केन सने तौ
शयन केनहु ने सुख जान के
तुण्हि तोसक तुषपहि मान के

जखन सौम समीप मुका पड़े
निशि निवासक आतुरता पड़े
पुसुधि मारग दासक डाम से
कतेक दूर कह तसु नाम जे

एहन तौ कहिओ होयबो करे
विधश पतिरमे रहबो पड़े
तरक छाहहि भूधल दास के
मन बली सन रोहु पिआसके

मिशिचरीक रथो सुनि कान सँ
रहु सखेत सशकृदि ध्यानसँ
रजनि जागि वितायधि ओ लेना
जग धनी भय चोरकसँ लेना

करधि ने मनमे किहु शोक ओ
सहधि मानस कष्ट कतोक ओ
विधि विधान बली जिय जानिके
बलल जाधि ने तैं दुख मानिके

पहुँचि कानन देखल भय्यता
कहत के जत बिस प्रफुल्लता
रचल पर्ण-कुटी धलमे तहाँ
बल नदी भरना लगमे जहाँ

सुभन सेव, अनार, लताम ओ
बदहरो, अछरोट, बदाम ओ
पनस, आमक वृक्ष सुशोभि के
रहल तैं धल ओ मन सोभि के

विपिन, धेनुक आगम मानिके
करव आवर पाहुन आभिके
समष्टि के सुख भावन बीच के
सजल लाय निवास लगीव से

विविध पुष्पलता तह शोभ के
सुमन सौरमसै मन मोम से
अमर भीर रहै तहाँ ज्ञाय के
मधुर मन्दहि सप्य सुनाय के

कतहु कोकिल काकलिराय जे
करव उद्वेग ई मन-भाय से
प्रकृति-भाइनि गीत सुनायके
करव स्वर्गाग को हरपायके

करवि नित्य जिया राम मैमै
विमुख होयि नै कर्मक नेमसै
वनक फूल फलै मित जायके
रहयि कष्टक काल यिताय के

कहयि जे जन पार्थक संग मे
निज निज कहुन प्राकृत रंग के
वनक ली कमलै कमनीयता
नगर मे कहै ई रमणीयता

मृग चरै थल चीकि मिहोरि के
विषय निःशुल पर्यंत चारि के
मन मयमद शब्द अकानि के
अलस यूथक यूथहि कानि के

कतहु डाकि मृगी मृग संग मे
अलस सिध पलै पति-संग मे
मिथु पिशाचय जाइय वेद के
अन्य के रह सो पय मेद के

अलस पत्तिक पंक्ति विनोदसै
रचय नाच तहाँ मन मोदसै
लखि बभ्रुकुत जित बिभोर मे
हरय मोर तहाँ मन मोर के

कतहु पाव विनै तह-पुन्य मे
कतहु गाय बरेह निहुँज मे
करी कपोल मलै तव ली जतै
सुरसि लै पवनो पसरै तलै

पवन कीचक बीच प्रवेश के
मधुर सप्य करै सविशेष के
वनक हेनि हनै कल तान के
बजर बाजन हो कहुनाम मे

कतहु शैल नदीक तरंग जे
कलकलै कर व्यक्त उमंग से
कतहु पोर मिनाय मचाय के
जलय झलक वृत्त बहाय के

वन-सता तह-हारि लपेटि के
मिलु परस्पर बाहि अमेदि के
अदह अंकम दम्पति संग ई
मनुज पाव कहाँ फिर रंग ई

नरु कदम्ब मकुलिन देखि के
निरत नर्कहि ई मन लेखि के
सुमरि कृष्णक राखक रंग ओ
पुलक पुरित मै रहु अंग ओ

बहुक गाछक देखु सविष्णुता
सहस्र हीत जलौ रधि उम्पता
बहु जटा-पुत दीवहि ठाठ मै
तप निमग्न रहै मन गाठ मै

चिटए ताल विशाल विराज से
जन जनाय रहै तन व्यास से
जगत मानव धीक अकार ई
मम निलोकु इहै पितु सार ई

गनिअ सोमर वृक्ष महान मे
तकर फल-फरो भर स्थान मे
रह विमोहित मे भय रूप मे
विफल अत पवै अघ रूप मे

धमधि जे कनि के वन आभमी
रहधि मै हरि-स्थान परिभमी
जतय कोध ने लोभक लेश हो
सुभग शुद्ध ससोमुख भेष हो

सरत सौरभ भार स्वभाव ई
जगत अमृतक जीव लोभाय ई
भरल फल फरो बहु वृक्ष मे
मगड राजल रूप प्रतपु से

गजज केहरि बाध दुरार से
करव साँप कतौ कुकुकार, से
बुझु तमोगुण स्थापित मै
त्रिगुणभय दन के ने किशौ कइ

गड रसौक विधान जहान जे
सुलभ ती घन कोय महान से
अखन जे जतवा रधि हो जहाँ
सखन ती सभ पाविअ से तहाँ

तदक झाहरि आसन मानवे
सुफल मूलहि भोजन जानवे
पिबक निर्भर नीर रहै जहाँ
सतत प्रबतुत गोहड़ु ई कहीं

विनु प्रयासहि भोजन प्राप्त हो
नहि कृपीक क्रिया किछु व्यास हो
बहुत तर्क-वितर्क करी कही
घरहुँ सी वन तौ सुखदे सही

तयक देखु महान वन्दारता
परक दामहिँ मे लखारता
फल न नाय कोआवय आनके
अपश त्याग सिखाय महानके

अजय के निज लोकक बात ई
कहत पावै मुदे पश्यात ई
वन विनोदक जसम ठाम ई
पद रसिक ने आन ललाम ई

तथ रम्योक्त उदाहरणों को
वनक बीच विराजि रही पते
कवि करी जतया मन कह्यना
महति अक्षय कोष धन बना

बहुलता-सति वृत्त लपेट के
बहुलता रघु कुम्भ सहेट से
सुमन सज्जित हो शायनो जहाँ
वन विहार पक्षे वन के तहाँ

लस लता बहु फूलक मार सौं
रह नदी तट भूक कतार सौं
सजि सिंगार किड़ा हित कामिनी
लक्ष्य दर्पण में मुख भाविनी

प्रति प्रसून मरदन भ्रमे जहाँ
बहुल सम्पदता वनकी तहाँ
समक संग सिनेह समान जै
मधुप दक्षिण लायक मान सैं

निश्चय जम्पक बाह सुगन्धि सौं
महमहो वन हो तेहि भण्य सौं
पुरुष मान भने अक्षि भेल जै
ततय तौ गमनो तेहि भेल सैं

छत्र सन्त, मधु कोकिल काकली
जगत मामिनि होक प्रिया जली
कुड़ कुड़, कदि काम जगज से
मुदहिं प्रीतम संग निगल्य से

तद लता लघु पुष्प-विहीन थी
हुहु परस्पर संग न होत थी
कुमि विकल्प उदास निहारि के
कविज प्रोपित रूप चिन्तारि के

रस सिंगारक ई सभ साधना
वन विलोकि प्रत्यक्ष लकी जेना
रसिक रम्यानकों चित बाह जे
तकर सुखहिं जाव निगाह से

कवि-कुलिक सुला वसुमानजी
उद्धि कामि रोला जग जान ई
विदप कामि महोद्धि प्रामवे
कवि किया रस हास बखानवे

विशेष भातक मिललक पावि के
कत विहंग जखु मदि भावि के
कत किलोका पतङ्क हो जते
प्रवित चित करै कहना तते

बल्य मिललक थीर शिफार मे
मगन पौसन बात उचार मे
इमहिं बाधक मस्तक फारवे
मगद रीत रसे कुमि भारवे

इनय बागहिं सौं शर लक्ष्य के
कपट बोध तते परतङ्क मे
तकन बेकि परस्पर भीरता
हुकि पड़ै मगद रस भीरता

पदक घातहिं क्रोध बढ़े जहाँ
वन विलोकिअ अद्रुत ई तहाँ
सब प्रिया पद घात खलाओले
तब अशोक प्रकुवले हँसाओले

निशि अमावस प्रेतक नाच मे
किलकिले कल कीतुक माच मे
करय गर्जन हिसक के जहाँ
रस भयानक ई बुझि लो तहाँ

फल कोलाहल कोल करे तनै
कर विभाग शिकारक ओ जतै
बहय शोणित मौस ओ मेद जे
रस बिभस्त प्रतच्छ अभेद से

बसधि शिष्य-समुह सुचित सैं
कहु कथा नहिं डोअ निमित्त सैं
मुनिक सुन्दर आधम देखि कै
परम शस्त रसे लिख लेखि गे

कहि कथा फल कीतुक हास मे
दिन चितायधि ओ यनपास मे
रहय चित न विस्तान आन मे
मन लदा मय पूरन ध्यान मे

अमल से कलनो वन बीज मे
बसधिधाकि कसी गिरि नीच मे
लखधि कीतुक कोल किरात की
मुनधि ओ मन दी लखु बात के

विविध नीत किंगलिनि गात्र जे
मंगन मानहिं लेखि हँसाव से
बहु मोद रसै वन प्रगट मे
सुखवृत्ति पढ़ै चित आन मे

लखधि कानन हिसक जे जहाँ
अवस जीवक रसहिं सी तहाँ
कर शरासन घाए सुधारि कै
तुरत देखि तहाँ लेखि मारि कै

मुनि निवास कुटी पर जाय के
सुनधि नीति-कथा मन लाय के
कर विवेचन श्रुष्टिक लय के
सुमधि तत्त्व समुप्य ममाव के

थिक बने घर शिखर-धाम ई
परम तत्त्व विवेचन काम ई
वन बानी तर ताहि चितारि कै
अमल जाल धिशास चितारि कै

बलि निरन्तर में रत ध्यान हो
अमल मय अनित्यक ज्ञान हो
लकल संशय विरक्त नाश हो
परम तत्त्वक ज्योति प्रकाश हो

सुदय मानस सैं सब वासना
रहय हीरल मे किहु कामना
सुदय जीवक बन्धन जाहिले
सुलभ मुक्ति सुभू वन ताहिले

जहाँ अगस्त कीशिक उद्दालक सुक भूरी तप गाव
अरणी गालव मुनि मिलि निशि दिन एक पाव खु ठाव
शिव मुकुन्द मित्र ठाम पदन हैं सेवि सतल हस्तंग
होयत की नहिँ लहजहिँ से थल सम विधि भयवज भंग

बलधि पर्ण-कुटी निज आय के
दिवस अंत समै लगिवाय के
करधि सौमिक हृत्प सुखिस भै
निशि यितावधि पार्थ दुविसा भै

विधि - विधान विचित्र विचारि के
रहधि सुख भने निरधारि के
मनुज भै थिक भोगव कर्म के
कहि बुभुक्षधि जीवन मर्म के

विपिन बिब निघासें मास गेला अनेको
सुक दुखक समै मे भोग कैलो कतेको
सकल अतुक शोभा देखि लोभाय आनो
मय पुरक प्रतिष्ठा यिस मे राखु भ्यालो

मय निरपलहिँ जहँ इषाम घन नवन हिँ नगै खयाम
मय निधान नयनील मय चोरन भतन भयान
भी कृप्य करणाभोज कय प्रणाम नहें गिरे
सर्वदा आपदे भयान लाव निर्भय कामने

— ४ —

पठ सर्ग

सुभग प्रभु बसन्ते भीक साभ्राभ्य देख
मग खर बाबरो मे मोद माधुर्य पेम्
प्रकृति प्रतति होरे गौधि के पुष्प-माला
नय वरप-प्रिया मे मालिनी देति माला

(वसन्त)

मधुमय मधु मालें मारपी मोति गेली
नय नय बहु कुलें गौरवें फूल बेली
बहुल कुसुम कुण्डो भालभी-भा लखावे
सुमन सजल साजी मालिनी होइ लावे

फूल भरल पलालो, पाँदरी ओ नेवारी
फूलल बहु गुलाबो दिव्य देख कियारी
यदाये कुटिल काँटे यिद पंखो अली के
रनक बसक भेने त्यागु ने ओ गली के

फूल बन माहँ बम्पा दिग्य बेलाक शोभा
अमर पुर विराजै मोद-पूरेक लोभा
मदन-पुर बसन्ते मोहनारम्भ जानू
कोइल अगक शोरे कालगुनी कुल मानू

(मय वसन्त विष)

क्रम मम कद शीतो ताप मन्दे बदाने
 ऋतुक रम स्वभावो लोक तै मोद पावे
 नय-निरत भरे-भूँ के प्रता ने सुखी हो
 अपस रम समै मे नति-होने दुखी हो
 नय दल मय फूलो दृश्य रंगे-विरंगे
 लज्जि लज्जि वन-शोभा पार्थ संगीत रंगे
 निज निज मन भावै भावना लाहि केना
 करहि सभ प्रकाशो चित्त सँ ताहि तेना
 शिथिर अलह शोभे जीव केँ कष्ट वेले
 मुनि मुनि ऋतु राजा कोध सँ दुःख भेले
 कलमय ज्ञधिकारो ताहि सँ छीनि सेले
 भदि तथि सुदि माधे सुधना ताहि वेले
 भविष्य अपमाने उन्नत पलाक रूपे
 निदप बिदप घूमे कानि दीन स्वकूपे
 क्षुभ क्षुभ मम दावे आर्त बाणी सुनावे
 थिक ऋतु शिशो ई कोरली लोक गावे
 दिन शिथिर सतीगे गाव जे उलान भेले
 उपवन-वन-शोभा ताहि सँ इन्द्र रोने
 अश्लिष्टि ऋतुराजा जै बया-दण्डि भेले
 नय दल फल फूलें वीभयो पूर्ण कैले
 मेजल दल पुराणो ओर्य पाथ स्वकूपे
 अदृष्ट दल नवीने यदत्र भारे अमूपे
 चिकथ मुकुल फले भूषणो दिव्य राजै
 ऋतुपतिक निवेशेँ दुख ई राजा लाजै

धियत घर विनानो श्यामलो दिव्य रूपे
 शशि नखत विराजै वीष-माया स्वकूपे
 सज अनिल करारो कसँ फूलें, पिशेने
 भतनु अलक झोला भाव ई चित लेले
 बनल पिक मकीबो वृत्त चूरे पुकारै
 वृष मद्रम सवारो सैन्य संतो पधारै
 जग दलक रदो जे दोल दृक्का बजावे
 कव सभ सतकारो नृदि होयै न पावै
 सजल भल सुमुखो केलरी पुष्प पेख
 सहर सुभल पातो बामरो चारु लेख
 रश्मि सुकुल बेनी शोभ मोती कमलें
 तिलक-तिलक फूलो वेणु की दिव्य भाले
 यह-यह चढकाली मोदसँ गीत गावे
 मधुप-मधुर वीणा मन्त्र खरेँ बजावे
 पवन यह सतारी लास्य नृत्ये लजावे
 तर-गण गङ्ग फुली पाद-पद्मे यदावे
 तरनर नय पातें कालिमा जे लजावे
 लज्जि अतुपम शोभा भाव से चित गावे
 प्रकृति मुविल बिसेँ कुकुमे कागु सेले
 उदल अति अवीरे लीह ई व्याघ्र सेले
 पदुप कति जानेको जाम-शाजा विराजै
 जनु धनुष कतेको यलसँ दिव्य लाजै
 राहस सहस तीजो मञ्जरी तीर ताने
 मधु ऋतु पथ भाषी वस्तुतो लाज बाने

अननु मत वसन्तो घोषणा ई मन्वार
पिक तनिक सिपाही उच्च शोरेँ वन्वार
जगत सकल जीवो भासि कन्दर्प-वाणी
रह्यु रस-विनोदेँ मग्न जानी कि ध्यानी
जग सुनि सुष-आकाश भेल कामान्ध जानू
चर-मचर जहाँ जे ओद मे मस्त मानू
भट लपट सता तेँ चुसल काम भाषी
मनुज मद्-विभोरेँ गारि भीतो सुनावी
सुनि सुनि पिक-वाणी कन्दरा लेल योगी
मग्न मनक जीनेँ मौन धाक विरोगी
युवक-युवतिक संगे रैव-योगे जहाँ जे
मुदित मद मनङ्गे मस्त मानू तहाँ ले
पहु सुमन सुगन्धेँ वनिली वीम आर्य
कुट्ट-कुट्ट कल कण्ठेँ कोकिला भीत गावै
पदन सुक समै मे जे विदेशे नमावै
अरसिक गहना मे नाम केओ नमावै
कट कटल कटेको आब ऐला ने कन्तो
चिरहिनि तय जाने काल आपल जन्तो
पुनि पुनि पिक वाणी 'पी कहाँ ई पुकारि
सुकि पड़य वसन्तो जन्तके जे पभारै
लखि अनुपति-लीला पार्य ई विसा धैले
सुकि घनहिँ विधोगी कूरला काम कैले
मण पुरक प्रतिभा माणसै पैघ जानी
कल्पितहिँ मनो जेँ भापु ई सीव वाणी

कुसुम धनुष धै के मञ्जरी तीर तानै
मदन-जन विमोहे कोइली कंठ गानै
सह-सुरभि समीरो चेतना केँ चोरचै
छल-यलहिँ छली तोँ की विधोगी सतावै
लहिँ अनुपति संगो रे अनंगो शुभ नी
कल कल कर घातो श्योतलौँ ताहि जानी
शिव तप नशि मानै विश्व मेँ जीति लेले
जनु जगत मती केँ काल मन्त्र मेले
शिव धिक्कहुँ ने ध्याने मग्न तोँ मोहि पैवै
छुप छुप छर पाँखो चातुरीसँ जलैवै
तन धार धर वाणी तोँ लई जौँ मतब्दे
सखन बुझ कीना तोँ पथिवैँ पार्य लखै
सुख दुखक कथा मे वीत रोले वसन्तो
मनहिँ मन मनावै हो कोना काल जन्तो
अनिशय दुखदायी गीरवी प्रीथम आवै
मग चर अचरोँ केँ वीर्य दाहैँ सतावै

(ग्रीष्म)

लखि पुष्टि तापो तागसँ तप्त कैले
सरक सरस मीरो शैत्यकेँ त्यागि देले
तपन अपन संज्ञा सार्थकेँ कैल जाबू
कइक हित मिदावे दाघ दायी बखानू
दिन-दिन अनु प्रीथमो कर भूपाक कये
कयल निज मनापै भूमि आवा स्थलये
जत-जत मद् तापो स्वाकुले पाश काँचे
एत खल रवि आभय हेतुप हीम राखै

जल घटल नदी में भेल शोभा - विहीनो
चिकल सकल जीयो कच्छपादीक भीनो
अपमपि नृप कृत्ये कोपके कीणतार्ल
रह चिकल प्रजा जे सेवको म्यप्रतार्ल
दिवस वदय मानु ग्रीधरी - वरज करे
निशि अति घटि गेये मिलु वरज स्वरूपे
उपम-विपम लागे गेह आवा समाने
घट न घट पिआसो के घटो पानि पाने
लजि लजि मृग लुप्या आवमाने मृगा हो
चिकल चिकल चिरो मूर्च्छिते ओ तहाँ हो
चित्तध धनिक गेहे म्यप्रता प्रस्त गेये
मनुज बिकल हो जे मान आशा गमीये
विपिन चिकल बाघो त्पाशु दावागि दां
तपित वृषभ आवै तीव्र तिग्मांशु तरो
भुजग मयुर मूसो लपत मै आबि गो
बदनर विनु द्रोहे कप केलाश मेये
धर तर लहयाना सींचलो बारि धारे
रखि तहँ कल आना कज्ज खेजो लवारे
रमित रतिहि इयाभा बीनुके पूर्ण देख
रसिक रस निमग्ने मुख के ग्रीध्र लेख
व्यजन अपन हाथे मै भरी के डोलाये
कर भ्रमहिँक लामे से कि आनन्द पाये
मृदु हँसित नवीना संग बीसे लपाने
कर बिअनि बसाते वृष्टि हो भाग्य मानी

नव तिय पति लगे गोपनो अंग केने
तुलति यदि लखने निन्दल प्रस्त मेने
तन भरल पसेना आननो के अपारे
पति सुमय कपोले चेति ओ चित हावे
सुति सरसिज सेने वृद्धि हो ताप बहे
धुमय बरष बहि बर्फसे तिक गेहे
घट ने लनक तापो आननो लेख देने
विरहिमिक वशा ई ग्रीध्र के आबि सेने
चिकल अति किसानो तीव्र तिग्मांशु भेने
कय लकय ने खेती पानि के सुकि सेने
नित उठि उठि ताके मेघमाला अकाशे
विधि मनहिँ मगावै बारिधाराक काशे
विरचित गृह लावा अग्निले दीप्त भेने
वरकि जलल ल हो देह, "क" दृग केने
बदल पहन कष्टो पाये के लोक भावे
तपन आपन तावे ताहि ती की देरावे
कत-कत दुख दीके गेल ग्रीध्रो गुमागी
उपगत निज साजे पावसो दुख मानी
नव शनक घमण्डे घोपणा ई सुनाये
मयन आपन सेना लाजि के आव आवै
(पावस)
नम-नम नव मेघो शम्भु के के करये
घन धुमक घमण्डे खड्गना के देखाये
वृद्धि पद चल सेना बारिदे घायु पाने
कर गहि करवाले कोचसे लँचि ताने

सजल धनुष शको कोध सौं व्योम देखे
घहर-जन घनेरो तुन्दभी घोष लेखे
अग युवनि युवा के मान केँ त्वागु आने
गहु शरण मनेमे ताप सौं प्राण फाँले
गगन गरज मेघो सङ्घला ज्योति देखे
कङ्कि कुलिश बाखो भय मने ताहि लेखे
जहु मदन निदेशेँ पावसी लैन्य सारी
निधन करय चाहि मोयिता विश्व नारी
वन तेजल तपस्वी धौल गेहोक आशे
धिक न वन निवासी पावनो छारि भासे
बसथि वन अनी से वा प्रणे पूर्ण भारेँ
सदधि असह कष्टो कर्म भोगानुसारेँ
वन फुलल कदम्बो मालती कुंजकुंजे
पसर पयन लै छै सौरभो पुंजपुंजे
उपगत अनु वषाँ हरेँडा विश्व जानी
रसमय जग भेने लोक कामाग्ध मानी
सुन-सुन नय भयेँ देखि आकाश कारी
मनहि मति मयूरी मोद सौं सुख-कारी
धुमिल चित परीहा 'प्रीड' पारी सुताये
चिरहिनि सनो मे काम ज्वाला जगाये
नहि नभहिँ बनानी भूम ई व्याप्त भेले
धुकि पद घरपा ई अरज आग्नेय लेले
धन-धन सपलारनो शान है साजि राखी
अमल कण अरे जे लोक लछोत भाये

दिश-दिश दल वषाँ यम सौं सजल कैले
रखन धनुष व्यूहेँ मध्य मे चित देखे
सब अपन पलाका रंग रौक राखे
सुरपति धनु व्यर्थ ताहि लसार भाये
निशि विद्रुह विमेशे दूमरो भेल भागे
शशि रवि नहि देखी व्यापु जेँ मेघ कारी
उपगत अनु वषाँ आगि शास्यर्थ हुन
सुति सुखमय सेने निम्ह सौं आँखि मून
ललि ललित समे ई साजि भूजा जगाये
पति सह कुलि मोदेँ राग मालार गाये
चिरहिनि यमिता केँ काम कोधेँ सनार्ये
लखि बिलखि व्यधा सौं हारि नारे बढाय
लघु लघु जलस्रोतो पानि सँ पूर्ण भेने
वनल अति गुमानी वेग केँ तीव्र कैने
लघु जन घन पीने आत्म कपो विसारे
यद जम समता लै राखै सँ स्वर्ण भारे
अलि अगलि ने गुंजे कुंज पुंजे नुकेले
अवधन अनु वषाँ कोकिला भोग भेले
दुर दिनक प्रभावेँ नीच ऊँचे अनाये
मलिन जल निवासी बादुरो गात गाये
अभिमत जल योगेँ बर्द्धितो खेत धानी
बरिलय चर बुन्दो भोव माँ किलानो
मन-मन गुन भाषी जाय आशा अनूपे
धन विद्रुह जनो जेँ स्वप्न राज्य हारुपे

बहुल जल नदी लँ चादि मे भाव धानो
सति कुरहिँक मेने लोभ बिलो किलानो
पुन पुन कर खेती वीरता खेप चारे
प्रिजित वृषति रूपेँ केरि फौजे समारे
विजय बल विदेहेँ त्यागि जे गेह आशा
मनहिँ मन मसुलैँ लोचि प्यारी इभाशा
कइ चुप रह पायी 'धो' मे साध पपीहा
सुनि कुलमय पाणी प्यारि त्यागेन जी बर
तरल मद तरौ तीजने वेग धेने
उमनि विषय गामी कुल के बाशाँकेने
जग जन दुखदायी हो महा लोभकारी
सखु कुटिल नदी ई पुँधवली रूप नारी
सति सति धन आवे वायुधाने अकारो
बहरि बहरि धूमेँ लोक केँ दे तराले
करय कुलिश पातो हर्ष लँ जो गुमानी
लखि-लखि अति कोपेँ भापु बोभासु पाणी
धन बहरि कइँ तोँ १२३ माला डेराने
धन धन बिजुली ई खोख अरुनो देखावे
कइँकि कुलिश पाते वस्त की हो गुमानी
हम निज भुज दापेँ विश्व केँ लुप्त जारी
वस्त माल मे की शक्ति दुर्भेध ठामे
अपन शरक सर्पा केँ रहैँ आठपामे
कर शर घनु धेने शक्ति ले तोँ प्रमाणेँ
नभ भुवन पतालो पार्थ केँ तोँ समाने

भर भर भर पुन्हेँ मोक वातो सतीने
घनहिँ लघु कुटी मे काल कपडेँ पितोने
कहिय शरद जेने लँ कि आनन्द ये
दुर दिनक प्रभावे दीन दुखेँ पितेने
(शरद)

अइह शरद सखेँ सारिके कपधारी
कह निरमल पृथ्वी आवि आनन्दकारी
सुर पलिक प्रकोपेँ राखु ई सुखि भारी
धर अखर सुणी लँ मोह माने विहारी
शरद विशद रूपेँ सुगता भूमि देले
सुर पितर प्रकुमेँ मेदिनी आवि गोले
नर धर-धर पूजा केँ रह मन स्थाने
अवश पहिँ समय मे भूमि स्वर्गोँ समाने
शरदक खरदारी देखि केँ नै सराहै
पथ परकि प्रशस्तो पाथ प्रस्थान जानै
मए पुरय पपीहा पालि स्वाती दिआवे
निशि दिनक समाने मान केँ ई जलावे
चुप चुप सति भेको आव पाताल गेले
दुर जल दुरगन्धो सर्वथा नष्ट मेले
उपगत कुल इँको हर्ष लँ ताहि देख
दुरजल दुर गेने लगने खग लेख
प्रमुदित शशि सरो स्थल देख अकारो
कुमुदिनि कल हँसे विश्व केँ हो बुलामे
अतिशय सुख प्राप्त नारि स्वामीक खेने
सहज सुखद दाता शरदी काल धेने

जल भरल तड़ागो मरफुटो कंज राजी
दिवस सिंगरहारो की अनूपे विराजै
मधुकर मधुलोभी मुकुट मुकुटे लखावै
विभव विशद मेने बाबलो लूटि आवै
शशिक सरस शोभै शोभमाने अकाशे
अगणित ॥ अल ताली के लख ताहि पासै
सुखद शरद अने कृष्ण केलि स्वयं
रखु मम धम धृम्दा रास कीड़ा अतरे
शशि मुख लुबि धारे कज्जको मैन कवे
कमल सह मृगालो हाथ बाहु खडारे
लुबि उरज अकेषा काम तापो बढ़ाये
शरद अतु शुभा के तारि कवे लाजावै
शरद सुखद स्वाती पुनः पीयूष मानो
कपूर सुगन्ध मोती ताहि सँ जगम जानी
अहि सुख पड़ने से बीक पड़े प्रमानो
सुजन कुजन संगे भेद परतण्डु जानी
उपगम युग नेना शारदी मध्य वेख
रगुर हन लीला लोक आलित लेख
नरपति रण रंगे मोद सँ सैन्ध साजी
कहल पिधि यात्रा शब्द डंकाक बाजी
महि तपल निदाये तै हय दम्भ कैले
धन दल राजि भारी बाढ़ि वर्षा क देले
महि दुवल जलोथे शास्त्र होमिक भावे
जनु अयल पताका काश पुण्ये लखावै

परत दिन विधारी दीप दीपीत वेख
पितरक घर धामे ऊक आलोक लेख
घर घर पुत्र लगनी चत कीतुक लागू
यधु हस्त रज सवे हुज वारिद्र भागू
जनिक पति विदेशे पुजि देवी भनावे
भगवति शरदो मे जौ भला नाथ आवै
करव विशद पूजा लख लाजै भवानी
तिय गति तिय जानै होउ मा । भाणशानी
लेखल मुख प्रिया ओ अन्दमा निकलकी
कहल वद मरो है फाल्गुनी भै निशङ्की
शरद शशि कलगी ताहि सौ की देखाये
जनु कर नहि कावे जोहरी के लोभाये
शरद समय मेने आव हेमन्त कीने
दिन लख निशि दाँवे शीत मोते खतीने
सहस्र धिक अयशे जे रहै भोग्य भायो
कुदिन खुदिन हूते जगम संसार पायो
(हेमन्त)
हिम अतुक अयेदे शीत सधंअ व्यापे
चिनु अमलक सेवे जाद सँ हाड कापे
जत जत वद शीते मानि के विल आसे
तत कर तपनो तै अग्नि कोरीक आशे
अहि रथ भय शीते शीमते धावमानो
शिल है सहस्रि सुरते जाय अन्दाक याने
दिन घटि निशि बाढ़े कारखो येद मानू
अकथ कहथि जे से स्पर्श के ताहि जानू

पवन अवर प्राप्ते पूर्ण हवे प्रपाही
पवन पुनः पाला यामिनी योश आही
भयल पहल चरे शीत-रक्षा क भावे
प्रकृति मह सबेली मे वसत्रे मोदावे
उपगतहिं हिमालो शीतता के बढावे
निशि बहिं बक्या के चित्त बैनो जोरावे
करमठ धम बुझो आछयो के सतावे
चिरहिनि यमिता के काम ज्वाला जगावे
तन धर धर कोपे पंच जैवो मे भावे
चपु सकुचित जंघा दोन मे माथ लावे
धवण सुनव शोरे होम शीत प्रभावे
निरधनक सुयो हा! बुझ हवे ललावे
रुनि जलक चली के मोद सैं मल सानू
धर धर धन धाने धन्य भाग्ये बखानू
लहज सुखक बखानी हो मरीचो विशेष
उन्म भर कुटुम्बो जग्न लातल्य लेभे
महिं मलि तन मेले ने तमोले चिचारे
नहिं तरयिक मेले शीत प्राथल्य जाई
तवणि सपदि लेटे पातरों पीर-धारो
हिम अनुक किया ई लौक्यवायी विचारो
लघु जल द्रवाजा पूर्ण परा लमोने
नभ भरल तुराई लोशको के विद्योने
अनल धरि अनें डी राखि के रीति, जानी
चिरहिनि कनि दीते काल काटे जमायी

लगा बलि नव द्यामा पान-वीर्य लोभावे
वरय वर अनें डी पूष काठो जरावे
शपन लज गलीया जोड़ि शाले रजाई
लखि सुखित लैयोनी होम हारे लजाई
तत तपित विशेषे ताप बिच्छे भारी
सुखद यत्न मेदी देह सैं राखि ठारी
बठहु बठ न स्थाने पाये के लो मे जानै
ततय हिम प्रपञ्ची की किया कोटि ठानै
हिम अनुक लमे ई कष्टनी सहा कैले
शिशिर हिमक खंगी मार आगाँक लेले
सुखद जगत जानै के सुखी भग्न माने
दुखित जनक लेखे पीक दुःखीक धाने
(शिशिर)
क्रम-क्रम दिन माई राति मे म्यूनता हो
पवन परल पीने जाइ मे बुझता हो
किछु किछु लिख तेजो तापनो मध्य वेखू
शिशिर अनुक लैने ई दशा आब पेखू
खरवर भल शोमे पक्ष-पक्षो अनेको
विकल मुकुल कंजो शोभमाने कतेको
लखि-लखि कयि ज्ञानो निष्ठ मे मानि लेले
विषटल विमयी के वैभवो केरि लेले
रुफ रव करताले गीत अश्लील मानै
मन मतल मतके ले अवीरो उदावे
भरि-भरि बिचकारी रंग है है मिजावे
जग धनिक मरीचो भेद पबे मेटावे

कलमनुं तिम्र तापें उपमता बोध - कारी
कलमनुं बहि घालो कै रहै जाइ भारी
शिशिर अतु स्वभावे धीक ई चित्त आवै
अतु शिशु क्षममतिवश खेलि कपे लोकपाये
दिन दिनकर लेहैं जाइ मोले शुभाभी
नहि दोहरि तुराई मोदवायी बलानी
निशि उपगत भेने लपकरे कप आवै
प्रखर पवन संगे जाइ हाइ भड़ावे
रस रसि हँटि सुतै जापके लेज कोने
हठहि हठन त्वासे जाल बानो मनौने
अहह शिशिर शीते ! धन्य कै तोहि मानी
नितकि ससरि लूतै अंक में से सयाभी
छन छन तन लागी आँखो केँ हटावे
पथ पथ बलवा में बार बार लजावे
पुलक भर शरीरो के हठो भापु आली
सखि शिशिर समोरे देखु ने ई-खेयाली
घर घर मय डोरी भंग रंगे लभने
जतय जुड़ल जोड़ी से रखे काम-रंगे
लखि परिजन मोदी जी जरे दण्ड छाती
दिरहिनि घिर जानै रंग होरीक छाती
शिशिर बयस धूँडो धूमका योग्य भेले
कह तर दल रोमो म्लानता अंग लेले
घन उपवन शोभा को कहाँ ताहि ताकु
अतु लग घन सूँदै पश्चिमी पौन जाकु

हिम अतु हिम देले जग प्रीमौक लेने
पर धनक धनी में पार्थ के की डेरीले
हर तपक समै में लल अम्याल जानी
शिशिर बतन कण्ठो देव स्वर्थे प्रमाणी

× × ×
बितै पट अतु निज स्वभावहिँ सतत लम जन जान
तत्पि तुल - दुखमय प्रयोधक जे जेता से मान
कोकिला कलएव बड़ा शशि शीत आतप देखि
सहज सुख माने सँयोगी दुख पियोगी लेखि

गेल बन बाल महँ काल पहि रीतिप
कैल लम भोग बन धीर्य दुख जोति केँ
धैल मन मय बलि तीर्थ रटना करी
हो सुफल जग नर सिन्धु भव केँ तरी

धन जन तन मन ज्ञान मन
ज्ञान मान सुख ध्यान
छन छन पुन प्रव ज्ञान सन
ज्ञान ज्ञान जन जान

(विनयिपव कमल - बन्ध विव)

श्री कृष्ण केँ ध्यान मे देखि कै आकाश आभा मने लेलि के
थुँडे सुलामी छुमे जातु से यात्राक हज्जा हूँ जातु से

सप्तम सर्ग

श्री हरिपद सुमिरन कए अर्जुन लोथ नमन-पथ धैल
मग बलहत प्रण-पुति हेतुएँ ई विचार बित कैल
सीर्थ धमण सँग सहजहिँ देख्य बहुत भूपट्टक राज
ई लोकाति होएत भरितारथ एक पंथ दुइ काज
दुल शुभ द्विपस नकुचविह सौँ ललित सिद्धे योग
नाह मे पुनि लम्न-विभारे परमात्म प्रह-भोग
हाथ यमु गृह शृंग जानि शुभ वैवशहिँ ई दान
सुगहल अति पुनि धिम-बटुक दुख अर्जुन कैल पयान
चलितहिँ उरि पदल बाझागुत धेनु गाय विनु भीत
सधवा सुत-नुत भरल कलश ले मोदहिँ गयइत गीत
माइक भार, वही, घृत, मोरो दूदनिहिँ हारण अनेक
वाम भृगाला कपोत खडनो दुभइ एक सँ एक
सगुन फलफल बुझि चिमोत्रहिँ रहथि मनहिँ हरखाथ
बलहत चर्चा मोव सहित सम करथि तकर मन लाय
प्रनपासक दिन अथल बुझक थिक निशिदल कृष्णस्वरूप
से बिनने ई सगुन शुद्ध पख पवित्र चन्द्रमा रूप

पथक दुह दिस कत कत देखथि नगर ग्राम पुनि टोल
सञ्जन धनी कृपक यमिहारो बसय भिखल ओ कोल
देखल कतहु सजल फुलधाड़ी, कतहु कलक बड़ बाम
कतहु कृप बापी सर सुन्दर सरसिज-सहित तदग
देखल कतहु धनी धन मद सौँ वैसल मखनव लागि
परिवर पंजा पयन प्रचारहिँ परम प्रमोदहिँ कागि
पुरजन पड़ल पराभव पर नहिँ पदुय दया-दण-कोर
बुझि पड़ पाहन उपरहिँ बिचकन भीतर परम कटोर
देखल कतहु दीन दुखिया केँ दुःखहिँ दूपा देह
मूखल भयन मयन भरमय कत कइहिँ कह किछु वैह
रोह-विहीन, देह नहिँ परिहण कइहिँ गोपय संग
कनइत ककला कर कत अवला लहु लहु संतति संग
दया द्रवित बित वार्थ विचारथि केहन कृपक ई वेश
जे नहिँ देखि दुरायथि दुतगति बुझित प्रलणण क्लेश
दीनक आह आनि विद्रोहक अथकाओत ई जानि
सम जन प्रज प्रेम-रत रहये मुप केँ मत लिअ जानि
कतहु शील घरटा-रण मन्दिर, कतहु मधुर पुनि गान
कतहु कोलाहल कलह कान पड़, कतहु दुखित जन कान
सुखमय की दुखमय मडि धिक, ई कहय कठिन जे जान
समय प्रतच्छ रूप सौँ सम काँ दरसाय हो मान
लोथ नदी संगत सर देखइत कृत्य करथि सम ठाम
वन-उपवन गिरि गुहा विलोकथि करथि कतहु विभाम
देखथि वेश भेष भावा सौँ परिचय करथि अनेक
चलहत पथ-धम बितरथि करत तकरे कथा कतेक

गोधूनी गोधूनी - कालक वाक्क पथ छवि घेश
गाय - हनु हंकरनि चलि आलय सन्मानक आवेश
गौरी राम गोपलक बालक गौरव सैं लभ गाव
गाइक गारुमि गांधल घांटी रव मिलि मोद वड़ाउ
अदकि चहकि बल चिदै गगन मे निज मोदक टक लाय
कत फल काक कोलाहल के रदु बुकि पड़ से अकुलाय
देखि भिवाकर विश पश्चिम गत निशि भर मन अनुमानि
अग जन के जनु चेत करायय ई लिख मन मे मालि
नलि लकि सविता रथ शीमहि बल करमायल बाल
बमल होप रस लम्पट पट्टर बमल सरस रस - आश
आशा आवि वीर डर पैखल, पुव जन हृदय अर्पन
हरप वसल हिय भादि प्रगल्भा भय भय बागरि अक
पंथहि माँक लॉक मेल उपगत, रवि अस्ताचल धाम
प्रान्त प्रतोची छन छन बदलै होभा घरम ललाम
छवि लखि सवहि विचारि व्यदलै निज मन करधि प्रकाश
निरत चितोद पथक अम विखरधि मानधि मतहि हुलास
की धिक दण्ड अम मे डाहल विष्णु ज्योतिक दीप
उदाध पोत-पाइक गुमथा छै भल विभ्राम समीप
आकल गंतक पथिक गधारधु आवधु आश पयान
से लूचक धिक विम्व ने रवि कहु ई निदधय मन भान
की चरुचक यमिता आनुर ते आगत सग्या जानि
साजलि दाय उदधि-पूजा ले तट मे राखलि जानि
की धिक नभगत भमित पेदारा कीनुक हो आभास
रजिक विम्व नहि कहिय जाहिने करत जगत उपहास

चौकलि थकयी थकित-चित्त जट भयव शक्या दिश पेस
चिन्तहि चूर चरम तजु विलखित गति-समीप नहि हेस
कुमुदिनि विह्वललि खोलि खेव पट छुल संगम शशि जानि
दिल भरि चकरी रमस हंसित सी न रह सकुचि गलानि
अधिकारक अभिलाने सग्या पहिरे सारी लाल
आभूषण मालिक मालिक ने ज्योति आति रह भाल
से आगत स्वीमिति निशि लखिनहि लाजहि आय नुकाय
ई कीनुक नी प्राप्त प्रतोची प्रतिनिध देखना आय
कजुन समक कथा सुनि सुनि के मध मन् ईसि देखि
सखदिक तर्क विलज्जु बुकि बुकि आनन्दक रस लेधि
ई विनोद रत समर देवदत मन मे मानु हुलास
काव्य कल्पना-रत मे कवि ई वचन करधि परनास
कर्णक करनी लखि लखि सोचाधे करधि मनहि अनुमान
हमर तन व कीरव पल्लवगुआ ई धिक अति अपमान
कुसुत कुकर्म देखव सैं उत्तम मरणो मन अनुमानि
उदधि दुधै रवि जावि दयाधिय करुण मित्र घर जानि
प्रान्त प्रतोचिक साज समष्टि के मूर्त्य अस्त मे गेल
दग केरत प्राची दिश घुमवति पूण अम्र लखि लख
प्रकृति कीनुकिक कुसुक फला ई अमृत छवि दरबार
पश्चिम दिश मे भांगल से जनु पूराई भगट देखा।
पगलहि नखत ज्योति नहि धिक ई शुभक फ अनुमान
तन गंगा मे देव-वारिका दीपायनि कर दान
पहुँ पल्लि केथी केथी पथ मे छवि करधि केथो समधान
ते कम कम संख्या ई वदल वृक्ष जनु किनु आन

सर्गः द्विपिना गगनक द्युत मे शशिप्रभ दीपक वार
चक्रमक चहुं दिश शीतल सुखकर उषासिक जाल पसार
कूलहिं कूलवतीक कलाघर सुवि कर कौतुक केलि
सुचित कुमुदिनी प्रागनपतिका लह लह आशा बेलि
की शशि अचित सुभारल पसरल की कपूरमय मेल
की महि मदल तबक खानी की दूधहिं भोजल मेल
की कौतुक प्रिय प्रकृतिक धिक ई अति अद्भुतभय डाल
कहि कहि करधि कथा कत चलितहुं चाहि रजनि निवास
पथक कनोपहिं पंथ निधामक भयन भय भल डाल
देखि सुखद युक्ति सभ मिलि कैलहि रजनी भरि विश्राम
मेल भोर सन निद्रा त्यागल सुमितहिं प्रासिक गान
वसिण पवन नृगद युक्ति सभ जन के देल पथहि पयाग
गंगाद्वार तीर्थ बसत तट तहैं सभ पधुं चल जाय
सुर सविता शोभा के लखि-लखि आतिशय द्विय हरवाय
गिरिक गुहा सँ गविस धार लखि रहयि गवहुं डक लाय
निर्मल गौर कटिक अनु पसिमाज सुयि तेहमे वरवाय
सलिल स्वच्छ वर्ण्य द्युति मिन्दय अनुपम शोभाधार
धिक भय-सिन्धु तरणि तरणी ई सागरध तप अवतार
सुरमरि के अर्जुन करबहुहिं मत-धिर कैल मद्याम
कदल पूर्ण पुष्पक कल पाओल आर अहैंक ई धाम
गंगा द्वार कही हम मानिअ अहैं कौ तीर्थक द्वार
पतित-पावनी परमपवित्रा भुवि तीर्थक आचार
तीर्थराज चिन्पासल काही अपर अनेको घाम
अहैं धितु की दधितधि पावनता पुहुमी मे ई नाम

विमल वारि वकहिं बनुधा मे बडहन सुयि के देखि
कै अनुमान रहधि कथिगण कत हमहुं रही मन लेखि
भसिरध कुलक कलुष काठक हित विधि शशित अलिधार
की पहिराउ प्रकृति भारत के अनुपम होरा द्वार
शक्ति कमलदनु मे अनुरागन अनुराई तौ कैल
अनिरध अति भाव सँ भावित शम्भु जटा मे धैल
से पुहुमी मे पसरि पापरल जन सारल मन लाय
के देल कोटि तीर्थ मित्र कूलहिं अन्तहिं बंधि समाय
पाताले पृथ्वी चलि जैतधि द्रवि कै पापक भार
की अकलधि भगवान भुमि मे लैत लैत अपतार
नहिं तौ ई महि मगहत होत होसर तरक सरूप
जौ गंगा अहैं आयि पतै नहिं कहितहुं खरिता कप
कनमनाय मेल वमक विभव ओ तीर्थ उपजल आल
कुम्भीगाकक कनद पला नहिं अग्नि-पानी मेल नाश
यमजन कानय कानन तरको सार्क प्रभावेँ मेल
आनन भाँपि सुतल सुंय रधि सुत वै कानहिं तुर तेल
धिकहुं पितामह भाद जननि अहैं ई सत्यभद्र विचारि
सन्तानक रक्ति माता धिधि से मन मे निरधारि
सरमि सुवन मे आनत पलायन हम रहु तट अंचल आय
जग मे असित लपित बालक सभ अरनी कोर समय
ई कहि गंगा द्वार तटक सुवि देखधि सभ डक लाय
अनु शोभा हँसार समटि कर नयनहि रहल लोभाय
कनहुं नडाधि नारि सर कत कत कतहुं दान जप ध्यान
कतहुं कथा कीर्तन धुनि नौपति कतहुं वेदिक गान

सयदि विचारल वैलि टाम ई योग्य यद्विहक थीक
तैं ताहो मे निरत होर हम यादि तीर्थे वक् सोक
धै नर-तन अरजन करि से धन जे जन दुरि नहि जाय
पतै सहज तुल सम्पति सम जन सोतै वसी हरजाय
यसहि विविध प्रसूतहि मरिहत प्रह्वय वनल अनूप
रचित प्रकला नामि आदि युत कुण्डो कचिते रूप
शुचि ध्रुव समिधि मोक्षपी प्रणिना पात्राविक समनूल
आसन आर्य दृश्य कुश तिल तहें प्रस्तुत आनन फूल
धी गणपति दुर्गादि देवता प्रथमहि पूजि मनाय
विप्र वरण द्य वक्षारमल दुसह दुरित दुरि जाय
जसक सेवा प्रथम करक थिक शुभ जन कहत हुमाय
कक वक सँ जग जन जानथि भेजो काज नशाय
यस सविधि सम्राटिह भै गेल होवा गण अलि दूत
प्रतिनाचन शिवा दहनक लखि तुरुल तुमल परतन्त्र
सफल मनोरथ होयन शास्त्रे नयहुं कहल ई यात
होनहार तह के लखि दइइज जगमहि लह लह पात
अवभृथ अवगाहन हित अर्जुन सुदित गेलः विष भार
पाथ रूप खखि ततय उलूपी नाग सुता वश मार
के आहवंग ले गेलि तुनका थल पताल निज धाम
धैरज गोल दुई के लय गलि जे ते करावथि काम
भाग्य-वक् भवि ककल करत की से नहि बुझा जाय
रंज लाजि पर्येहु कनकमय सुजहिं सुनय हरजाय
जनिका तिर पर सात विशजित चामर धन ललाम
से भै दीन दीन वैभव सँ वेसल सुदधि काम

देवल नामलोक कै अर्जुन शोभा कहल मे जाय
सौध लहल शशि पूर्णहुं सुन्दर गगन सुमय जनु जाय
विश्व-विभव यहु समटि ततहिं जनु बुकि पङ्क पहन सरूप
वसधि उलूपी नाम सुता तहें रति हतहिं क अर्जुन
वनकासन पर कै बहु आदर अर्जुन कै वैसाय
पहु विधि पूजि पुलकि सकुचित भै वचन कहलि सुतुकाय
आतल अवश बिना अनुमति हम राकि मेमहिं क भाय
धोप अमुच-कत बुच जन दोमधि तजधि न शील स्वभाव
पेरावत - कुल नाम - वंश मे कीरये कुल नाम
पूज्य पिता मम रहधि अनिक यश सुल व्यापित सब ठाम
हम तनिके तनया धी प्रियवर कहय उलूपी नाम
सुयश सुरभि वादत तह अहें विनु हमर मे आभय ठाम
सुनि तिय वचन विलोकि विमल सुवि मन-मत अर्जुन पाज
के नहिं स्तोत कय-राज्य हित तिहुं लोक क साम्राज्य
कहाँ सुरी, सुर-मटी, किन्नरी, गन्धर्वी सुधि पाव
मामय अरु अजेय यत सँ जनु पाताल तुकाय
कहल उलूपी, शील स्वभावहिं लैलहुं सुपुत्र आनि
धर्ममत अवश पुरष ई आशा मन मे राजलि मानि
कृतुमित सता चाइ तह लपटय अवश दीन आधार
पवले पथ वजन मी पावथि नहिं त्यागथि बुधिआर
सुनि अर्जुन कह बिहुंति, मतो के होइ कठिन निवात
चकट कोटि टारि प्रत पाखव सागर जगम अथाह
से तह विधि यश हता उपेखल से कि पुरय पर आश
माणहुं सँ प्रश पाखव जगम ई राखी विप्रवास

कुन जन संग कतहुं दुर कामिनि जौं पर प्रेम क भाव
कलह कोलाहल कोतुक निशि-दिन कहितहुं पार ने पाव
प्रेमी जन पर परम परामर्श पदम सुवश नशि जाय
अनुन कहल हर हर संग्रह जग मे अधिक बलाय
कहलि उलपी, दुष-सुदा हित मत ई के नहिं जान
ते को उचित विचार मन मे त्याग करव थिक जान
हिम अनुजौं निशिपश मधुकर के सरलिन वन सुदि जाय
ती की थान मयूत क प्रेमहिं देखि न दिखल गमाय
रानी रहथु द्वैपदो सम जन हमरा नहिं किछु कोह
दासी के की बर्ष कतहुं हो स्थितिनि सैं कर प्रोह
हमर लालसा एतहि पुराणिय महि रजधानि क काज
कहल उलपी, बहुत कहव की कहितहुं होरख लाज
कहल पार्थ, नहिं अधिक संग मे प्रेमक करी विचार
संशुभ लौक्य के सुख अनु मानिअ जानिअ दुखहिं क भार
ई सुख रहने खन के मानव कही कथा बल छोड़ि
सुनक एत द्विजिया शशि सुल सौं नेहने निज अकोरि
कहल उलपी, सुनल क्षुपानिधि मरहि पक्षर दुर भार
आरत जनक अनश दुख भेटव करव दुष्ट संहार
अपला आर्त धर्म-प्रतिपालक आशहिं अपस वेह
दुष्ट काम सैं भाव कर मोहि वाल निज मर नैह
धुत पिनय सुत वचन कहल हम फेरि कहव की आव
देख दान नहिं फेरि दान हो तकरे अति पकताय
की विधि लिखल बुझल नहिं जारख सोचहिं मन अकुलाय
थिक जीवन तिथ, मन हो यदि खन बी हम प्राण गमाय

सुनि तिय वचन मोग भै अनुभ मन मे करय विचार
बिनु परिचय पुरुष क संग करव प्रेम वचन अयवहार
की बल सौं ई करव परीक्षा नागरि चतुर लयाति
की भारक भारहिं तन त्यागति ममाहिन दुख मानि
कहल उलपी, अयसर पर औ पुरुष संग भै जाय
तकर सुनल कल अवल प्राप्त हो औ विधि दीधि लयाय
से शुभि अरपित तन धन के औ अहं त्यागे कय वेय
हम मरवे भई धर्म जानि तिय-वधहुं क पाप लेय
अनुन मन अनु की मुभदिन की दुर्दिन नुमलो ने जाय
की पातालक नारि बरित ई की कामहिं कोराय
त्यागी सौं तम तेजधि कामिनी गहनहुं सुनी बलाय
धर्म क संकट मे करतय की किछु नहिं ठिक ठहराय
मन मे सोचि जान-कम्या के कहल पार्थ ई, बात
रजनि ममाय साथ के मानू ममत करव हम प्रात
असह विरह सहि दिवस गमायव नहिं पुरु गिलनक आश
धिर चिड़ोह दुख कोना लहप अहं तकरे होरख प्रात
की चातोके डायर जल पीयव जौं स्थाती गिति जाय
की बापनि सहि दिवस वितोने भूखे तब बल जाय
कहल उलपी कुल कामिनि तन अरपि करे निरधार
तन धन मोग पतिक थिक मानै मन दूष पहकवार
जगत जनमि यश धर्मक संग्रह करये उत्तम थीक
सीता सहि-सहि कठिन कष्ट कत देल जगत तिय सोख
दिचली नहिं पड़ि केहनहुं आपद वर प्राणो बल जाय
अतिक धरोहर धरी उचित थिक तिनकहिं दी सुमभाय

युवा यवस धिक वायु वेग सम बाण क दीप मिलाय
मानस मातल सरल तरंगहि शील कुल भस्मिभाय
तैं भन कै रोकथ धिक सभ जन जनन वेग भे जाय
योचि ननुन विधि बलल जनजय कामिनि सतहिं विहाय
पथ पद दैल काह्य छै कामिनि कामहि मूर्चित मेलि
किंकरी - विम्वर वार्ध के सुन मे से कथ दैलि
सरस - परस कामातै कामिनि क जानो सोपित कैल
पार्थक पुलक व्याज सैं हतकन काम जानि जनु गेल
काम घटक कथ घटक वातुरी चट मट दैल मिलाय
परिणय मेम पररपर मै गेल मोद कहल नहिं आप
रहल रमित रऊनी रस रजित भाषय जनय नान
एतवहि सैं भरि जन्मक हेतुक पुरल हमर सोहाग
रमणी रमण रमित रल अम्बुधि कोटिहुं पाए न पाव
तनै बलपी अति आतुरतें विधि के मनहिं मनाय
राधा हरि संग रास रैनि जे पोने छलि पद् मास
तेहनो रमनि होथी हमरा दित कक मम पुरल आय
घर कोयर घर यधु दुइ मिलि करयु मेम व्यवहार
देखक पिऊ की करधि दुखित जन बैसल गंगा द्वार
तभ जन ताकि ताकि सुरसरि दिश बैसल भूगधि माथ
राखल यतन रतन धन दुपने सोचहि भीदधि बाध
कानधि कैथी कैथी भुधि देखधि से से उज्ज उस्तास
क्यो भुधि लिखधि मेठावधि लिखि लिखि जनिका समुनक आय
क्यो कह दुनका दुखितहि बुकि पद् धैलक जनु भरिआर
क्यो कह सजुन कत परिआर क दुन मे करधि संहार

सगुन मिलाय कहल धैरल घन शुभ आशा मन बाहु
कृधि सुखमय मल थल मे सम्पति रमित रंगरस माहु
काक बजन बाता ई भाषल वितय मे ई अचरेखु
शोधहिं सजुन आगम होयत सगुन शुभ ई लेखु
क्यो कह यात्रा समय सगुन पुनु बजहु शुभ कहि दैल
एखनहुं एहन परामय पइनहुं कही सगुन मल भेज
सुनि जनि दशा मन क आकुलते हो विरदास न आय
दिन विपरीतक प्राप्त समय मे शुभो अशुभ वरसाय
सभ जन मिलि सम्पति ई कैलहि गंगहि के गोहराव
जनिक गर्भ मग कुमर हमर कृधि दुनकहि बिनय सुनाइ
सुनि कदलामधि कदलाधल मै होइलिहि अवश सहाय
कुशल सहित पाएइथ कुल कैरव तजनहिं दैलि देखाय
कह "सुनु गंगा सुर - सरिता मै अनिरध - मलि प्रभाव
आवि मेलहुं महि मे मनुज क दित भव-अम्बुधिहि क नाव
अथगाहन पानहि की दुरहु सुमिरन कर'क प्रताप
थमक जमाति जाधि किरि सइजहिं भागी जग जन पाप
सुरसरि शास्त्रु गृहिणी मै कहु भीष्म जनय प्रकटाय
महति कथल मै पुनु अहं गेलहुं अपनहि मय्य समाय
मनु - सुता जगजान जहाँ काँ आगए संग कद बास
करिअ कबार अथम अगणित नित मेदिअ जग मधवास
बहुत काल धरि अहं सजुन केँ राखल अक्का कोर
एतय असह दुख सौं सभ जन काँ चित अति विपति विभोर
आयहुं आयधु हरयु विपति से नहिं तौं माहु प्रमाथ
अहिंक सलिल मे दूबि मरव सभ पाप होयत परिहाम

चहक निद्रिया चेतन दित यदि कंगूरा काक
कण्ड कर्तव्य स्वरदि देलक कामिनी शिर डाक
उचित उदयाचल प्रभाकर ज्योति आर्य प्राण
सुख दैवहिं दुखित चित तिय भूमि पति प्रधान
प्रात उठि अजुन विमलमन पथ समन प्रस्ताव कैले
तुनि उल्लापि क नयन युग लीं अधु-मोती भरि गेले
कह विलसि के ई समानम मान्यहिं कल केरि पाथी
जग जहाँ रहि जहाँ भीवी हम तुहागिनि धरि कदाभी
धे भिया-करकज अजुन मुदित निज अंकहिं समानोल
कहि कथा कल घेरजक तहं विवृति के पुन ई सुनाओल
अधर अमृत मम पंथक पथिक दित पायेन काही
विलखितहुं से कह अपन धन भोग मे के कर मनाही
मेल कथहिं मिलन अगितम पथ पयानहिं पार्थ लागू
किन्तु, तुनि के कह बली, फिरव किछु दुर सख प्राण
माय तह पड़ुं वाय अहं कीं सबहु संगी लीं मिलावय
तजम निज कर्मक प्रभावे पलकरी घर धरहिं आयव
उठल हिलोर घोर गंगा मे लीरहुं उड़लल पानि
जनु तुरसरि हिय मोघ बड़ल अछि पावक कथा अकानि
नासहि ताकि रहथि समस्त दिस ताहि समय ई भेल
पार्थ प्रेमिका सहित प्रमोदहिं उन कीं दर्शन देख

देखि रूपति दुरित दुरि गेल महाभुज मन मान
प्राण पलकल सृतक लन मे लेहन हो तहं भान
कल सभ के कहि सके अछि केहन भाग्य प्रभाव
पथिक भेनहुं पंथ पड़ले लग परलमनि पाव

उल्लपी कहे पार्थ लीं के प्रणाम
बिता नाथ नारी क जीयो अकाम
विधाता मनाओ मे हो चित आन
रहे सर्वदा प्राणनाथक ध्यान

पसन्त बहु वैभवी वदन कम भीमोपवी
अहाँक मन पड़वो ततप नित्यपासी रहौ
बिदोह विशिरान्त ने विदय रूप लीं कलेश के
सहेन रदवे सदा हमहु ध्यान मे लीन भे

कमल बोप के केल इन्हिं हम पूर्ण अहाँ लीं
रुपा सिन्धु पूजोपहार हम देव कहाँ लीं
ई मम जुग सनेल नाथ मन दे अगनायव
अवसर पढ़ने अवसर पढ़र अहाँ लीं फल पायव

जलेक जनु जल मध्य अछि दास अहाँक बनले रहत
जब भल सन अहाँकीं सदा अगम दुर्ग जेभो बहत
कहितहिं भेल उल्लपि अलोपित पथि रंगी निचकार
पार्थ प्रेम प्रण बीच पड़ल सन मन मे करथि विचार
प्रण पूरण पश उठ मन मे छन उपगत प्रिया बिछोह
भुक्ति पद पार्थक चित लगत भेल दुर सुम्यक विन लोह

देखि अजुन अनमनस सभ युक्ति ई मन अनि
प्रात अभिम करक थिक की से कथा देल तानि
सबहुं निजमत प्राण केलहिं तुनल से सभ पार्थ
कदल आगों कलिम सैह विचार थीक यथार्थ

प्रीतमक सुमिरन करथि करथिदुनक हिय स्थान
अजुन के सभ काल मे दुदगत पल नहिं आन !

अष्टम सर्ग

श्रीकृष्णहिं क धै भ्यात् अर्जुन पर्व्यटन पथ धारले
सम जन कथा सुनि नागलोक क अति विचित्र चिन्तारले
बलसाह सभ सुद मग मम ली पथ क कष्ट विस्तारि के
पुत्रु प्रभु प्रण अवश ई निज चित मे निरधारि के
गिरिधर हिमालय पार्श्व पथ ली जाधि तीर्थ उद्देश मे
कत देश - देश क दशा देखधि पार्थ पथिक क भेष मे
कर्तव्य प्राप्त करधि तीर्थ क जतय जे सम्प्राप्त हो
रह चेतना सभ काल चित मे अथ क दश ले न्यात हो
हिमगिरि क पैमस देखि अर्जुन सुगंध अतिशय भै गेला
रहि ठाढ़ि एक टक निरखि शोभा से परम चिस्मित भेला
गुण-गुण ललित की तुंग व्याजहिं भारतक कीरति पटी
की शैलराट पिराट की हिमजूट शोभित सुगंधी
पद जे प्रभात प्रभाकरक क्षिरणी शिखर पर आय के
से ज्योति जगमग जगमगित मै दैदु यैदु जनाय के
गिरिराज मस्तक मुकुट राजित सटित रत्न अनेक से
समकैदु अनुदिल ज्योति अनुपम रंग देखु कतेक से

अति लस रचि कर परसि हिमगिरि गलित भै जे बहिर रहे
से देखि कत अनुमान मन की धवन ई कहयो चहै
ऊनु इन्द्र उर नहिं सुटल गिरि के सतत शंका चित गहै
जे गसन - अन्नम अवलता ली घाम सब तन ली बहै
गिरि सोह ली क-ना कहिर रह अगवरत से देखि के
सम निराशु एकटक मोद मन ली कहल तहँ कौ गेयि के
नम मत्त गगनवर दूख दिगज गगन शुभन चित बहै
लखु गंधवल ली ललित मै मै मद क अनु धारा बहै
कैहरि कतहु नरजै गुहा मे गुज दसा विश मे भरे
प्रतिशुद्ध ततछन मय कदम सवहुँ काँ जे सुनि पड़े
कर तहँ जन जन विविध विध ली पार्थ कहु धीके सही
गिरिधर हिमालय के रहल दधि विमल गिरि ली बतनही
नगपति हिमालय आवि खोटेक विमल दधि मन मानु ई
कल्पान्त भेनहुँ अन्तल पश्के सार्थको कर जानु ई
विधि बीज रहितक धै नरी जगु भट्ट बगिह बचाओले
कहु ई प्रतिष्ठा भुवन भरि मे आन गिरि की पाओले
हिम मुखर क महिमा कहि के नीक थिक मोने रहो
गोरीक सत्र खस्ताल दोसर कोन गिरि पाओल सही
अडि जगत विभुवन मे सवहुँ के घाम पावन घाम ई
सम ज्ञान मे फैलाश शोभित त्रिप - त्रिपास क डाम ई
बलि पथ कमहिं कत गाम मनरो निराशु मोय नितान्त मे
बहु दिवस विनस्त आयि गेला पार्थ मिथिला प्रान्त मे
लखि लखि अनुपम सकल शोभा भेला चिस्मित चित ली
थिक कोन जनपद सुमन पृथ्वि भेद बुझाँक निमित्त ली

पुष्पों के परिवर्ण में परम पटु जे दला निज संग में
 श्रद्धा विचित्र विधि सी चित्तों देश देश प्रसंग में
 से पूजित हैं कति मुद्रित भाषण देश मिथिला भीक ई
 करदह भय कय कय प्रणामो होय आतिथ्य भीक ई
 निज जिनक शीघ्र महान्तल पर गुरु गिरीशक ध्यान हो
 निज जिनक हृदयक पीय कमला धारिणी सुनि जान हो
 निज जिनक पद सुरसरि पलायि पुण्य सुनि बरदायिनी
 कहु पदम मिथिला भदिक महिमा के से कह जनपायिनी
 निज कहि मिथिला मध्य कमला नदी कमला रूप में
 जेमाक आदिभात्र सी अखि प्रेम भूमि अनूप में
 लख कय रहल एहि सार्धको जग धंदला निज नाम के
 ई शार नहिं निज धाम राखि अमण कय बहु ठाम में
 गेनम कपिल मुनि दासकहयो उहु पितु सुरसरि तथा
 मिथिला पवित्रा पुष्पि तप फल अथतह मानु कथा
 एनि पीर मति कत आदि के तहैं तप विरत कल पाविकै
 क. देव से धन तोय कला पूज जगजन आदि के
 रूप जनक मुनि जकर शासन जग विवेक कहाय के
 पुनि शिष्य में राजा पदपुत्र घर प्रतिष्ठा पाय के
 ओ निज बाल क मुन मुकुट दित अम-तम क दितकर भेला
 मिथिला - महीपति कुल क गुण जे अति विशद कहु के भला
 रद शस्य सी परिपूर्ण मिथिला अमपूर्ण सन सदा
 हो पाय धन सुलभुदि सम सी पुरल रह जन सार्धदा
 कमला तरंगनि रूप कमला रशिणी छुनि जाहि के
 कहु कोन चष्ट कहनि व्यापे जगत में जन ताहि के

फल फूल सुत वहु वाटिका घन वनवनो रह राजि के
 तहैं कीर कोकिल पदपादि क मधुर धुनि सी बाजि के
 घर कूप व पी सर - लवागो सरसर समय सोम जे
 तहैं देखि देवयतन बुझि पद देवदू क मन लोभ से
 जहैं पाटला मलशाखा मिथम सी प्रति गाम में
 पुनु यमहाला बरमेहाला बरल दारिण शाय में
 रह तर्क काव्य कला क परिण - मरदलो नहैं तामि सी
 अवि भुवन भरि जत देश तनि हर मुकुट मिथिला मानि सी
 अति शास्त्र सकल पुरान कय रह मान पुनो मनि के
 अखि आगमहू में अति प्रशंसित तोय मिथिला जनि के
 काशी प्रयाग श्रवणिकादि क जगत जे पुण्य क कला
 लोना क मिथिला सी कोना के करत पटसर कहु भला
 मिथिला भदिक महिमा कहि के अकवि जेयो शारदो
 पुनि ब्यास कहि फछि द्वारि रहला गावि गुरु मुनि नारदो
 ओ आदि शक्ति अतादि भगवति आत्मी जहैं धनतक
 से भूदजो सुर - वादनीया थिक कते बरजन कर
 सुनि कहल अर्जुन दुक्त इस से पात कहतहुं देश ई
 जीवन अमन कृतकृत्य मानी देखि मिथिला देश ई
 पय कहि जहैं जे तीर्थ पायी तकर कसंभो करी
 जग परम पुण्यद देश मिथिला में विचरि मोहो भरी
 पुहु अर्जुनो पथ प्रपन्न तोयक कथ सम करदत होला
 यदि भौति कत दिन मध्य सम जग कोशिकी तट में पला
 जे देशविद् कहलैह मिथिला पुण्य-लोमा भीक ई
 तैं गंधिराज क आश्रमहिं में निशि बसी से नीक ई

नम आधि आधम मुनि सयधूँ सँग निरत निशि सतलक्ष मे
नहँ कथा कम गों गुण क गगना चलल छपण प्रसंग मे
तेँ पार्थ उर उठेग उठ भट मिली मित्रहिँ जाय के
रहु ताहि तर्हिहिँ निम्न वश मय गेल ऐनि विशय के
निशि ज्ञान के पुत्र प्राप्त भेने कोशिकी संगप जहाँ
चलताह सोःकगहिँ सयधूँ मिलि कथ्य अमगानन तहाँ
गंगा नदी सौ कोशिकी मिलि भेन धल पुण्यव महा
पम शय के कृत कथ्य सै रहु तीर्थ संगम मे नहा
कहु पार्थ घटुनो दि म दीनक छपण पार्थन गेल ने
मन हमर भक्त गालन दिन अनि अयकगो भय गेल ने
विनु हूँ ह भितने हाथ दिन रह समन अनि अकुलाय के
सै ठारवा भनि अवश चनि हम मिलव यइ हरपाय के
हम यहु सोता, जइ कहू कना, पुन जानि अथ ने साधना
आगा गनन विगहिँ भिषमल कहल सभ जायय कोना
ई भंग छोड़व दुख बुझे छी विशय भै विनती करी
न प्रभु उचिन अनुमान अहँ दो दुख गहिँ मन से श्री
सगो हाथपुटन मिलन मित्र क दूहु क गुण अनुमान के
शायक क अयरा दोष अनि पुनि प्रज्ञा क हिन छान के
सैतहिँ विशा अहुँ न भिषेःहहिँ बहून जोभिन भय गेला
विदुषन विकलता यस्त सै से स्वगत ई वजहत भेला
हा ' दैव व दग भवन छुटल हाव सभ संगी कहाँ
सभ एक पलाट छुटल ससमति प्राण हम भेलहुँ कहाँ
हा ' जाइ भयना आर कत हम छलहुँ कः पहिँ काल की
सवि कर्म - तनुहिँ जाल मवरा यकि गेलहुँ अंजान की

एकर एखन जीवन अपन मन मध्य मुक्ति एह आर उ
एकर कहु काटव कोना पथ गहन वन संसार ई
एकर लक्ष्य संसार भंभट धुसो संकट देखि के
हम धाकि के हिय हारि घेनी मन अमगमय गेलि के
अनि भूमि अक्षित मन नृगन्ता सन विफल बोध कराव ई
धिस भी पड़ल अंजाल मे छी आय मन से भाव ई
ई धोक निरुल भण क पातय त्यागने भल मन शुनी
सै एकल गुण परिभाष हेतु क नोक धीक चनी बनी
कत उठय अनुवन उदधि यिन मे लहरि चिन्ता भावन
मन झाल जगमग पड़ि पुरैनि क पात पर जल हो जेना
तहँ मूनि दग मन मुनि सुभे पार्थ तनमन सोध मे
प्रण पथ पयान क त्याग सौ मन पड़ल जन सद्बोध मे
अनि छिन की कायर कहत जग बड़ अयश भय जायते
पार्थ क प्रतिष्ठा जगत जाहिर अयश आय नशायते
धिय सुयश प्राणहुँ सौ पुरुष की धनी ताहि बचाय के
उरहाय धारि - एत सुतव धिक बहि मरण सौ दुख वायके
कहु धोर केँ की उचित धिक ई जगत - छाहय सौ डगी
निम प्राण पण ई प्राण पालन पुरुष भै करवे करी
मग जीवि केँ पुरुषार्थ त्यागय गम कायरता कही
तेँ हो वर कतघो परमय त्याग पथ नहिँ गही
मुनि विविध दुख निवृत्त कतिशय परम पुरुषार्थ कहु
मम मन लगन विद्वेध - दुख सौ भी किछे कालर नहु
गर कर्म वश सौ अवि जग मे कर्म वश चल जायने
संगी स्वदीनर सुदय की धिक भेद ई छुटि जायने

पर देह छुटने पर यश अथवा दुःख के रोग जग रहि जाय तें
पुन पुन नै पुनार्थ भ्याय उचित चित नै युक्तय तें
परि क्षणिक जीवन नै कदापि दुःख कर्म नै के बली
युग युग जरत नुमन न्यापे जगल मय गली गली
तें वज्रय तन लीं काय के वडि मय क पथ पुन धेल ओ
चलत रह एकर सुख रुपे भेय पथिक क कैल ओ
ई इन्द्रय-वृष क खडोवर चिकथि से जग जान के
जें भद्रम भीतर अमल छवि रह मानु तकर समान से
अति पदुचु पथ क्रम पार्थ मणिपुर देस अनुपम देति के
नरनारिह के सौन्दर्य लजि लजि रहयि अनुपम लेखि के
रणिपुर जनि मणि पूर पूरित मणिमे मन्त्रि जतै
नरपत निरह विथ मणि रूपये चित्र-भावन नृ ततै
तहँ मारि मे मणिवर जंगुडी छप-सुता विमलदा
न के मे सहजहिँ दय जौ ओ मयन-गोचर हो कदा
आ नृ निशा सुव चर्चाय साधहिँ नृमिजा दुति देखि के
अति पुलिना उगु मानु पुर जन मनहिँ अजगुत लेखि के
मनि नृप-सुता-सौन्दर्य-भर्वा कौमुदी अनुन मेला
से पथिक रूपहिँ रजय पर पर्यटन रत सख मोहा
जनु विधि विधान क प्रगहिँ लीं सीय पर दग देल से
नहँ निरखि प्रमदा छदि अनुपम टमटकी लजि नोल जे
पार्थ बिजु उन सुध मे पुन रूपक कहु वित लाय के
को अ वि परनहिँ सीय पर अति मयु कलक मेढाय के
की अमति शशा विधि प्रयत्नहिँ रखत मारि क अप ई
की अपन मिरिजा अतएति छवि धारि रूप अनुप ई

तहँ शशिक समुद्र भेनहुँ ससिज मुख मरिन तहिँ मेला जे
नय भाय जल युग मोन जोड़ी उदति पदु विधि सेल लीं
तहँ मोग-केतु तकर उदय लज भय गति कैल से
यम अरुगहिँ अति सुपल मीनक सह भिन्न सुदि नोल जे
मन-कमल कलुपिन अति थिछोहे नोल ओ कुमिलाय के
ओ शशि क दिय सरसिज थिछोहे रह अधिक दुख पाय के
विपरीत गति लजि जगल जन मन कदुमो सन मयमे
ई जिया कौशल रम्यजालिक काम अय रह जानवे
सुरा काम कलाल अनुपम बाज अपक मरि भरि लसाथे
मदन घट, घट घटी गटिका दर द्विगुन दन युन पदावे
के देल की लीं की कलक मे कलक कलक लसाय के
जे नोग आनक आज मति गति लकल सुधि विमलारय के
चित्रकला क चरित्र भितकन अति विचित्र देखि के
चित विमलरहिँ रह दहित लजि मयन नहिँ परेकिने
ई रोग थिक या शोक की कहु मूत प्रेन प्रमल ई
की कहु केजो देखि ने होना मनहु नहिँ विषु आय ई
सुनि लजि क अनुपम विमल वन ओ कहक हित उलुक मेला
मन मजुपहिँ जे विकलता छल सोलता पर मे रोना
किहु कही की या नहिँ कही ई चित दुविधा धारले
जा कहु पुराई सम समोरथ लीं पदय निरधारले
की कहु लली ! नहिँ सुनि पदु अलि की कोना मे गेल ई
दिन जैन नहिँ निशि नैन निन्दी विसमि जनु देल की
जें दग पदल पथ मे अधिक पर मोहि दग लजि लेल से
वस एक दिनक सैन लीं कल के करसता नोल से

में में चकोरी लीख जिह्मकी सतत वैली आय के
की होयल ओ मुजशशि ने पुन दग-गध निरखु अकुलाय के
कः की ने जीवन आय पूरत हे लगी । समुभाय के
कद कर अवश से दल विकलय मन कुमुद हरपाय के
मुनि सोचि सखि मन मध्य सुभल धीक मदन क काज ई
यल युक्ति पई अछि सुप्त गित मे धानि बेलक राज ई
से भर्म मई जाने कुमारी यथ - युवा भवान मे
थिक श्रीगणेश मातु निश्चय विपम सर सम्भान मे
सखि चिहुँधि कहु सुनु राज-दुहिता सोन मन नहिं आसये
ओहि पथिक सौ पुन दश पायव सुलभ सन के जानये
लखि नद-कमल मधु ललित मधुकर कतहुँ ओ बिसराओते
पुनु सौ चकोर बिलोकु जम्हा सौ कि नयन दुराओते
रहि रहि छनहि छन अर्जुन केँ छप मग पवि जाय को
पुनु सैन सैन क मिलन दिय सुधि दैछ छन दहल-य का
छन आस आत्मक विजय सौ अनु चित यथ मे नेत्र जेँ
पुनु पानि दधखर सर अलायक याम-तरंग मेल सै
पुनि माय मन पवि जाय ककरो शोभ गत्य बधाइ गो
पुनु मन पई मुख शशि चिन्मिदक नयन कोर कडाइ ओ
मे नि य कहुँन मन अवन पुन चाह वरचन आव जेँ
हुँ जा निरन रह पार्थ सय सन सैन छन नहिं पाव सै
थिक केरि देगन उचित अहि ई भाव मन मे जान जौ
सौ अधम कहुँन सकगो चाह चित पकटाव सौ
सै हृदय जेताई जान समथ दुह छद मवाओले
लखि केँ परवर अन्त मे तहँ रूपके जय पाओले

कहु मदन मर नहिं ककर मरदल बात अछि प्रकयात ई
हरि हर विरजि अयोशअहुँ पर कद सकल आघात ई
सै पार्थ प्रीद-प्रतिज्ञ पदला लकर यश मे मानि ली
अद्भुत नयन-शर एक ललितहिं पुन विदुत दिय जानि ली
तहँ कोर मन केँ केरि सोखल निज दशा अवधारि के
हा । पड़ी पद पद पर अजहिं आयु कहुँन हारि के
यल थीक दुर्बलता क कारण यैह मन माने पड़े
अत आरि मारि उदयि धरवल आहि मम दुर्गति करे
तहँ नगर बार चलाक थपु दिश चहु खंयल दै रहै
से व्यक्ति व्यक्ति क रहन-सहनो निरखि तर्कहि मे वदै
लखि के भवागत नगर भरमे सतत के कहे थीक ई
सै ली पकर परिचय अवश से दिय विचारल नीक ई
चलि बिहल चारो चातुरी सौ पृथि प्रश्न अनूप केँ
कहि देल नृपदुहिता क्रिया सभ पहुँचि गुप्तहिं भूष केँ
सललाह अन्तःपुर गुरन्तहिं सुध सीने धारि के
कहि देल रानी केँ कथा सभ युक्ति योग्य विचारि के
पुनि सुगति निज बुल शप सुनिग्रय बहृत मन अनुमानि के
अभिलाष दूरक हेतु विधिवश पार्थ आगम जानि के
छडे मात दूत पठाव अहुँन केँ वजाओल आदरे
शुभ स्वागतक विन्यास केँ है उच्च आसन सावरे
अलि नल मे पुन विनय-गुन ई वचन भूष उचारले
बड़ भाग्य थिक हमरहु नगर मे भ्रमहु निज पद धारले
अपने कते, कत हम अकिंचन रत्न कायहि सन गुन
कहँ अकयती कुल-कमल कहँ सुत्र काजी की सुन

पुनः वदन्तु सततकर करतव्य भिन्न महाने मानि के
लाने गन्धर्वहिं मे लपकाकर - रूप भूलल जानि के
ले वस्तु मन मे मानि उत्तम विनय - युत अपराध करी
स्वीकार जी नहि होय लीं मन कोमहिं फ डर लीं डरी
भर्जन प्रकल, नृपथर । अहाँ अनि वुल की ई जानि के
तैं थिकहुं सब विधि पूज्य लभ जन चित्त मे अनुमानि के
सुनि सुनि वचन ई मज्जता - युत अवयव मन अवधारते
पामर हयत भासिथय अवलोक फाय नहिं स्वीकारते
आचार कर्तुन हेतु वसत उपयत क विषय वेत ले
रह लागि लतिका क्रमाहं फूलो खजिल लभ विधि भेल जे
मने लक्षण क विन्यास यहु विधि रहै प्रस्तुत भाम मे
दृष्ट राखु शुभ स दुष्ट निविदिन तनिक लभ आराम मे
कल भेल शिष्टाचार दुष्ट कल लखन भूप उचारते
बुद्धि होयल कलकल दुमध से कहि आपन भवन सिधारते
गस्ताव परिणय पार्थ सनमुख कर'क युक्ति अपार मे
निद्रि-दिन निरल नरपति क मन रह विविध बल विचार मे
कह पार्थ अनुखन विविध सुननुन डठहिं मन मे गेल की
विधि, नारि-रूप अनूप रूपक मलता भरि वेत की
कहु के कहि कान्ति क करसमा असुर सुर गन्धर्व की
विधि धीर ईश अवीश मुभिहुं क हल नहिं ओ गर्व की
कर-यष्टिका कर्पाहिं सुता धै लमे एक दिन आवि के
यम - पाश काशहिं मज्ज कर्कश फण्ड श्वालो दावि के
नरपति वहुत विधि विनय वण कहु दोष कष्ट उचारि के
रहु पार्थ नृपतनया परस्पर निरल सुविधा धारि के

एग दोह दुष्ट विन लीं दुष्ट विधि जाम किरि किरि भाव ल
जैं पाल पावन पांजनो पुनः पेलि पेलि प्रकाश से
चित्त चाह चिन्हलहिं लीं वदैं दग मिलनहित लनपाय जैं
तहैं लाज मुदजन पाथ की पुंभ लकुनि कैं रहि जाय तैं
नृप कहु "कहय की वृद्धा-वय भेल अवय शरीर ई
तैं शिर झुले, कर कापि थगधर, पैर पद मंदि धीर ई
जनु काल काल क निरल बुक्ति के रोम रोमो डरि रहै
यमदूत दधि तन तोम लम जे कभहिं दगधुति डरि रहै
हा । एक ई कवलस्य मष्टी पालिका मम जामवे
नहिं भेक पुनः सन्तान दोरय शाय वय मन मानवे
लुन लुन भवै विन्या क उवाला यम नरक लण जायते
भिक आति मे भलि की कहे लो दोष लामे होयते
अछि शोच माहक प्रसित चित्त मम सुनु विनय वर पार्थ नैं
पुनि मुक्ति हेतुक युक्ति अपने क हाव भाव यथार्थ जैं
उच्चार अर्जुन अवय करता कहल सुनिपर पूर्व जे
तैं पार्थ पाथल नयन अहुजन वेत दृष्ट कपूर्व से
थिक कृष्ण क अभिलाष पूरव धर्म ई मन मानि के
पुनः आतं जगहुं क आति नाशय मत हमर लिख जानि के
नृप साध की अछि उमर से लीं वदित्त चित्त रुदाय के
कह पार्थ वरा जी होयत लीं भुव देव दुष्ट छोड़ाव के
अछि साध अपनहिं लीं सुपति वर तैं पुनः पुन कहि रही
जी कीनकहुं कहि देव गहिं लीं नहिं रहत जीवन कही
तैं लालसा सकोच सम्प्रति दिवहिं छष्ट मचाय लीं
मन भाव भाव कंठम मय केरि किरि - किरि भाव तैं

पुनः पुनः धिनय वच इत नै करि थीक मोहि लपारये
हम नय पनय नहिं हटहुं हटये पार्थ कहू मन लपारये
पहुं नुनल शर की यदुरि आन यवनहु क गति जानु ई
धिक पार्थ भाषण लोक पावन अमिट मन कै मानु ई
धिक पुष्टय मै निज वचन पालव परम कर्तव्ये शुनू
जग थीक पुरुषाभास से मन जै प्रण क त्यागी सुनू
कहू पार्थ वचन क पालवे हित पड़ल छो दुख-भार मे
जै पार्थ क कुल प्रणमनी तै कयात ई संसार मे
कहू भूप वड जन वचन पालथि सहथि कष्ट अनेक जे
दण पालथा प्रति माण पण धर अष्टही क विवेक जे
सहि सेनु यवन दुख खरित - पति अगम नाम नशाओने
जै राम सी निज वचन हारल अयश ताहि पुराओले
कहू पार्थ मम प्रण विवश मानी जै मनहिं सतमत करो
दण प्राण मन मे आरि सपनहुं प्रण विषय पद नहिं धरो
संकोच सब तेनि कहु कहू नृप हो विपति उबार ती
नर जन्म जीवन सकल मानी कै सकी उपकार जी
हा ! हा !! मे हमरा पिण्डदाता केओ जल - दाता मे हा
हा ! हा !! बुझो जग शून्य नृप कहू केओ रत्नक पछि मे हा
वहि गेल अचिरल धार अधूक कण्ट रहो मेल हा
तै आन जे किछु कहू क बल से मनहिं मे रहि गेल हा
सुनि आनि युत स्पाकुल वचन नशपति वशा कै देखि कै
धामतु विमल बुझी दानी दीन जन जनु गेलि कै
प्रण कै कहल जै पियश अजुन परम कष्टागार जे
एक कोण क प्रति नम्रता विनु बात सब स्वीकार से

ई पार्थ - वचन सुनि कहल भूप
प्रत - कृत्य पावि प्रण वच अनूप
ई रण - कव कन्या कुमारि
मम मनन स्मृति अनिशय सुनारि
से करी दान अपनेक हाथ
अभिलाष हमर कर पूर्ति पार्थ
तनु तनय हेनु प्रण एक यह
हमरा परोक्ष भूप कोषु सैह
अति भूत अपक अभिलाष जानि
कै किथा अयश ई लीज मानि
किछु पनै अवधि दिन से विताय
विधि देधु सुता-सुत सुख देखाय

पार्थ मै राग भुग्न भूप क नियम सुनि कित भावि
की करी की नहिं करी ई पड़ल दुविधा आनि
हारि प्रण सी हटय पार्थ क हित कलमनय भेल
वचन - जालहिं वमल मीन क दृष्टा जन मै गेल

गहि मीन नगवि अजुनी अवधि दिन भारी
कहि देल नृपति लीं विवश वचन निज हारी
हम वर्य तीन धरि रहन एतै लिख मानी
विधि पुरधु आश तहिं पुरधु चलन भुव जानी

वचन सुनि कै नृपति गद्गद बलानू
हमर जीवन सकल मै गेल जानू
करथि उरगाइ लीं परिणय विधानो
नगर मे मोड़ मनु करतव्य महागो

नृपति-महिषी के दर्पक की ठेकाना
मगन मन भव लुटावधि ओ खजाना
विविध विधिकर विधिवन विधि पुराणे
मुद्रित पुरनारि संगल भीत भावै

आनन्द घरघर सगर हरि मे देखि पड़ बहु छोद
रनिवास उमड़न मुद-ममुद्रे नाच गान क सोद
शुभ लग्न धुमि के हरविनरवति वाम कथा देल
के पुष्प पुष्प के जमाता जगत मे दश लेख

जग गव विवाहित घर क कोवर मध्य जे सतमान हो
ले ज्ञान जे जग भुक्त भो-ी लखल सुखहि के घान हो
नवनारि अष्ट विनोद वखनाहे विष्टल मोद महाम हो
निज गान हो मुख घान हो लहे भिन्न लभ एक प्रान हो

योगनक शतरंज रत रहु पुष्प नारि खेलादि
मान महापति के अट्टाक्षक सभित लह खेल नारि
मुद्रि भूति किशोरी पद्मनिक नालि अर्थ विचारि
पूँक वदनहुँ भेल जाण ने मातु जगल हारि

जे प्रथम दर्शन समय वेद क बीज रोपन नील
मुद्रित सन्निध सिध्दत प्रभावे पल्लवित ले भेल
अनुराजहि कुसुमक विकास क बीज भल दरशाय
विधि अवश अभिमत कल प्रणट के देख दिव्य हरपाय

रस परिहास रमित रहि भिंशि दिन सुखमय समय वितार
मय-मेहक नद अवगाहन मे दृगति अति सुख पाउ
रत जे हृदय लालसा सवधिक ले विधि आनि पुराठ
मेन क रग मसोहर कम-कम भाकी प्रणट लगार

अनमन हल मग लल आलस - मन लवन ज्योति किहु आन
रुचि अरुचि भोजन मे छन छन सगवर पयहि पयान
माटि अरुण मन अरुण बिलोकन सौ अतिशय उरसाह
शुपतनया लललत चित सभ जान दोहद खमय निवाह
रानी ले फूल माला हिमनिर्मितनया पूजि केँ भक्ति भावै
बागो बीनारै दुखे कहि कहि रत मे वल हाथेँ सुतावे
जानी कर । मर्म नारी बिनु सुत विपला देख ई तेँ छोड़ानी
पुथी केँ पुत्र पावी अदश कर कृपा मागु थागा पुरावी

शुभ समय समप्रसन्न भेने जन्म बालक लेल
नृपति घर आनन्द अमृधि उज्ज्वलित भै गेल
भेल आतक-कर्म वाचक जग क पूरक काम
वारहम दिन देखे वतन 'बभ्रु दाहन' नाम

कहु बाधै कटल कट आनी
नृप विनय हमर लिख मागी
प्रण जहँ क पूर्णि विधि कैले
दिन बहुत बाध विधि रोले

इस निज मण शेष पुरावी
तेँ वामन क अनुमति पावी
सुर रंगल बेधु विधात
शिव सकल मनोरथ दाता

भेइ अनुनय विनय बहु विधि ले कहल नहिँ जाय
दुकी दुहिता लनय दुहुकेँ त्यागि जायि जमाय
बहुत दुख रनिवास मे रानी क हिय अति खोम
रहि जायि गौँ मे घर जमेया वेद मन मे लोम

जनि मृचल शोक-समुद्र मे खुनि पिय-गान चित्राङ्गदा
विधिया विधान विचित्र लणु सुखदायको हो दुःखदा
जग नाचे जीवन मरुतन मानै फंक निज पति लासि के
हा' जन्म संगिनि जनि के भेलहुँ से निजुर खुल्यापिके

सखी वेल मिलाय दम्पति विरचि कै किछु साथ
पायि दर्शन मिया बनात ठाढ़ि रहु कत-साथ
कहु मिलखि हा साथ । होयब हम बनाथा तुल
आइ सौं अहिवाल यूभव बन क मासति फूल
परसन मन रहि परसन मै रहु परसन न हा
दरसन खुदइत हिय गति होयत दरसन हा
बरस नयन युग अनुकूल पाषस बरसन हा
तरसन न पुन हिय पिय किसे भेलहुँ इतर सन हा

भेलि फंक फंकए कर विगलित मलित ललित तनु गात
झलि मगुइत युग सहि सुखदहि सनि कैल थिरइ उतपात
घचन सरस खुनि दरसन लामे मिलन मिलन अवकंत
कामय कान धरय नहिँ हित घच बचत न जीवन तंत

यदपि नयन मेह क प्रकल नेगहिँ बिल नहिँ धोर ।
तदपि पार्थ वरिषोद हित कथा कहल गम्भीर ॥
अपराधि न सुख लण मानै ई जग के नहिँ जान ।
वतिक - वीर गाथा गायन केँ अहिवाते मन मान ॥
पायि पुन पुन चाह जिस की मन मे कक विचार
लीकिक बौवक दुइ भागै सौं तुहु पाओल मिस्तार
सुनि मिथतम समदाइ कहलि बिलखि चित्राङ्गदा
नय विश्लेष विपाद ई असल अति माणवति

हे जीवन बल्लभ सडगर सन मन रंजन पिक प्रियकर !
की असदय उकि उचित विचारिक, करव पतर मनु नगभइ
हे मन सुमनक मधु मधु तोलुय ! ली की नजि नयन पर
मान शीत आत्म्य कोन के रमखो भेल अकचिपर
सजिनि ! मान मान जीवन जग माएहुँ सौं पिय भारी
फन अकुन तकरे रक्षा : हित हित पुनि सजिनि दियारी
सहदर्मिणि के पति गति राखै धर्म्य नारि जग मागी
पुनु पुनु धन पुनु प्रतिपालन प्रण प्रकथिनि ! हठकै खाती

अथिरल अथ मराड
मौन मौन हरमति मिया
मन कठोर चय नड
हारि कलल तजि नय मिया

जे बलि केवाइ धरि भेलि ठाढ़ि
चिनुय थिरइ - नद बकल बाहि
कर कटि रोष बहि मोर - धार
तेँ पोछि पुन पुन पिय निदर

कल उठय भाष मन बोधि दीय
फिर मिग कलक कुल जालि नीज
कुलधनु क हेतु सुख - जन क लाज
कर प्रेम - पंध सदरा क काम

प्रिय मन बिछोइ अपरोध गरा
तेँ बोधि लोम सौं मुख निरा
चित्राङ्गदा क उपाकुल सभय
के कहत उचित रहि आइ चून

धीरूपैक कृपावलम्ब्य चित मे वीभासु राखू सदा
भेलो ने कल वर्ष सौ मिलन सैं चिन्ता कुदै सर्वदा
मित्रे सौ मिलवाक हेतु सदसा बाधै मनोहेग अ
खंसारी मुख सौख्य त्यागि स्वरिते प्रस्थान के दल सैं

नवमं सर्ग

धी हरि क के लेल मन मे प्रार्थना
हुन प्रिया, लुन प्रथ क हो पुनु भावना
पार्थ प्रीतिहिँ निरल गल पथ देखि ली
गमन गति सैं मन क गति केँ देखि ली
मन भभल रमणी क सुधि . मनुजाल मे
विसरितहु नहिँ विसरि सक पड़ि कास मे
पिनु मने तन अन्य खन के लेखये
अरुम से कर्तव्य कर्मोहिँ देखये
प्रिय गमनहिँ पदहिँ किहु आघात हो
अवश मरहुँ क लक्षण भ्रम दिवु सात हो
खलि बलितहुँ फेरि हुनकर पति केना
लाग लखर पटित पाठहुँ मे केना
जहनि पौनर प्राप्त मेमोज्ञान मे
विसरि रीर प्रकण्ड दाह नितान्त मे
हो विपासा ताप सौ पीड़ित जहाँ
प्रपथ पथ पर देखि पथ पीवधि तहाँ

॥ यन्त्रि कर्तुं मान मोन यथा मे
 को जलकुं वस दूहि की पुन मान मे
 पुन कथ आहार की उषय मे हो
 प्राणिक प्रविष्ट धा आमान हो
 निरु मता दार्पे नु मरि मोर हा !
 मान मायिनि मान हृदय मो हा
 ध्या वेय मानाज सम पुष्टि रेल ल
 मान शकक जमर ला सम लेख हा !
 कला - कोर्पे मान मे दृष्टा रहे
 पुन मरि प्रयोज वन यथा मरि
 प्रकाश वर हार कर क पुन निरुति मे
 लत योर्पे मान यन फल धारि ले
 रेल पुष्टि पुन ब यि लीये जेय मे
 पुन - पुन - पुन परिक क मन मे
 पुन प्रकाश वर हार प्रयोज हो
 मरि वर निरुति लोहल मान हो
 रेल लीये क मान पुन पाथेल प्रदी
 धार पुन मन मान हविष मेत लदी
 लीये निरुति प्रकाश लेदि पथ ली यली
 क रेलहि सुधित रालि गमय ली
 पुन क मो ! एक लर द्वाह मे
 पुन रेल प्रविष्ट पुन प्रकाश मे
 पुन चयु पाथे मरि ली क लदी
 पुन रेल प्रविष्ट पुन प्रकाश मे

कहल उरि एका पुन वय धीतल कर्त
 शक क फल न मरुत पुन कोर्पे वरी
 जीय जत पथ विहन प्रविष्ट पदि प्राणा मे
 मरण पुन मे पतिष्ठ मान प्रकाश मे
 रेल मरुत लीये रेल प्रकाश मे
 एक प्रकाश शक द्वाह रेल प्रकाश मे
 प्राणि प्राह निवास लदी क रेल की
 पृष्ठ मन के हल सग लीये रेल मे
 पति विनु रेलि प्राण रेलि मानि क
 भूय के मोदराट करतय मानि क
 केल मरि वर हार नरपति लीये रेल
 पुन पुन मे रेल सम के मानि रेल
 रेलि रेलि लीये प्रविष्ट प्रकाश मे
 लत प्रकाश वर हार रेलि प्रकाश मे
 मरि मरि विनु रेलि कलि मरि लीये
 प्राण की कर्तय सपु विपाठ रेल
 के प्रयो उरि के प्रकाश वर हार मे
 रेल लीये कर क विन रेलि मान मे
 रेल लीये कर युक्ति लीये रेलि
 पुन समुद्रक रेलि लीये मान प्रकाश मे
 शपर प्रकाश वर हार रेलि प्रकाश मे
 रेलि रेलि मरुत लर कर रेलि मे
 लदी प्रकाश वर हार रेलि प्रकाश मे
 पुन प्रकाश वर हार रेलि प्रकाश मे

प्रजा घन मे भूप के भी लोभ हो
 खुनि सोदित ताहि किछु की लोभ हो
 निह गहि गन मोय मोहित चाम जे
 कुहरनहुँ की दया किछु जर ताव से
 राज्य तद्वर भूल रैयति मानवे
 मरपति क बल मुख्य रैयति जानवे
 करय भी विद्रोह रैयति जानि ली
 भूष खरक भूष कवे मानि ली
 युवा-जोशहिं युवक एक कठि भावले
 श्रुते गहिं जाल किछु मन राखले
 व्यर्थ सूरति आश सभजन मन धरी
 युवक मे कहूँ खरहुँ मिलि पौरव करी
 प्रजा सी कर कर भूपो लेखि जे
 उचित थिक दुख प्रजा गन मति बेचि से
 नृप विमुख कस्यव बुझि कर मग्नता
 कर ने दी सभ मिलि करो ई मग्नता
 जे प्रजा युव दलन मे लहिं दल हो
 जे रणक्षेत्र मे मे कहुँ समक हो
 जे मे भावै आर्तजन चिन्कार मे
 कहक क्षत्री सूरति से धिक्कार ते
 सजिगहुँ मे शौर्य मे गेल हास जे
 तेजस मन सी क्षाम धर्म क भास ते
 कहक क्षत्री करयि कायर काज के
 थिक कहकित करय जाति समाज के

लाङ्घना निज जाति सुनिहहिं कान सी
 पार्थ भुक्ती कुटिल चवि नेल शान सी
 मनहिं कहु ई डीठ साहस कैल की
 पथहुँ आदि गिर मारि पाथर देल ई
 सून पुनक क सोर गज्जन गज्जना
 पार्थ क्षतिशय कुम्भ सोखिहि दुर्मना
 जाति लाङ्घन सून जे युव मे रहे
 धीक कायर पुरुष जग मे खम कहे
 सया बोधहिं पार्थ कठि बखारले
 मोध-युव युव-जनहिं कहि ललकारले
 आव जनु किछु बाजु मानू बाद ई
 जाति लाङ्घन असह युक्त आघात ई
 सुद गोहि चिन्ता दित पुर्वज कहो
 धीर क्षत्री हेतु उचित ने सहिरही
 महिं समझा-बखन के धीरो सहे
 वीरता द्रव्याय सतर वै रहे
 बल पक्षहिं पंच तीर्थों जायवे
 भसि सरोवर एकदि गोहि नशापवे
 तीर्थहुँ क बखार कीर्ति कमायवे
 कुल मर्यक कहक भोय मेदापवे
 सयहुँ पार्थक जयन सुनि चिन्मिद भेला
 के अपरिचित धीर ई उपगत भला
 पुष्टि परिचय पार्थ के चिन्ह लेल जे
 होयत दुख बखार चित दह भेल ते

मुनि क हेतु क धर्म थीक यथार्थ तै
विनय अतिथि क मानि कहलनि पार्थ के
जडावथी - पान - संन्यासी कही
अथेउ सम सौ अवश मानव थीक गृहो
जगत यन्त्र क भ्रमण गृहिकत मानवे
गृही क्षुधि आधार कन क जानवे
थीक प्राणो अन्नमय कह वेद जै
प्राणवायक प्रहा गृहि मे भेद ने
कर्म-वेमे थीक जग भूति कहि रहै
कर्म बीज क रूप कर्म क फल गहि
कर्म दंडक कर्म यल नाशे सहो
कर्म कर्म थीक मनुज क हित कही
जीवि जग ई भाव द्विय सबभन धरी
अल प्रवचिक पंच मे महिपे पकी
गृहि क जे कर्त्तव्य से अपने सुनू
ई समाजहिं अनि के मत मे गुनू
तनपुरुषहि क भाव तै समखन धरी
बहुजोही- युव रहैक यत्नो करी
कर्मधारय बिषय नित चिन्तित रहो
अपवर्ग मे भाव अण्यथि सहो
गृह यन्त्र क बीज मे महिं स्थापत हो
धर्म धन यल द्विगु द्विलोको प्राप्त हो
गहन भावहिं घर क काज बलाव मे
धन्य तर दर जगत मे यश पाव से

मरण - जीवन दुःख - सुख विन - राति मे
द्वेष गति ई जगत साधक आति मे
मध्य भागै गृही हेतु क सीक जै
अति करव सर्वत्र त्यागव थीक तै
पार्थ पुत्र पुत्र पंचसीधो अक्षि कनै
दुषितो भय गेल से सुनलहुं एनै
करी इच्छा प्राप्त उठि तहें जायवे
दोष गुरि कै अपन यवन पुराणवे
कहल मुनि पुनि लगहि मे अक्षि तीर्थ से
थीक आयव ततै ब्रह्म स्वर्थ जे
धर्म मय युत विषय ई अहं सनि हो
पुण्य प्राण विचारि कै पथ मे चलो
पीलमोकारव कुम्भज भाव जे
भरद्वाजक कैल पारिम ठाम से
पौषमी सीरध साजल मानवे
पंचसर कह नाम जग ई जानवे
कश्यप-मेघ क पुरण हो अवगाहने
तीर्थ उत्तम थीक शास्त्र निगहने
अक्षि महात्म विशेष कहको थीक ई
बहुत तीर्थ क मध्य अक्षि अति नोक ई
आदिके तहें प्राद लोकक बात जे
ततै जल हित गमन केनहुं प्राप्त से
प्राणु मरम जन ताहि प्राप्त अण्ये मे
मवल हाहाकार एहि प्रदेश मे

लोचु मन मे पार्थ एहि धन की करो
जुद्ध गोहि क उरहुँ सौं की हम करी
यद्य उरपी कहल से अजमायवे
गोहि इति उदारि सर यश पायवे
कहल पुति पुनि पदम मति नहिँ करी
ओ अवर जल जगु सौं जिय मे उरी
यली जलचर धीक जल मे जानये
तैं उचित थिक युकि आने ठानये
प्राण - रक्षा मुख्य करनच मानि ली
धर्म कर्म क हेतु मरनन जानि ली
शास्त्र - सम्मत धीक ई मन मे धरी
धर्म हित नहिँ प्राण संकट मे करी
पार्थ कहु, दग जन क आरति देखि के
कर'क थिक पुत्रपार्थ प्राण उपेक्षि के
प्राण बाँचो जौं रहै ई धकधकी
तीं कदापि महान कर्म ने के सकी
ऋषि वृषीषि शरीर सुर हित देख जे
कीर्ति कीर्तन आइ भरि जग भेल तैं
करी नहिँ उदार जौं एहि धाम के
अथश थिक धिक्कार पार्थ क नाम के
जौं समाजक कष्ट छुनि सुप्ते रही
कायरे जग बापु वड़ अयशो रही
योवता विनु पीर नास धरायवे
मानु मादि क तिह सन दखायवे

भेन भाव निशीथ उचिते धीक तैं
स्वस्थ खती, पयन मुनि कहु धीक जैं
निरत तकै वितकै युकि यथार्थ जे
भेला निन्द क वश्य लख मे पार्थ से
धीक निद्रा आप्ति - इर सङ्गहिँ कहो
सकल निगता दूर कर ततमन लड़ी
ईश्वरीय विभूति थिक जग जानि ली
जीव जन्तुक सुख क साधक मानि ली
परमिका अभिनय क प्राची प्राप्त मे
उठल पागल सघहुँ मोद नितान्त मे
हित - मुखे नान्दी क पाओ मे रहै
बर अबर आनन्द है से के कहे
प्रात उठि कक पार्थ मुनि-पद चम्पना
पंचतीर्थ पयन हित पुनि प्रार्थना
सुनि से वच जोष मुनि मन आनले
हठ हुनक लखि संग अलये सानले
गाम गाम क लोक सभ आयल तहाँ
परम कीतुक हेतु ओ सर छत जहाँ
पहुँचला तहँ पार्थ जोष उमंग मे
धियम सुनि रहु हुनक हठ क महंग मे
सर सुमझिँ मय्य अर्जुन धलि रोला
प्राइ लौ ततकाल से प्रतियो भेला
अगम जल मे नीवि के से रोल से
दरहिँ मुनिवच सेजल तलु फल भेल जे

युद्ध जल में भेल बहुतो काल जे
उर्ध्व मग्धन रूप पानि उडाल ते
मुनि कहल पक्ष्माह विपत्ति क जाल मे
गहल हा ! हा !! प्राह मुख बिकपास मे
पार्थ सन भर - सन डर जग की मोला
की कर'क थिक लखहुँ अति म्पाकुल भेला
शक्ति मे हिय द्वारि हरि मोहराभोले
ब्रह्म आरत - पशु ! येन सुनाओले
प्राह प्रस्थे गज क कण्ठ दोहाओले
अवसुने कत हृत्प निज दरशाओले
अर्जुनहुँ के विपत्ति तत् सम जानवे
दीन जग उडार अति मन जानवे
हृत्प पार्थ क सुनल सुन अति मित्रता
प्राण मित्र क काय मे कत शीघ्रता
ब्रह्म दीनानाथ ! याह अनाथ ओ
हृत्पाओरहिँ डरि दोधि सनाथ ओ
पार्थ तेहि द्रव प्राह गहि आनू जहाँ
यामि से तन भेलि ओ जागरि तहाँ
चकित सम जन देखु रग अनूप ई
लोह पारस परलि रूपै सकुष की
विधि - विधान विविध विस्त विचारि के
पार्थ युद्ध प्रसन्न ई ओहि नारि के
के थिकहुँ की हेतु ओ तन पाओले
आव छहँ अपरूप रूप लखओले

पाँच सर मे लखी पाँचो की पते
कहलि से, की पक्षि सहि कष्टो कते
रुपा के उडारि बड़ यय लै रह
फिये ई प्रय मेल से हम की कह
सत-सतलि बड़ द्रवहि मद्र वेग क बले
दोरि जल क कूल भति कुपयें जले
साज लखर लोह रूप शीलो वहे
कत अनर्थ मे काहि नय नय के रहै
तखन घर नय जय शीतो गाय के
रह रहस मे अन धूम मचाय के
तखन तप मे विपत्ति विपत्ति मेल से
मारि लीं हो प्राह शायो मेल से
शाय सुनिताहिँ काँपि घर घर द्वारि के
कैल विपत्ति विपत्ति दुहु पद धारि के
जानि जग मे हूँ अति कयदाह जे
आगि जरि कर आगिहिँ क उपचार के
विज ह्यातिधि दया - दग दरशाओले
होय भयला कय वृद्धि सुनाओले
समिल सीं लै यली भल पर लाव लीं
अवस लहिलन मारि तन पुन प्राय लीं
चिन्तिते बलि जाइ अति तुल मानि के
कोला छूटल कय किछु नहिँ जानि के
पंच मे अगिराज वर्यन देल से
योग - प्रसन्न क हेतु ओरध भेल से

कहल मगहि निज विपति प्रपिराज सी
जिनय फैलहुं बाण हित विनु व्याज सी
देखि दोना प्रपित रूप लपामोरो
हुकल तरणी सँधि सीर लपामोरो
कहल मुनि, बसु पंथ सीधैं ज्ञाय के
आवि अर्जुन देता दुख नशाय के
मुनि सभ यदि ठाम लेलहुं बास के
दुख क दिन यदि भति बेल विताय के
पथ मुनिपथ आइ सरलो भेल से
आवि के दुख दुखद मम हरि लेल जे
अपर सखि छुपि चरि तेहि तारो आदो
जगत भरि मे अमर पथ पावी प्रभो
प्राद गहि गहि कारि आनन पार्थ के
भेलि अनुपम नारि रूप यथार्थ ले
विम मोधो व्यावज फल देप्रले
विधि-विधानो मुन्छ द्विज मे लेप्रले
उरल जय-अयकार लोक क भीड़ मे
कहथि भोगहिं पुलक पुर शरीर मे
मृगहिं पुन युग जियथु ई संसार मे
धन्य नर जे निरत पर-उपकार मे
मुनि कहल अहँ कालकालहुं ने उरी
प्र.ख-प्र.ख सी आन जनहुं क दुख हरी
पुनः पुनः तीर्थ के पलटाओले
अपर अविरथ रूप यश जग पाओले

धन्य पर-दुख-एलन घोर यथार्थ सी
विश्व-वीर क मुकुट-मणि पर पार्थ सी
कहि चललि सुरनटी सुरपुर-धाम के
जन-समूहो हरणि चलु निज गाम के
पार्थ पथ प्रधानहि क प्रस्ताव सी
आइ भरि रहि आर मुनि कहु मान सी
बेल उषार दूर जियो जानये
ते कृपा के हठ न यदि हित जानये
सतत चिन्ता जित तीर्थ क भ्रमन मे
पुत्रल मुनि सी पार्थ ते प्रस्ताव मे
पश्यभीम पयोधि जी हम जायये
तीर्थ कहु जे जहाँ पथ मे पायवे
मुनि उवाच प्रभास पथ मे पायवे
तीर्थ उत्तम धीक से मन लायवे
सोमनाथ महेश पूज्य सुरेश सी
उमा अभिमत-दास जानु विशेष सी
उम पर छवि जगत मे जो जानये
सकल तीर्थ क बास कल तहँ मानये
अडि अनेको तीर्थ पुनु ओहि ठाम मे
सिन्धु सिन्धु क मिलन पावन धाम मे
पार्थ मुनिगण बरि पंथ विचारले
करी बास प्रभास मम निरधारले
सिन्धु-पथ यदि पोत चलु हरपाय के
शीघ्र ते ओहि तीर्थ पहुँची जाय के

पार्थ पांथ क संग मित्र क भाव जे
सुख-दुखें नित मध्य सुख-दुख लाय ते
मिलन-विपुल जन क हो नित संग सौं
अनुज आयागमन जगहि-क दंग सौं
पहुँचि पार्थ प्रभास सुद मन पाओले
उदधि मे अवगाहि कृत्य पुराओले
तीर्थ बुझि करधर कयल प्रणाम से
निक धल बुझि तनै लेत विभ्राम से
तीर्थ-प्राप्तहिं निरत संगी संग मे
कत नयागम जन क तहँ सख्य मे
वृमथि कर्जुन देश-देश क यात्रा के
गोमिनीति नरेन्द्र क आवात जे
हारका गी प्राप्त तीर्थ उदेश सौं
पार्थ मित्र तहँ आय प्रेम विशेष सौं
दुखन कृष्ण क पुछल से समुझाओले
जनु हेरायल रनहिं क सुधि पाओले
पार्थ तनिकौं कहल जौ गृह जायवे
कृष्ण के संवाद ई पहुँचायवे
तीर्थ भ्रमहिं निरत त्यागि स्वयंसे के
पखन जौ हम आधि तीर्थ प्रभास मे
पार्थ सौं ले विरा पहुँचल देश से
कृष्ण के संवाद कहु आदेश जे
पुछल सखि क दुखल पार्थ प्रभास मे
पलकरे लुधि पखन तीर्थ निवास मे

हरि विचारधि सुनि ई भिक यात्र की
शत्रु-हृन किछु भेन अछि उन्पात की
माय खोदर भाय गाविनि त्यागि के
किछे पलकर लुधि एते ओ आधि के
युद्ध क भिक ई यात्र आपनहिं आधि के
करखो बटना क की मत लाय के
पुन दिनपर मिलन-मोक्ष पायवे
बुझि दुख या दोष ताहि नशापवे
देवकी सुनि लेल पार्थ प्रभास मे
पलकरे घर छोड़ि तीर्थ क यात्र मे
यहुत दिन सौं युद्ध नहिं कुन्ती कोना
किछी जरि विच सयहुं तेजि अवलामना
समन्विता के स्वरित ते पञ्चाय के
नारि जत रनियास सभ जुद्ध आय के
कुशल कुन्ति क सुन क हित मन पाइल जे
रहलि उन्मुक सयहुं मे लाकाइल ते
आधि ओ अर्जुन क कहु खन कुशलना
धन्य कृष्ण हुनक संग कय मित्रता
मधुर मोहन वचहिं अतिशय प्रेम जे
पुछल से जन-जन क कुशलसेम ते
रूप सुख लौकिक्य शील स्वभाव जे
अछि कहल की कहय मे कहु आय से
कामि धिपु लखि कहज नयन बकोर हो
हुनक खन सम्मग भान्य ने थोड़ हो

जहाँ कुमारो रत्न उपमा - हीन हो
तितक तिमिर काज मूर्ति मलीन हो
एवं युग भुज - वण्ड लखि अनुमान ई
जितत ई अज्ञान के हो भाग की
काजि नर तन पावि विद्या सक्ति मे
रूप गदित पवि वीर क शक्ति मे
स्नेह खौरभ संग कपो गुण रहे
विधि रचन अपवाद अर्जुन जग कहे
भुवन भरि नहि पहन होकर देखले
दृष्टि दुनक सन बह दृढ़ के लेखले
अनिक कर ओ गदधि पुण्ये मानि ली
धन्य तनिकर माय जग मे जानि ली
निति नहि गुण पार्थ भद्रा - चित मे
विधि भजन कर पीज नेह नितित मे
कय कतेक अनुमान मन मूरति गढ़े
दुनहि दूर दूरवन क आकुलता बड़े
केहन मोहन मान्य पार्थ क नाम मे
मथुर नय रहैय बड़ अठवाम मे
जानिक नामे करय क्याकुल माय के
दरश परसहि होयत की से जान के
यान बड़ि बलु कृष्ण तीर्थ प्रभास के
मिलन मित्र क होय ई मन आय के
आनुरे हरि हृदय भाव जनाय ई
पथ विधासल पथिक जल थल भाव की

हरि प्रभासहि पहुँचि ऐकल पार्थ के
अति खदासी पथिक भय बधार्थ मे
अविम मोहहि मन खर ने बात से
पार्थ पारस पावि पुलकित गाल के

कहु पार्थ मन भाग्य क उदय पिक आधि दूरशन देल जे
मन मे जतेक कुल आति आहु क मिलन ली नशि गेल से
नहि हो अर्धक कृपा विना दुख शक्ति साँव कहैत ली
सभ काल हम अद्रिग्न दूरशन हेतुही क रहैत ली
बलि एक आसन मानि मुख हरि पुकल कुशल क बात जे
सम भाय साह क द्रौपदीहुँ क की दशा कहु तात से
पुनि पुकल कहै नदना कगी की दोष से पर त्यागि के
अद्रि की तकर कारण कह विन्ता रहल भित भागि के
हँसि आयु कर्जुन अमृतो विष होय अवसर पार्थ के
विधि एक अमृत लिखि घोरो गरल गुण बड़ आधि के
तिय द्रौपदी सहवास मे पुनि बान्हिषे कम देल जे
जतनी सुगोश क वचन पालन हेतु विपकल भेल से

वचन गुरुजन पालने धिक शास्त्रगत मन मानि
मधुवचन माता क मानव धर्म बित मे डानि
आज्य है देवर्षि प्राज्ञ ताहि मे मिलि गेल
मानु मन सभ से बनहि ली विषम विष ई भेल
बंध - कथा कहि देल कृष्ण ताहि मन है सुनल
तजन सुदित मन भेल चिहुँसि कहल ओ पार्थसी

वाणी माता आवीशी कथन मिलि अहाँ पीछ दोष बकानी
जानी जे देश त्यागे सहु दुख बहुतो जेद है चित्त जानी

कानो मे के पियाऊ फल दुइ गृहणी पुत्र के पावि लेले
मानी ई सत्यवाणी पिय कठिन हजे अमृते सुख भेले

सुनू पार्थ ! ई बात के आव मनु
हटे ताहि मे तौ बहाना मे ठानू
बल द्वारका के स्थ-आवास जानू
रह स्वस्थ से आन ले चित्त आनू

थिक ओ अवश्ये गेह निज हस से किये नहि मानये
हंति पार्थ भागल ताहि मे कहु को बहाना ठानये
अकरोप प्रण तहि मंग हो अहं से कही रहवे तहाँ
सम काज मे हमरा सयहि के छी चिन्तारी तौ अहाँ

बल द्वारका कण्ठ भापू तहाँ
समोवे रहो ऐयते मे अहाँ
गन्तायाल सी मोद मानी मने
बितावी समै रोप के ई मने

हम कठपुतरी अहं नद थिकहुँ पथार्थ
केत तन्हावी गुण गहि कह पुनु पार्थ

जग जलधि जीवन तरणि भाविक थिकहुँ हरि जानि
सतत मन पतचार रहइ अहिक वश से मानि
ताहि दिश ई नमन रत हो केहर दीअ धुमाय
सुनि चित्त से दृष्टि रोकब पड़ि अमर तहि जय

अंकुशक सम्पत्ति सुखद माहु पार्थ हरपाय
मन मे नय बस्ताइ उठ देखब द्वारका जाव

दशम सर्ग

श्री सुकुन्ध क संग अर्जुन द्वारका दिश गमन कैले
हृदय पुन उताप हित आसु पावसे सन मिलन भेले
हो परस्पर कत कथा ई दिन पिछोह क कोना गेले
अर्जुन क पथ कृत्य सुनि हरि लख-बिनोद क डंग धेले

कहत भल फल देल मुनिबच देश त्याग ले पुख मानू
दार स्वमद हेतुर्पे जनु सुलभ द्वारे खुजल जानू
आप्त भै विधाम हेतुक जतय चित्त बह दिन विनाभी
ततहि भाग्यहि मध्य भवनहि भाविनी भल वना पाषी

वरद दिन मे दिन वहतरि भाव गृहनि क मोद पाषी
ताहि सी से मित्र दिन से बरहु के वन बने भावी
सोच बल समकाल मे चित्त बली भाग्य क फलहि मानू
विधि प्रपंचहि संव संवहि देल दुपुन पुराय जानू

सुनि के अर्जुन विह्वल कहु भाग्यवत हमरा कहि छी
हम तुझे छी त्याज सी अहं अपन गुण लपके करेछी
दार दुइ के त्याग के हम अपन घर कर शून्य आयय
कते सोलह लहल से युत आठ तिय नित भरहि पावय

कहल हरि पाये पंथहिं सठत घर लखेन याही
जी भेरी लीं उचित नहिं चिक भाद मे चंठवा क चाही
भाग्य बल लगन क प्रसावे बुझि पई पुनि अथवा पायव
बहुत दारा प्राप्ति कसहुं क लगन निश्चय पुराय
हो विनोद क बात बहुतो समबदक क संन भेने
मेनहीक प्रवाह मे यहि बक अक्य चित्त धेने
मेह-नद संगम सरोवर मोलि अनुपम कगधारी
वय तरंग क रंग देखिअ दुहु क मन आनन्दकारी
रत विनोदहिं मगन दुहु अत पंथहुं क सुधि विसरि वेले
दारको रथ हांकि द्रुतगति कारका लविनाय लेले
उच्च सोच क अज्ञा रथ लखि कहिरि रथ ई भाग आवे
हरि वांदि पसारि स्वागत हेतु जनु से साठ भापे
ताहि काल हिं उपवन मे लभा सभ्यहिं खज्ज राजे
धी मुद्रा परित्य क हिन घर क निश्चय कर क फात्रे
राम भद्र पल घमवे बड़, योग्य वर कुरराज पावो
दुल कुटुम्बक थिकथि परिचित पवन पुनि की ताकि लागो
कथा हरिनाहिं कृष्ण खसिमत अर्जुन क संग आयि गोला
भनिक स्वागत मे लखहुं जन आदरे साकाशु भेला
बात आमहिं रहल निरर्थ करन के सभ त्यागि वेले
वर्तमाने काज मे रत कृत भविष्य क धनित केले
लेन बहु लफकार आदर लीं सिंहासन वास वेले
कुशल प्रश्न क रीति प्रमुदित मन परस्पर कथन केले
बहुत दिन पर स्वगत संगम परम सुखम। समन मानू
दिष्ट क समागम लीं सभा, सतछने उडिगेन जानू

कृष्ण संगहिं आय रैवत अर्जुनहिं आवाख वेले
भुत्यगण लीं दूत रहवा हेतु आदेश केने
हो खनत लेया उचित से सुचित भै सन दृष्टि राख
मम अभिन्न स्वदय अर्जुन थिकथि ई हरि लखहुं भाव
प्रथम रैवत पार्थ पेखल वाख भल मन मय मानू
जनय गिरि उपवन विनोद क वस्तु प्रस्तुत रहे जानू
फल-फल लीं भल सदन मरिहिं प्रस्त विनोद लागे
भूमि ठिक भूमि भूमि भूमि देखि के मन मोद जागे
गिरिधर क गरिमा क शीरव सन गुमांती ताहि मानी
उच्च शृङ्ग श्रमधिरे फल साज सुगति हेतु जानो
पत्ति पत्ति पत्ति पत्ति राख सभ खन खज्ज देखी
पत्तलो भरना सरोवर नद नदी परिष्ठा परेखी
सठत निर्मल अथवा भाग्य नद सुन्दर निज मोहे
धनि तरंग अमर अमृति धन सुनि दग ताहि मोहे
यहू दिश लीं पीछि यदि यदि गिरिशिखर पर नई आटे
पार्थ पाहुन स्वागत क दिस पद पकारत मम उखाहे
देखि शैल तबोम धन सन श्याम सुन्दर धनि विराजे
पमर पाकल पात पीछर अनु दिनान्तर ताहि दुरजे
द्विध वन-माला चिराजित हरि वरस निज ली लगाओल
मोक्ष साकये ई रैवत गिरि प्रगट फल लकर पाओल
तनय उपवन अति अनुपम निश्च नन्दन सखज जानो
प्रमद वनहु क सुमगता लीं सुमग अतिशय ममहि मानी
कतै थालि क मुञ्च मनुवन सावडयो लनु के वरानी
भुवन मरि मे एक उपवन यह अनुपम मोद-मानी

200

पार्थ पलक विनारि हय क उभये ग्रासुता देव
कोटि कोटि कलाधर क रुचि कीन जाया सम परम्
आत ले उभया जगम मे ताहि लीं राग्य फाफे
देवगन नहिं छो इन्द्रमयनहुं पदति एकी आयनमा कै
पार्थ हय कनूय नैतिकहिं तयन मद्र भेल कगल
भृङ्गला लंकीन सुन में तोहि पुन पुन सतहिं भागल
लनि अपरिचित पुरुर खलि कइ गन उपवन भ्रमण ह्याम
विषय भद्रा लनि कइसहिं मन्द मति लीं शगलि आय
कोनहुं शिवि पार्थक गुनात्म सखरि रतिधामहुं भौंचन
देवतहिं सै रहति ई सुनि देवकी कै नहिं पड़े कन
बहुत दिन लीं छोड़ि पर मे भ्रमणन नुनि ध्यम भेती
आत जन बुझि विपति निपतिन स्मरित देवत गुनि धेनी
जो परहुं घर आत यजित हैं कि आघागमन त्यागधि
दोष की जो भोजनो छिन ओही कहुमन पने आरधि
हो परस्पर मिलन सम लीं मोद मन मे हमहुं मानी
अवश सस्यधी क हेतु क ई उचित कर्तव्य जानी
सपदि हरि हलधर वजाशोलि कहु वचन ई मेह खानल
थानि अर्जुन कै अर्धा की देवतक उपनर्तहिं गालल
अवश शोर अथय होयन पान ई जो नुनि लेती
की कइय कुन्तो कइ लीं जाग्रम छो उपरान वेती
इन्द्रशस्य क हेतु ई मण बुझल ले लग के मे जानै
लै कि त्याग धीक उचितो भुवन भरि मे भवन आमे
समय संकट मे पड़ल ले दिवस कण्हिं लीं चिताये
विपति कालहिं होथ परिचय मित्र शत्रु क ललि स्वभाये

वाम नरक स्यात्तु हलधर उचिन से मन मध्य मान्
जाय अपनहिं अर्जुनो के आदर्श आवास शान्
भेन रनिवासहुं महामुय देवकी सत्कार केले
पुष्टि कुशल पथ कष्ट सुनि के मनहिं अतिशय लोभ भेले
सत्यभामा आदि महिला लै सुतद्रा संग छोली
सर्प अर्जुन ली मिलन मे महा मोहित मर्हिं भेलो
नहे सुतद्रा देखितहिं अति पुरुष उपवन परनि लेले
नाम सुनि भुगधाम सुनि के हीतलहिं अति हरष भेले
ज्या पथ कन भ्रमण कान क सुनि दुख सुख सबहुं जानन
नन अर्जुन। गदिका दग नरक क कये खोली ठानल
गमन देखत कैल अर्जुन देवकी कहु नन दहरी
आदि के सह करी भोजन पतहिं हम सब मोद मानी
भेन आशामन अनुदिन पुष्टि एक दिन सत्यभामा
कहु कोना गति पाँच सेवा श्रोपदी कर धन्य वामा
कहल अर्जुन नियम नारद कृत्य सन बयोकार केले
जकर दोषहिं वरप नारद भ्रमण मे मन दिवस लेले
दान पति के एक तिय ली की कतहु निर्वाह आनी
सत्यभामा कहलि हम ली ई अपथ अधलाह मानी
की कबन ककरा अपेक्षित मात आतुरता क भेने
अवश पदमे कमहिं कम सब दण्डहिं क पथ मोद गेने
ले गृहो नहि गृहि क आनी जतय गृहणी - श्रम देखी
ले मे पति - पद प्रेम - रत निव ताहि गृहणी के ने लेखी
गृही गृहणी गृहो दुखमय जगत मे ई के ने जाने
जतें कोरा मे किछकि सुत हंति हंति ने मोद शनै

करी गृहिणी सगहु निज निज लै गृही मे सुखी हेवे
न्यमतायश श्रोपदी गृह गमन जन्म मे दुःख देखे
उचित पूर्व विचारि दुखमय ताहि मे नहिं अथ बाकी
नो अपथ दुखदायक जग भव्य भामिनि गृह लाभो
पार्थ सुनि होति कहल जग मे नाम्य - कल चलन जानू
विधि विधान विचित्र धनुषा अपथ के ई मनहिं मानू
भोग्य वस्तु क हेर ककरहु पदल बर्ष सन लजावै
जन्म भरि बहु यत्न केनहु केनो भूयल दिन बितावै
विदुलि सैन सुमद्रिका विश मे देखाओलि सत्यभामा
कहल जन रहितहुं ने भोग्य आलासी कह देव वामा
यत विनु देखल कतहु के रत पुगौ ली उपरि
जुधा शान्ति कि करय केहरि जी ने आ कार - धुमन कार
ललि सुतद्रा रूप अनुपम पार्थ मति गति पदन भेले
कुटुम कटक पीष केतक मधुमति रत वृकि लेल
दग भ्रमर भूमि भूमि धकित पर वन आशा हृदय राखू
ततहिं पुनु मन - मोदके सन मनाह मन ई धन्य मानू
की ने महि मे महिसुता छति अपर सुन्दरि नारि देखी
की मे गोरि क गुन क गौरव गौरवित तिय आन लेखी
की समुद्र - सुना समाने आन तिय नहि दृष्टि आयै
भाय ली तनिके तराही ने पदमि धनि वरनि पावै
सत्यभामा - वचन सुनि के पार्थ के भद्रा निरेखलि
देखितहिं उद्वेग नयन क पदल मन गति आन लेखलि
लाज वारण करय दठ ली कमहिं कम भ्रम निकल जानू
मन सनय अभिलाष पूरक हेतु तत्पर भेल मानू

गोपिनि मे भवन भवनहु मयन - नयन क मिलन मेले
 री - रीतिहि मे परपर सुग्य बैनहि कथन कैने
 मन रिगत क मचना रुदु - रुदु मुमुकि रुदु रुदु रेल
 मानु मन ओ सुधा - मित्रम योज मोदकुनि कैने
 चारि मन मेन दुगपत युगकमल पर मोद लैले
 मन - मन - मन ने मन पलक पट कपि छै - धै
 भठन चन्दा लाक्षचहि पुनि-पुनि निकसि निज गति लखावै
 लक्ष चरित छन - बसक हृद ने चरन मान ने ओनहि धरै
 पुन पुन कै देव रति - रति धैर्य रति जुन अस्त रोले
 दर्शन क अमिलाय दितिजहि मेह मयशशि उदय लेने
 लक्ष उदय मन भाव सन्ध्या सन्धि अनुपम रूप देखी
 प्रज गति भति अति विचित्रे थिक अकथ हम मैह लेखी
 पार्थ रचत गमन उद्यत सत्यभामा विदुति भाव
 कथा कै स्मरिमान हेतु क नित्य आदागमन राखु
 दुन्य रचत मध्य एकतर बलि उदासे पिन पितायच
 गतय पथ लोक क मित्रन सी सद्यज सुख यह अयस पायस
 सजा मीनय क उत्तरि गेल छी समापति गमन कैने
 ननि सन अनि काज मे रहत निज निकेतन मध्य रोने
 प्रेमिका प्रेमीक चितमे छनहि कत अमिलाय जाय
 साज दिन मे खींक हेतु क तिय मगरभा भाग लाग
 कह मनोरथ पार्थ कत-कत सत्यभामा कत विचारे
 माय-भायित थिक मोदित भावना - नदि बहि अपारे
 छनहि प्रसुदिन छनहि सोभित छनहि छन अनमन लखावै
 पथ गमन प्रसन्न करहि कहि वचन मन के बुझावै

हाय ! हमरा भाव्य मे आँख की निरन्तर निरन्तर
 पावकिक बहुकपटके थिक चहु थिय मन यह मारी
 कनक - मन रक नित निरन्तर जीवने सुनवन चरन
 भाव्य ली हम हरि तीर्थर कै शक्तिचन गगन मारी
 ओ सुभद्रा जाय रिग पर मोद मन भुवन लाग
 पार्थ मन विनोकि अनुगत होन च उद्वेग जाय
 उर धतिन भीरु लभितव मन विरञ्जी मधुर वात्रे
 प्रेम पंथम हृदय क साधन निजत निज सुनि मन भूख वै
 काल के एकान्त गृह मे सत्यभामा जाय पार्थ
 कथा निज शक्तिनय कृपन मुक्ति सी नखलि गुनगोत्र
 वीर कर्तुन घर सुभद्रा हेतु जो अह महत पाव
 योग मणि काञ्चन करय मे कहु किछेक विचरन लखा
 कहन बरि विदुसीन अह घर रिप चढकेवा करि
 बीच मे बलवत् बावक बजा द्युध से ने जमेजो
 शिष्य हेतु क निज दुनका पक्ष - पार्ताहि मगन देखी
 अह क सम्मति सति माँ हम पराभव मनहि लेवा
 सुगति क अभिमान अनुन कीरता सी पण्डित देखे
 विश्व वीर क वीर्य बाजी जीति द्रीणाव क नि दले
 कीरवेश क सत्य मोधल धीरता परतथ्य देख
 तखन कीरव - केतु के कहु नी कोना के धीर लेव
 पुन दुर्योधन अर्माति क पंथिक कृथि सतन गामी
 मूर कपटो कुटिलता सी जगत जन मे विदिन कारी
 ताहि घर धमि के सुभद्रा कहु कोना सुख सी विनीमी
 शोकमानर मगन रहि कै भिसि - विषय अनि दुख पीतो

विश्वभरि मे यथात शत्रु न हीर क्षुधि जन - जन क ज्ञानल
जन्मभरि मे ले ने कहियो घोर रख मे हरि मानल
करय सत्राणी हृदय मे पीर ज्वरी घर क काशे
के अभागल रत्न तजि कै काय लाम क कर प्रयासे ?
कहि गतेक पुनि कलपि कै कहू सपभामा विफल बाणी
की विधाता करय चाहिय गति, सुभद्रा से ने जानी
भाइ - भाबु क प्रभा ध्यायित जगत मे जगसग लखावधि
राहु दुर्योधन तरे ई शशि सुभद्रा प्रसन आयधि
कृष्ण होनि कहू, श्री घटक दुहु - पुहु घर हित दल केने
दुभय चातुरि तीं सकलता काजहिँ करिवास मेने
को सुभद्रा सदन कौरव आय कहहिँ दिन त्रितीती
की जगत यथा अलहिँ कजित अशुन क वृद्धि की कहौती
विहंसि कहलन्हि सायभामा, शक्तिहिँ क मायस्य जानू
रक्तिहोन थ पल कवनत अछि प्रतपक विचारि मानू
शृंगरि क विधान विधि - दूत देखु ई अछि माग धेने
सकल माधन होय सहजहिँ प्रकृति-पुरुष क संग मेने
जाति रहस्य क जे कथा से दुहु रहस्यहिँ मय केने
सपभामा तपरे जे कार्य साधन मार्ग धेने
जे प्रमाण प्रकृष रूप क शक्ति मे नाहिँ हो कोताही
करधि की कर्तव्य हलधर कयस से बेलया क बाही
समा सम्पाहिँ भरल मे पुनि देवती - पति वाम जानू
धीक ज्वरी कुलक कन्यादान जातिशय कटन जानू
योग्य घर घर यय पगभम सवहुँ से समल्ल पावी,
जो कतहु ई बुकि सीं भेदि जाय तीं मयये मनवी

सकल नरपति जग क लकि कै हमहुँ तीं मन बँद लेली
एक दुर्योधन सकल गुणयुक्त मन नहिँ जान देली
परिजिते पल - बुद्धि विद्या विभन तीं ओ क्षुधि निन्दारे
ते सुभद्रा - हेतु ई घर - घरत हेतुक कय विन्दारे
कह केसौ, श्री कृष्ण कै ई सम्मतो पुत्रवाक याही
मद विमोदे बेल कहर, श्री किशौ करता मगाही
की केसी कुल शील - सुत घर जान दोसर आनि देता
तखन एहि मे बाधनी जे स्वर्ग निज शिर कवश लेता
धूल परस्पर आय पहिलु क पलदि पुन ई जग लखावी
पावि कै सम्यग्ध वन्दन सोन मध्य सुगन्ध लावी
ई कथा कै स्मि सम जन हलधर क प्रस्ताम मानल
शिर्य दिश अछि अधिक आदर खनहुँ तीं मन मध्य जानल
कह हली, हिज जाधु शीघ्रहिँ हस्तिनापुर सुपति - आमे
आवि दुर्योधन पुरावधु हमर ई अभिमत ललामे
ई कथा रनियास पड़्यल खनहुँ तीं मन मोद मानू
श्री सुभद्रा सायभामा पुहु क धित नहिँ जैन जानू
शीघ्रते हिज कै पडाओल उपकरण ते रात्रधानी
सुपति कै दारीक द्वार आगमौ क सुताज बाणी
स्मि दुर्योधन मजओल आदरहिँ साकार कैले
स्वस्थ बुद्धि कै नम सापहिँ कुशल मयन क रीति धेले
कहु कुशल सीं पुहु हमर क्षुधि, पुनु कुशल सीं खन समाजे
उदय भाग्य क मेल के हम मन बदलियेह कोनहुँ ध्याजे
गुरु क अनुशासन पुरायव मुख्य हम कर्तव्य मानी
कै कहक थिक अयस शीघे पूर्ति मे ने विलम्ब जानी

जाय दिगं निज देश हलधर लीं अवन आगम जताओन
पहुँचि कुशल समाध दपहिं हुनक शुभ सम्मति सुनाओन
भेल प्रमुदित मन हली सुनि सुदृढ निगता दित भारी
कर क थिक उद्योग परिपत्य तै अपन परिजन हैकारी
कहत हलधर नगर भरि मे सजओ सभ जन अपन घामे
धो सुभद्रा परिणय क दित कर क थिक अति शयच्छु उमे
राज - भयन क भयला लीं जगत भरि मे अकि ललामे
तद्विध सभ रचना तेहन हो जे नितै सुरराज - धामे
धनपासी सुनि सुभद्रा ततधने मन भलिम मेने
विषम - विष विषधर विषाद क अंगभरि मे पसरि मेले
पुसिमा अशि पदक सुन्दर लम्बि पोड़ा पड़िब मेने
मवल शोक विधुनुये सन मूर्खें कउ असन कैले
मन मनोरथ रथहिं खड़ि के बाह जत - तत सनत धावे
विभय पति पत् जेम पातव रथहिं सञ्चरि मोद पावे
हलधर क वन कटिन कादव धीन मे फलि जाय जान
विधु सहाय उपाय पैलथितहँ सुभद्रा दारि मान्
पहुँचि धित धिम्ता उदधि मे बहय विधु आधार मान्
धीर हीर मे देखि चहुने पीर दिय बड़ पुशुन जान्
हाय ! ई अलहाय भसरन कह सुभद्रा कतय जायय
मालपति सुमिरन भँवर मे अवश हम माली ममायय
भूरि भूषण भूष रणागलि सुतलि भूतल तेजि लेजे
वरय तन अनवरत अतिशय विरह - अनल क प्रवर तेजे
हाय ! आन ने आश जीवन दुखहिं की निज दिगं बिलायव
बुकी बमपर बाल कथनहिं कह लीं हम भाय पायव

सतत सोच वेदाल ह्याहुल चेतना प्युल तेलि भद्रा
मन अवन-वश तन क सुधि नहिं तयन सुग मे लागु लम्बा
सखि समीगिनि शीर के कहु शीर्ष भद्रा के लम्बाक
हो अचेतो चेतना दित अरिख मथे पानि दाक
सवहुँ रुखि तहँ दोड़ि आयालि चेतना दित यत लागलि
केशी तरसिज दल डोलायव, केशी धानन रगदि आनलि
केशी सीधे जल गुलाब क नयन उगिलनी क आये
आम - आन उपाय कत - कत करय रहि - रहि देखे श्वाले
सुतलि भूमि करोड केरत गगन दिश दग दैत देरी
शशि निरखि भद्रा क गति जल-धीन मीन क वशा देरी
कहलि अति अकुलाय, हे सखि ! शीर्ष के कउ छार सून
ई सुधाकर धीक गहि किछु दात दातो सवहुँ सून
दुल सुधाकर जे समुद्रज ताहि शंकर मथ किले
कतरि व्योम बनाय निज सुत नारि भूषण भल देले
कैल जे विषयान केरल पान ई थिक रीह मान्
रेण के विष कालिमा थिक ददन कर परतच्छ मान्
बहुत विष-र वलय सभ जल वषय विष आधिक्य भेने
सतत परलाहिं निजल तरवर कहु कोना रह शीघ्र धेने
ताहि अन्ध लोप लीं विरिहिनि अरय ई जगत जामे
तद्वि ई उपचार सभ मिलि कै रदह की अघ - जाने
की कमल दल के डोलायव धे सुनायव ताहि लेने
जल जगमि जलवात के जल भायनहिं जरि तपन लेजे
ताहिके शीले प्रदायक भावना जी मनहिं मानह
तौ बहनहिं क सजित सज्जा नीक सुनि मन हेतु मानह

अर्जुनगम बुकि सुभद्रा मन मधुर उद्वेग जागल
धन क दर्शन सी शिखो सन मोद सी मयमेलि - पानल
सहटिके वातायन क लग भावि एकटक लखै लग्न
धुनहि - सुन पुलकायमानो भाव सँग अभिलाष जाय
सत्यभामा पद पकरलि नै सुवासित जलक भाड़ी
भोजन क विन्यास अनुपम सजल धार सधार भारी
के समर्पित इष्ट देवहिं पार्थ भोजन कृत्य लागू
कहयि उच्यती विप्रनि करलै सत्यभामा वैलि जागू
आचमन सुरमित सतिज सी भोजनोत्तर से कराओलि
सज्ज भल पर्यङ्क ऊपर आदरहिं सी पार्थ लाडलि
गोर के कधु ये सुभद्रा पान बीड़ा साजि आन
पद जनक सतकार करतव सविधि थिक ई मनहिं मानू
भट सुभद्रा हार्य वागहिं पान बीड़ा साजि लेलनि
बललि पर पद थीरनिहिं पद दुषित सन मन मार्ग धेलनिहि
लालला लामो यवै हिय जुह ब्रह्महिं निरत लेख
खंजरोटक गति धुनहिं - धन करि - परक गति गमन देख
उदित मुख शशि निरखि मानल अर्जुनक आनुर लकायै
हरि - प्रिया सी कथा करितहुं नयन रहि रहि ततहिं आवै
वेग वपाकुजता सुभाहै कुन सँग लाव अनेक भावै
अंकमक अभिलाष उमसी उडि विवदु बु कि फोरि आवै
सहलै सुल्लै सुभद्रा के नमित मुख सनै पेली
देखितहिं हग पार्थ पुलकित मन हुलासहिं सी सजेसी
पान पाचक अर्पनहिं सी कर परलि कर कम्प भेले
सत्यभामा विह्वलि के निज करहिं ओकर एकड़ लेले

अटपार्थक करपर धारि कुमरि कर कहलि पितयवच सतभामा
उलहन अहं देलहुं से हम लैलहुं पूजन कय रहु मन कामा
ई कुशुमित माला गहिअ छयाला गुन अवगुल महिमन आनू
सहजहिं धन पायो महिं अनटावी अनटावी मन मुन मानू

एषित हम गुण पियव दुवि लघु वनहुं छट ने छाँक
तन मनक सुधि विलरि दुह बिच भेल अघाक
स्पर्श सी कत माव सहजहिं काय कय मै जाय
माण माणक मिलन मुख ले कहत के कवि गाय
पानि परसहिं तन परस्पर पुलक प्रेमक पुंज जागल
आण माणक समिलन सी दूध काँच स्वरूप लागल
जुहुक मोदक खास रोमक कृप सी वनङ्कलित भेले
स्वेद स्वेदित कर परस्पर कर सुभद्रा ससरि गेले

सकुचि संकोचहिं सुभद्रा सत्यभामा शरण लागू
विसरि गेल गति गात तै नहिं दै सकलि की डेग आगू
हरि प्रिया हंसि कहलि हटकै हमरकी छाँचर धरे की
जमिक भेलहुं तनिक लगमै कियै नहिं आशय करैही।

लाज लजाय कुमारि लिभारि तहाँपर दोसर अथ पधारलि
से ने फोनो विधि मानस सी मनमोहन मुरति रूप विसरलि
काम कला प्रगटैत तहाँ कल लाजहिं निन्द कहे हम हारल
पाओल पुण्यहिं प्रेम प्रया भरिद्धाक ने एँकल ओ हटि टारल

के विनोद ई सत्यभामा बचन अर्जुन के सुनाओल
काक मुख मे पड़ल खन ई हव्य यतनहिं सी बचाओल
मृनि दुर्योधन पधारयि साहि परिणय हेतु जानी
तैं अधिक अगुताय ई धन अर्पणो हम कैल मानी

पार्थ कहूँ दुर्वाधनक की दुर्प के ओपले ओता !
दुधि बिन्दारे भ्रमहुँ झेने तकर फल परतच्छ पौता
केदरो जरा पड़ल करिणी की करिगरो कतहु पावे
व्यर्थ जालच मे पड़े लीं अवश ओ माणे नमावे

जखन गाराहीन परराशि घर
साधि के खँधि कर्णसि हम युद्ध ठानी
अल प्रतिपक्ष पर लक्ष्य नहीं हो विकल
लहज अरिकुल के वलित जानी

वीर के पहन पदि विषमे अनिक
उर नाम सुनि हमर नहीं लाल मानै
जीति सुरराज जूझि बुझि पछुपति क बल
तुच्छ कुद केतु एष मनाई जाने

ओ कृष्ण क भेल आगमन अकस्मात् सेहिठाम
सुनि पुनि होखि कहुपार्थ लीं वचन पकड़ित काम

द्विपक्ष क अक्षरों चित्त आश्चर्य भेने
यिधि वशहिँ क्षराफा जोड़िओ जूटि नेने
हम हय निज कीहुँ आव साकाच्छ हेते
बुझि पड़्य अरुओ मोलि के उड़ि जेने

अति योगन लीं कत भेल कथा
ककरा कतवा कतव्य यथा
मिलि पायल युक्ति क जाल गरु
सुनि पार्थ बिनय-युत यात करु

जीवन पथ पर अटक रहल लीं कहिया लीं नहीं जानि
जय हग-भ्रम भ्रम मन अनुजन लुटे सहज नहीं जानि

कर्माकर्म क निविड तिमिर में उपोति रूप भगवान
पथ क प्रदर्शन करिअ कृपाधन होय हमर कतयाय
ततमत मे अहँ किये पड़ल लीं हरि कहूँ यात यथार्थ
पार्थ पार्थ लीं अख क्रिया मे हरण क्रिया हम पार्थ

आगत समय भग्न दीक्षा लीं हमरहिँ लीं लिख आव
सहजाई सिद्धि प्रयोग प्राप्ति के कृत-कृत्ये मे जाउ
लीलामय ! अद्भुत लीला अदि कहल पार्थ के जान
नीति कुहुक बल खनहिँ खनहिँ मे कै दिअ आनक आन

बहुत कहय की हे करुणामय ! बिनय करी विनु व्याज
संकट विकट प्राप्त मे खभजन अदिह हाथ मम लाज

विद्वंसित हरि संगे पार्थ मरवान देले
अपन मन सुभद्रा संग संयोगि धेले

अनमन सन मेले रैवते ओ लिप्राक
मदन मन मलोसे ने दृशा के सुधार

†††

एकादश सर्ग

सुभद्रा भी हरि मामिनि मापु के
तनिक क्योंत कथा चित राखु से
मुद्रित हो दिय पार्थ क ओ तेना
विसरि बाट लज्जा के प्रो जेना

लखि विरोध सुप्रेम क बाट में
बदय कोष हलीक कुठाउ में
भरल मेढक वेगदि में जहाँ
मन कथा रत पार्थ कहु तहाँ
मिलन के सुल नैनद नैन सीं
मन मिल कहु सैनक बैन सीं
निशि दिया विसरै नहिँ रूप ओ
रतिक कपहु सीं अपरूप ओ
जलन भेल प्रिया कर संग में
मलल चित मनोज तरंग में
भरल घाम करे कर सीं अदा
सगरि बोल हरय दुख है महा-

शरण आगत मारि क स्वर्गबो
धिक कलंक क शीक लगाएबो
हमहुँ पोरय जी ने लगाएबे
अवश कायर मध्य मनाएबे
सदस सत्रिक धर्म इ जानि के
हरण के रण के लिय आनि के
अपन बाहु बलें कर ब्याह से
अति प्रशंसित हो अग माक से
हरण काजहिँ तैं मन लगाएबे
जताए ओसर से दस पाएबे
मिदसु पाएब सैम्य अतेक से
हुमयु अर्जुन शक्ति कतेक से
करधि तर्क वितर्क अनेक ओ
रदधि युक्त विचारि कतेक ओ
मगत जैं शतरज क खेलि मे
एकल पात्र खेलैक समेलि मे
सुनि हलीक निदेश प्रमोद सीं
रत लजै निज रोद विनोद सीं
नगर नामर नारि विचारि के
भुवि रही नव स्वर्ग समारि के
कतहु याजन भाज अनेक से
कप सके गणना ने कतेक से
मट भटो मटुओक विनोद से
मगत मान महा मन मोह मे

नगर नागरि आगरि गान मे
मुद्रित मातलि सोहर तान मे
बहुत भावप गीत सोहान के
करप नयक हृदय अनुराग से
धन कुमल हो रमिवाल में
समक बिल दुलास पिलास में
युम विवाह विधान अनेक के
कर सोहागिन पूति कनेक से
नृप सुता क खणी मुक्ति कान मे
बिहसि के कहु हर्ष क ज्ञान मे
"अलग कौरव केनु विआहवे
तलन सिन्धु सुखे अग्रगाहवे
सुनि महादुख सी मुँह टारि के
रहलि ओधदि ताहि निषारि के
उदल शोक क योग अपार जे
बुझलि जीवन ओ जगभार ते
पड़ल खोख क सिन्धु कुमारि से
सकल सौख्य क साध विस्तारि से
बहाले रुक्मिणि सी खेले जाए के
पुद्गलि से तई तन्दन आप के
"समय देखि विआह क ई अहाँ
दुख विगाह क कर धरी कहीं
खन चमंग सरंग लखा गई
तलए रंगहि भंग जना गई

कहु कहु निज हीनल आव ते
अपरा व्यक्त कहु निज भाव से
यतन हेनु मे दुःख सुनायवे
तलन पातु अहाँ पड़तायवे
सुनि कथा रहली गुप साधि ओ
सुखि जीतलि योग समाधि ओ
बड अनेक यशे हिय डारि के
कहलि लाज - पटो तई टारि के
"हमर जे गति से हम की कह
सुनल भोगल पुरंदू ई अहाँ
निज एरीरहि के रज भोग जे
दुगत से दुःख सं परशोक से
दुख के महिमा हम कान के
अपन ते असर्गत प्राण के
कयल दान कदापि न दान हो
मशत जीवन ई मन भान हो
जखन भाइक ओ दड आल मे
पड़ल बिल अहाँ क वेदाज मे
रखल युकि विमुक्ति क जे अहाँ
कय कृपा हमरी किछु ती कह
सुनि कुमारि क बात विधान के
रहलि सकहिं सी अनुमान के
बुझलि रुक्मिणि भाव कथा क जे
अपरा हृथि कृप व्यथा क ले

कहति हविमणि "वात सुभैत छी
हमहुँ भोगल कर्म कहैत छी
जन्म आन जगय मे जानले
विनय शम्भु प्रिया मन जानले
दुख त्रिया क त्रिया युक्ति लेधि ओ
सकल शोक हृदय नशि देधि ओ
पुनि अहाँ गिरिजा कह प्रार्थना
अवस पूरन होयत कामना
पशधि देवत मे जगदम्भ ओ
पुरधि काम सदा अविलम्ब से
आहिक भाव्यहिं पर्य महान ओ
अधि मुलायल देवत मान हो
हमहुँ साधन सोधि सगयने
गुनन देवत जे अहं आयये"
बहुत कहिं बेलहिं सान्त्वना
बललि हविमणि युक्ति क साधना
दिन द्वितीत सुलस सुलाहले
दिवस सरसय देवत आयजे
सयहुँ बात विचार जहाँ तहाँ
अवस देखव सरसय ई महा
बलल साजि तिलार कते तहाँ
गन रधादि पशति गने कहाँ
अन क त्रिपु तरंगहि जाय ओ
युक्ति देवत देत हुवाय जे

पुनल अहुँत औसर नीक ले
यतन युक्ति करी धिक ठीक ते
गमन देग क व्याज जतायये
सुखभते फल हविदत पायये
बुप लभा महं अहुँत आवि के
कह विनय शुभ औसर पावि के
"सुख सुख बलराम कहैत छी
अपन आति कथा सुनयेत छी
अवधि अंत समय लग जानि के
गमन मोद करी भल जानि के
बल क काल करार रहे कही
उचित थोक न आव पते रही"
सुनि कथा बलराम उदारले
"उचित ई नहि पाथे विचारले
परम सरसय देवत देनि ली
तयन तीं निज देव यथे बली
सुनि धनजय वात सुनाओले
जनि आति कथा समुझाओले
उचित आवहुँ आग्रह नीक की
हमर बात विचारव थोक ई
युक्ति पश्य गति ई निज राज मे
जनि सोवर संग सम्राज मे
अवधि राम क जे समुझायले
अवधि पालिक जी अकृजागले

कहल कृष्ण "शब्दे हृद की कह
मन कहें थोड़ो दिन लौ रह
उचित जायव भीक स्वदेश के
जननि सोरर आनि कलेश मे
अहंक हीतल दुःख जनैत लो
हमहुं नेह यशें सुनवैत लो
सुमल भाइ क आप्रह जे अहाँ
तकर पालन मे कृति को तहाँ
अहि कथा मम भाइक लोक जे
उचित उत्सव देखव भीक लै
मम यवै उद्वेग विशेष जौ
तकर वीचहुं जाइ स्वदेश लौ
रहत दाइक ले रथ घुल से
गमन जानि अहाँ क निमिष से
कहल दाइक के बजवाय के
रहव पार्थ निदेश पुराय के
कहल अर्जुन आप्रह मानि के
रहव प्रेम यशें लिख जानि के
चलक काल क भेभट जे जतै
अपस पूर्ति करी यजने ततै
कहल राम "मे लै कृति जानवे
अहंक आप्रह ई डम मायवे
गमन नेह कथा समुझाय के
लिख विदा रनिवासहुं जाय के

तखन से रनिवासहि आनि के
कहु कथा तहँ औसर पानि के
"अपधि अंत स्वदेशहिं जायवे
जननि हीतल कष्ट नयायवे"
हरि क माय कह हरयाय के
"अपल आश पुर निज माय के
बनहिं मे विधुई सुत गाय जे
तत समै गति मानव माय क
आगत मे सक्रिया गृहणों कहीं
सुनल अर्जुन ई कयलौ अहाँ
तकर की फल हो बुझि लेल से
कत परामय मे दिन रोज जे
सबहुं लै गृहणी पृथको कर
रहथ एक निवा सक्रिया बक
नहि नवी दुख मे अवगाहये
नियम तारवहुं क निगाहय
कहव बात अहाँ निज माय के
रहलि मोहि कियै बिसराय के
एहनि मारि ने ई अग पाओले
अपल नैहर के बिसराओले
एतय भेल अनेक कलेश जे
विछरि वी सुनि लो उपवेश से
गृह रहो अने दुख थोक के
घर क विद्र उचारव भीक ने

हरि - प्रिया सुनि अर्जुन जायवे
सगदि दर्शन फेरि न पायवे
मिलन हेतु स्वरा तहैं छाओले
वचन चातुरि सी समझाओले
"तखि क संग सनेस पटायवे
अवस रैयत मे अहैं पायवे
मम समर्पित के" अपमानये
सुभम मन्द विचार न लायवे
कहल पार्थ भला अहैं देव जे
अलभ लाभ सुवे हम सेव जे
परम प्रेम क ओ उपहार के
सतत राखब हृगत द्वार के
चलल रैयत अर्जुन सै विदा
सबहुँ मोरहिँ थिहल हो तथा
मिलि हली हरि कील पयान ओ
कप मनोरथ पूर्ति क पयान ओ
हरि - प्रिया मन से कह चिन्तना
रहसि काज क कय रहि लाचना
पृथ - सुता भट दय वज्रपाय के
कहु कया सब सुत सुभाय के
"तखिअ जालय रैयत से कह
तलहि पूर्ति मनोरथ के रह
समय पानि न दित लज्जाये
वाधि जे किन्तु पार्थ पुरखवे"

कहलि तपिमणि आलि वजाय के
विहँसि राजलि धैर सुभाय के
जगत मारि क ई गति जानवे
किन्तु दिने रह नैहर मानवे
अथवा भाव ई नैहर स्वगतो
नहिँ सुखी कहिया पुनि जावती
यतन युक्ति कृत कुलाय जे
सुदित भै जुट को तदभाय से
चिन्त बाहर मे कय जाय के
गुरुजने कहु ई समुझाय के
हुनक समर्पति सी हरपाय के
सुपति जा लखु आसल जाय के
सुनि सखी एक बरहर भेलि जे
मरहिँ राम चिन्त रत भेलि से
कहलि नमहिँ भावहु भाव के
रहलि आश लगाय अपाज के
कहल राम सही मन्द रंग मे
"अवस जाथु सखी लय संग मे
जतय जे हुनका वित बाढ हो
अपन ती तबरो निरवाद हो
सुनि निदेश सखी हरखाय के
हरि - प्रिया पुहु के कहु भाय के
नृप बुढारि क साज सिगार मे
निरत भै भेलि से अजुराय मे

रघु विगार लोहाग सिनेह लीं
चिकुर साह समाह सिनेह लीं
रहलि आनन लीं कव टारि के
शशि प्रभा प्रगट्ठ धन फारि के
गदन के उपमा शशि देत के
जगत में अग्रशे मद लेत के
पटि घटे शशि दूयित कालिमा
मुख क नित्य कला धनु लालिमा
वरलिखै क समान मे नोक ई
मुहक लीं उपमा महि छीक ई
दुष्टन नाहिं मोलि कुकुर हो
नखन के कह ताहि वक्रक हो
पुनि अहाँ यदि भुक्ति जनायने
गुहुर आनि लमब्ध धरायने
नयन से क्वचि ले दृश्याओते
ततहु लीं प्रतिविम्ब कक्षाओते
विधिक मोलिकता क विधान ई
कुशरना पदुता क प्रमाण ई
रखल आनन ई भ्रम के कहो
वनय आनन शान क ई सही
सजल आनन लिप्पुर बिगु लीं
निरखि मानिअ आहूत हनु लीं
भलि समुद्रहिं भोय कलंक के
प्रगट्ठ अंगल के गहि अंक मे

नयन कव अरूप प्रभाय ले
हरिण अज्ञान कंठ कि पाव ले
रघु विरंषि विशेष विधान लीं
नयन के उपमा महि आन लीं
जगन अंगन रंजित भेल सो
मदन धारण के टपि रोल सो
चिनु कमल अदीनहि भंग लीं
धल शुवा-द्विप मय कुदंग लीं
सजित लीपज मूरण भाल ले
लसय पंकि क पंकि विशाल ले
चिकुर राहु उरै मुख हनु की
सजल लीन नखन क वृन्द ई
तिल प्रमृनहु के चित चाह ई
रह गुणीरु डीम उझाह ई
हमहु नाक लमे, मध भुलि के
कर मना कहु ई नहि भुलि के
मधुरता मृदुता मधु दास लीं
वदल लाल प्रवालहु लाल लीं
अधर पोयुप लीं वदि के सही
निरूपता भुनि मे मधरो कहो
लरनि मोलिक चित शुमान ले
मनहि मानय काम समान से
कतय पावधि ओ लुकुमारता
ललित लालिमहु क समानता

श्रुति विभूषित ने भूति फूल खैं
मनु गुह कवि कानक मूल सो
अवन शिष्य शुभाशलि नात्रि के
तनिक डोड यधू कहु आवि के
भुज विलोकि मने अनुमान हो
कनक बलरिप धिक भाग हो
तुड विभूषित भूषण भेल जे
तुमन भारहि की लवि गेन ते
प्रकृष्ट डोरहिं मोति क हार जे
मिलल भारति जाइवि भार से
नहं कमावलि संगम भातुजा
रखिक हेतु प्रयाग सुकामदा
कलल कंचुकि मे कुच देखि के
कवि विचारथि ई मन लेखि के
मदन मोहन अल चोराय ई
जग जिते हिल राणु सुकाय की
उरध पुण्ड कमावलि जे भगे
जिवलि देखि त्रिपुण्ड कुचन्दने
मन - यशो - कद आनम योग. ई
सुयक मोहन दम प्रयोग की
अजन दीठहिं पीठ. निहारले
लसित देखि विलोकि विचारले
गुण भुजङ्गिनि भू. भुतिआय है
विकल है अहि ताकय जाय है

पृथु नितम्ब खरोज क पीनता
निरलि बीचहि मे कटि क्षीनता
विधि विधानहिं होय विचारि के
रहलि किंकलि बाहि सुधारि के
वनटि रजस क धम्म लगाव जे
वरध बांग तहाँ निरमाव जे
विधि अविश कहे नहिं जानि के
पटहिं आपलि है धनि आनि के
अरुणता चरणी क प्रशंसिता
परम कोमलता कमनीयता
गमन - भूमि कडोरहिं पाटने
अहह शोचित खैं यध पाटने
खलक अंगुलि उत्तम देखि के
अपन हीन यश मन लेखि के
करय मन्त्रन चम्पक कोर ई
करय खोल करे निर मोर की
गति करीम सरल हराव जे
भल हनाम कही धनि पाव है
सुभग नूपुर पैरहिं बाज से
सुयक मोहन हेतुहिं बाज जे
कुसुम रंग पडोर परीरि के
हरित कंचुकि साजि करीर के
बललि सुन्दरि ओ कडि लोचिका
रह संगी लय मे कट लेखिका

सबहुँ शेषत मे पहुँचू जहाँ
मुविन राजकुमारि कहू तहाँ
मधम कै लिख गौरि क पूजने
तखन वसव देखु भुने मने
कुमुम कुंकुम साजि समारि ओ
वहिन हाथहिँ चामर धारि ओ
बललि चानन दीपक धूप धे
अपर हाथहिँ धार अनूप से
फल नयेध निवेदन भार ले
पुस्त आशुहिँ आश विचारि के
नूप - सुता एगु मन्दिर धारि के
सविधि पूजय शैलकुमारि के
पुति पशुपुत्र प्रेम समाध के
मनहँ मन्त्रि क भाव दनाय के
दुख क बेगहिँ भयान लगाव से
धिनय होनहिँ केन सुनाइ - से
"गुनु गुनु । गिरिजा जगन्मित्रके
धिकहुँ तीनहुँ लोक क अम्त्रिके
तखन खनति जे जग मे जते
बुलित भै कहू भापत से कतै !
सकल मंगल मोक्षप्रदायिनी
दुरितहारिनि दीन - दय किनी
धिकहुँ जे जन-आर्ति-चिन्ताशिनी
हम गही पद-पद्म कृपालिनी

हृदय - पंकज बासिनि की जहाँ
रहधि शंकर संगहि मे जहाँ
यदपि हृदगत दुःख जनीत की
तदपि आकुलते सुमयेत की
आहँतुँ शंकर के पति भानि के
हरि जगन्नाथ धितहिँ ठानि के
मण हृदै क न होटिहुँ डारले
गिन तिनेदहिँ मेम तिवाइले
जग कुमारि विचारि समस्त से
गइल मारग कैल प्रशस्त से
भइ जनेक निया परमान के
जगत मान शुभे अनुमान के
हमहुँ ताहि पयें पद खेल के
हियहिँ अजुन के पति कैल से
ब्रह्म हली क अजेय विज्ञानि के
पवल की अति कष्टहिँ आनि के
विपित - प्रसन्न विनय सुमयेत की
करिय आर्त क प्राण कहैत की
हम हृदय बिच ई मण कैल जे
पुन मनोरथ से मम शैलजे ।
कदव की वहुतो अपने कथा
विकलते शुक्ति ली हमरो स्वधा
दुख दुखे जानको चित लाय के
जगद पैरहिँ काट बेचाय से

हवपति राखि यशी जग छो 'महा
हमर की पति राखव ने अहाँ
अवश जी पहि मे भमठाववे
सुयश बान्द्र कलक सभापये
सुनिय मा । मम अन्तिम रात ई
अधि समर्पित पार्थहिँ गाल ई
कवित जी तहिँ ओ वर पावये
अवश के हम प्राण गमावये
चिनय ई गत मस्तक कैलि ओ
हृदय मे गिरिजा - छवि धेलि ओ
मगन ध्यानहिँ मे घिसघास ई
अवश पुरत जे अधि आश ई
पुजि विसर्जन के उठि गेलि ले
मनहिँ मे किहु धैरज धेलि से
बहुय नीर क वेगहिँ मे जहाँ
पयहुँ आशय आश करै तहाँ
अकलि मन्दिर धीं छप - बालिका
गमन सीं जिति लेलि मरालिका
निकसि अलुन केँ तहँ देखले
सगुन भान मने शुन लोकले
मयन हुँत समाव पढाय के
कलक पार्थ तहाँ ; अगुताय के
अपदि राक - सुता निज आश ई
हम चल जखु उगमय आश ई

जखन कासव मे पयु चारले
ततय मोड़ विशेष निहारले
कर कोलाहल शोर जहाँ तहाँ
सबहिँ मोड़हिँ मगन रहै महा
बहुत शोभ लोकान कतार मे
बिबिध वस्तु बिकाय बजार मे
सतत आहक मोड़ फिरै जते
सुलभ मूल्य क ध्यानहिँ मे तते
पूथक हाथि क हाट रहै जहाँ
गरजि के मन शब्द करै तहाँ
बहुत बाजि बिराछु बजार मे
किनय आहक धीखि हजार मे
सुभा गोधन हाट क की 'कह
कृपक लोचन लोभित मै रह
कतहु पति क पुज बिकाय जे
बहुत कीनि रहै हरषाय से
बहुत गायक गावय गीत केँ
पडज पंचम मध्यम रीत मे
कर निशाह आगाध प्रवीणने
कतहु दोष न हो गतिहीनने
सुखद भैरव श्री तहँ कीशिकी
भल दिबोल बनो पुनि दीपकी
सरस सुन्दर शबहिँ गाय के
आमर गायक गान कजाव के

सुरज खीरा रवाच सुवह्न ओ
 डक सितार वजे सुरवह्न ओ
 पुनि समूर पयाचन वाज जे
 मग्न सभा सुपमा सहै सुज जे
 ततय ताल क भेद अनेक से
 प्रगट बाधहि बाज कतेक से
 परत तारक तार मिलाव सौ
 मनाहैं मोद प्रदा सुनि कान सौ
 चतुर मर्तक सुत्य कला क जे
 अथवा पाक् - पटुता विपदा क जे
 रचय कीर्तन हास विनोद मे
 मतल लोक - समूह प्रभोद मे
 कतहु खेलय नाटक - नाटिका
 प्रहसनो कल के धरजे डका
 ततय लोक क भीड़ अपार ले
 कहि सके गनि धन हजार के ?
 दगत नारि मनो कल गान मे
 कतहु अगतवी क मिलाव मे
 कतहु साकय झुलल लोक के
 केअओ कानि रहै तेहि शोक मे
 कतहु काजय . पालक बालिका
 जकर भीड़हि झुलल बालिका
 रहधि रसक दृग् अनेक जे
 झुलल ताकि मिलाव कतेक से

सकल उत्पन्न काम मिलोकि है
 ततय पार्थहूँ के अथलोकिके
 दग हों सुदु बात चलाय के
 चमलि राज - सुता हरपाय के
 लखि पद्यान्द राजकुमारि के
 हरत सौतर पार्थ विधारि के
 हरिप्रिया क कथाक सुमर्म ओ
 पुमल सोचि कहै करि कर्म ओ

पवि अयसर कज माधिय स्वाभि के भय लाज
 ताहि मे न धिक्ख सखी थीक चतुरक काज
 समय वेग मे तारतम्यक सध्य मे विलि जाय
 मन मनोसहि मरन मानी कुनहि छन पचराप
 पार्थ दावक के कहल, आई साजि रथ के लाउ
 खलप पहि छन आर्तिवला हम अनु धिक्ख लगाउ
 साजि रथ पहुँचैत अर्जुन खवल अरुन लगाय
 चमल रथ पथ वायु वेगहिं कजि गण हिहिआय
 जाय पहुँचल ताहि पथ मे जहँ सुभद्रा जाधि
 मोच मे नित पड़ल अनुजन मनहि मन पचताधि
 देखि रथ पथ स्वाभि लइमित वकलि ओ सुकुमारि
 रोकु रथ, कहु विहुँलि काहुँन वचन राजकुमारि

सुनु समीप पधाहि सुभद्रके
 हरिप्रिया कहवा हित बात जे
 सति रहस्य कथा काहि सैं कहो
 कह भयो गन कान भिको ली

सु
भ
दा

ह
र
ण
ध

से सुनि एतकरि गेली रथ हनिवाय
यिनु सजीप मे येने कहल कि जाय
कह अर्जुन रथ ऊपर छुन भरि छाड
सुनि सम्प्राप्त अर्जुन पुनि फिरि चल जाउ

सुनि, सबी दिख देखि रह
आलि-सखी बुझि साहि कह
जे अहि भुन समाइ यथा
जाउ सबी सुनि छाड कथा

तज्जन रथ पर चढ़लि भद्रा वैसु तहँ सकुचाय,
पाथि विसरल यस्तु सन दुहु रक्षि मन हरपाय
पार्थ कहु रथ हाँकु शीघ्रहि इन्द्रप्रस्थ क हेतु
आथि घेर ने हरण भद्रा जानि यादव-केसु

दाशकी सुनाउ बात नखतें विनीत सौं
सारथिअ आप ई विरह थीक नीति सौं
यादवीक हंस संगरी क होइ सारथी
दोष देः पाटने सम कक महारथी

पार्थ ई सलकार भावल, शीघ्र रथ केँ हाँकु,
इन्द्रप्रस्थक पंथ में चलि द्वारका अतु ताकु
शरको कह, करय नहिँ हम कुल-कलशक काज
पार्थ यहि सौं उचित थिक जे अहँ आपो बाज

दास यादव - कुलक असहिँ पोखलक सन जान
भद्रिका कुल-भिया हरि यदि कहय हाँकु दान
तौं चलव पुनु द्वारके दिख कही छुने बात
हम कुलप्रक काज करय ने राखि जीवन गात

१७८

सु
भ
दा

ह
र
ण
ध

कोव सौं तपि पार्थ दादक हाथ दुहुँ गहि लेल
आनि केँ दक्ष भाग रथ में बाँधि रह केँ देल
लेल बायक बाग मिज कर कागु बैसल आप
दे रथद हय हाँकु द्रुत गति बहुत से अमुताप

दथट भुनि भटपट चढ़ल टपटप हाप उटाय
रपट भरपट सरपट तुरन सकद सहित चल जाय

कलसी उठौने, कान तानि उथ बैने, नैन
कोंधहिँ चढ़ौने, हथकड़ पुच्छ उबकाय से
प्रिया गौरवे लखौने चालि बलिगो बढौने
घर पीठ गहिरीने जसग बुझाय से
गति बागहीक धौने भूरि भूण्यो बजीने
शोर हेपा सुभीने जोर जोशो जनाव से
भूमि हाप डबरीने धूम भूरा केँ उड़ौने
बाजी बायु सौं लगौने बाजि बेग धाव से

चल हाहाकार रैवत मचल बहुतो शोर
विनवेजारहिँ देलक जाका पार्थ हाकु कोर
विजुलि गति ई बात ततज्जन पलक सहुविश घोर
केसो दीइल द्वारका दिश केसो अर्जुन ओर

पार्थ! पार्थ!! पुकार पुनि केसो दादके सलकार
केसो कह सुनु सुनु सुभद्रा! बिकरि बारंवार
केसो कानय केसो बाजय केसो रह मन-मारि
सखी-द्रुत गति नगर दिश चलुनिज प्रपलहिँ क्षरि

१७९

मधुशाला में मद्यक गोभी की बलरामक कुल देश
मधुक मधुक मधुकी कल कुलक आसप सजल विशेष
निरत पान में शान चहुल चित बहल बाह चहल लाल
हान विनाद मोध कोलाहल करवाई सयहुं बेडाल

कनहुं पिडल मधुकी मर हरकल कतहुं मरल कत डेरि
अपक अथ कचलको नहिं दूख अथर अथर कच डेरि
कचहुं स्वादि मोर मन आनयि ककरहुं कर अथमान
थी मरमस्त रवस्त बलगन में कयी सुतल हल जाल

देहि जालि कायि जानि कानि ई लुमाओले
पार्थ के प्रपन्न हाय ! मदिका लदाओले
भेल सथी यल सथी युक्ति शीघ्र ले कक
जाय मे पड़ाय हूर ओर के धर धर

सुनि अथ पिडले पियाली पडकि भू पर बेल
कोय मर मिलि दुहुक लाली 'राम-बल गदि गेल
कडल, सुतल तिहडिंक जनु मोचलक अदि मात
थल लीं पोसल विहालक थोक ई उतपात

दलधर कर हर-मुसर है तमकि सभा यह जाय
पादय दल जल सयहिं की लेनहिं तुरत बजाय
लेनहिं तुरत बजाय कडल भेल अजयुत पाते
नोन पापहु कुल जाल कायि कैलक उतपाते
कुल कलंक विप बड़े, डलल ई पोसल विपधर
अथ नाश अरि उरग नरहुं कपहिं डम दलधर

को कायर मोहि वृत्ति बहनि के हरणी कैलक
अनितहुं तथक मोध कानि कल लकरे धेलके
जलन अरि डम अरक शस्त्र संप्रामहिं जायन
अरिजन परिजन सयहिं मारि महिमत्य सुतायय
धीर विहने करव डम शोणित सीं पाटत मनो
वृमत्त बल यलभरहुं जल जल ई मय के कही
हारि देव आपन प्रभुपदो क पाशा आय

गोद गोद गोदी विश्व धारक सैहारि देव
मारि देव अरक शस्त्र शत्रुक समूह पर
दाह-मुण्ड मुण्ड-भुण्ड भूनल पसारि देव

धारि कै नृत्तिह रूप पकाइ पसुहि मर
उर वृकोदरक मय सीं विहारि देव
मारि देव अजुग, उजारि देव इन्द्रप्रस्थ
बाहनि उधारि कै कलक कुल डारि देव

सेनाध्यक्षी प्रदुम्ने रहथु यदि सने संत है के उपेशो
जे जे गोदा विषयो सभ जन मिलि कै जाथु से युद्ध देशो
माक माक अवश्ये सयहुं अरिजने, बात ई मोर मानू
राखू थो वंश लजा अपन धुन वलें भद्रिका क्षीमि मानू

पडल डंका खोट युद्धक बजल तुरही शंख
मैथ्य बाहि कनार लमहन पडुं गि गेल असंज
निज प्रभुपद करय आपण मयहुं अरक उठाय
अनु सलर धर लकर जे मे जाय पड़ाय

दलचल पडल अकल लशकर बल
भटपट अरतर सज रण पर यल
सरकल कल द्य द्य नय नय शर
धर धर ललधर कह जय जय हर

गन मे खीन्य जे सजि चलै रण मरु लोँ उमरत
पड़े घेर नहिँ धीर नहिँ कोधहिँ रह बिन तप्त
तप्त तमकि पदहल बलितहिँ मेविनि दलकत
धरधरधमकत युधधुनि सुनि कल्लुप क्लृपकत
गङ्गो गरज दिगङ्गो तरज सुपथी भय मन
रजहिँ सुभक्त न पथी सुभक्त न सुभक्त के गन

भोक्तृभक्त चरको जतै कोधहिँ सखहुँ विसारि
रहुँ सौतल मति धीर नहिँ सुनि वसु अमल मुरारि

—४३—

द्वादश सर्ग

भी मुकुन्द लोँ विचार केँ बिसाह ओश मे
कोल-सर्व प्रस्त चित की रहैव मोश मे
छान दीप केँ मिश्रण देव वेग बात ओ
राग हेग मे मे के सखैव दृष्टिपाल ओ
पादथोक सीत कप भेल साहिँ काक मे
पाल बालको वसान धीरता वेहात मे
घड घड मार मार पाएहुँ - पुन चोर केँ
शीघ्र बडल बान्हि साव दुष्ट वंश - चोर केँ

साथकी ओ साख साखो गहो जतेक मे
धीहिँ गेल छान छान धीर को कतेक ले
सख अरु - अरु लोँ करिष दीर बात केँ
काम थोढ़वाह दीश कैल दृष्टि-बात केँ

बेल ले निदेश शीघ्रता कद धल् नहिँ
दीध पाएहुँ पुन केँ धक धक मेँ जहाँ
चोर दण्डीव जानि साहिँ बान्हि सायवे
पाल कोन धिन्न ले सुभद्रिका बोहायवे

याज याजनी जुकाउ होल ढाक गुल शी
रीर बाजि पुड पुनि मत्त से मतकुओ
धर ऊर पंथ में खुवेत से अकाश के
भापि देल सूर्यहुक तोर ओ प्रकाश के
गुथ-गुथ वीरि के लिपाइ मट भट से
धार क कटार के पधार मट मट से
अरन-अरनहुक रुद होभ फट फट से
बाज भापके धरीअ ओर भट पट से
धार भाप घोड़गह पार्थ के पुकारले
राम-धन-जात ओर ओरि के पकायल
विश्व बीरता बलान येह रुद कर्म सौं
कोटि कोटि भिक्ष तोहि ब्रीम काव धर्म सौं
वायवैक रूप सौं पदायते कि भारले
वीर शत्रु बीर नैन मे ने की लजाइये
जो रदीक ओर रुई मृनि ले ह वात सौं
घुरि हो मरुत युद्ध लाल-गुम्ह जान जी
पार्थ आंगि लाल लाल भेल मृनि बारि के
चट्ट पान के पुमाउ सैम्य के मिहारि के
क्रोध-रुग्नि आहुने समान वात बाज ते
के कोना सहे मका रखैन धन लाज के
जे यही यही विशेष विश्व ओर मानले
आइ पार्थ संग से समस्त युद्ध जानले
ओर बीरताक उग्र इ विनोक्ति लेन मे
- निमग्न नाहि निद्रा ओर भापि नैन से

केरि ताकि यान सौं मिहारि लेल सैम्य के
देखि लुपुटाक घोष भेल पार्थ नैन के
साथ सतायकी गयो समस्त आयु देखि के
बाजि के सुनाउ ताहि पार्थ ई विशेष के
वायवैक गुथ जान पार्थ संग युद्ध ई
गुम्ह सीम यवधोक भेल भट्ट पुनि की
सिद्ध सावधान के अंगल की पदायते
मूस माहि कोटि की पदाइ के उसाइते
माउ जाउ फीरि जाउ नीक ई कहैत छी
पाल देल ओश में कुयाउ की गहैत छी
धीक ने विचार युद्ध पैय सैन छोड के
हुद की पदाइ पायि छारि रुद्ध छोड के
सुनि साहब ओध युक्त बाजि के चढ़ाय के
ओरते वढ़ाय देल बाजि आयु जान के
उत्तरो कहैत थोक सीध जिस लाय के
बीरवैक वात देल पार्थ के पुनाय के
बीरताक यति में युवैक भाग भेल की
युद्ध बाज ताहि सौं विचारि बारि देल की
युद्ध आइवान ओर जंग मे देखाउ ने
यलके वित्त पदाइ आंगुरे उठाउ ने
पार्थ आयु छी नेना युभी ने विश्व रीति जे
ही समान में समान युद्ध-आइवान-गीति ले
देल मे समानता अहाँक बाप सौं रहे
दुध मुँह बाल सौं लहेत लोक की कहे

केरि भापु फोरि जाउ व्यर्थ कष्ट केल ई
श्रीति वंश पार्थ संग भद्रिकाक खेल ई
धीरु क्षात्र धर्म रीति देखि ली अहाँ तहाँ
व्यर्थ रारि ने करो विचारवान लो अहाँ
साम्ब भापु, पार्थ ! व्यर्थ बात की छुटैत लो
की कमे रहो यदाय केँ सला ठकैत लो
ले नेना ने साम्ब केँ अहाँ मने लगायवे
जे मिठाइ मूँद से स्वकान केँ छेदायवे
व्यर्थ याकयुख आव जान-युद्ध केँ लप
की उनीत जानि केँ सुभद्रिके निजऽ एक
आहि सौँ अवश्य युद्ध-अग्नि शान्ति जानवे
पूर्य श्रीति रीति पालनीय धीरु मानवे
पार्थ भापु, भद्रिका फिराय आव सेत के
मोर हर्ष-दीप मे पतंग व्यर्थ द्वैत के
वर्ण आव कालहक काल के ने जानवे
पार्थ दाय सौँ फिराय नारि-रत्न जानवे
साम्ब भापु पार्थ नाम चिरय दील बाज के
छारिका पधारि कैल तरकरेक काज से
चोरि केँ सुभद्रिका बखान बीरता करी
छुडिअऽहि पानि मे ने इनि केँ किये मरी
पार्थ भापु बाप छय जानि ने हजैत लो
स्वीय वंश शेष भाँपि जोर सौँ बजैत लो
सातकीक बुद्धि धीरु जानि केँ हटैत लो
चोर-पूत साधु रूप बात की छुटैत लो

सुनि साम्ब क्रोध रक्त भेल मुद अनले
छिथि के कमान बान कान मूल आनले
बहु बहु एक बूझ तीन बारि बाण केँ
एक संग से प्रहार पार्थ सत्य ध्यान कै
अरु शस्त्र विहारा अतेक साम्ब पाउ से
एक एक कै प्रहार पीरयो अनाउ से
पार्थ वे-परिधमे कमे निवारि देल आ
आन्त क्रोध सौँ निरान्त क्तान्त चित भेल ओ
देखि साम्ब आन्त रोध क्रोध बाद सैन मे
के बहैत आव से निहार नेम नेम मे
ताहि काल रोप सौँ गदे गदा घुमाय कै
कैल जे प्रहार देल पार्थ से नरनाय कै
होम विहारी गदो दशसनो चढ़ाय कै
गोल बोल बाण ताकि शान सौँ चलाय कै
कै रहु प्रहार ने धिलम्ब किछु मात्र हो
पार्थ बाण बात पाधि नाह ही क पात्र हो
आम आत अरु केँ गर्दो अजेय मान जे
आहि मे धिरोप सिद्धस्तह क जान से
ताकि ताकि शूल युक्ति सौँ प्रहार कै रहु
पार्थ युद्ध परिधेँ प्रखण्ड रूप मे रहु
केरि ली गदा निदा भेलाह फान फानि ओ
जोर सौँ घुमाय कै चलाउ युक्ति छानि ओ
मे गदा अचूक पार्थ बाण चोद पाधि कै
कैल सौँ गदेक गल मथ्य बात आधि कै

मोय अस्त्र नीरि आनि देल होय चोट हा
नेल नेतना विसारि भेल सोट पोट हा
आनि जाहि वक्त काल भरन युक्ति साथकी
काज मिद्धि मध्य होय सैह आनि बाधकी
हेनि के गयो अनेत सात्यकी बडाओले
भीलि दुइ बारि व्यक्ति नेतना चराओले
आनि नाहि जानि सागखी सुधारि अस्त्र के
पुनः रूप देल जोश मीय सैन्य धरन के
सागखी फेरन कोश बाहु आहु आय के
पार्थ सौं कहू कथा कनेक से सुनाय के
पल्लव वंश बीष नीच द्वारिका पधारि तौं
भाग स्त्रीय वेदा धार दुरत साथ मारि तौं
तोमरे उग्रय से बलाउ खूब ओर सौं
दूक दूक भेल लागि बाल ओ फटोर सौं
पेरि से विरान लख ताकि ओ बलाउने
पार्थ ताहि वाय मारि बीच मे खसाउने
पार्थ भापु की नेनाक कांहुके करेत छी
हुन हुन अस्त्र शस्त्र हाथ से लईत छी
जैत बालि छाव बीच खेत मध्य जाय के
ताहि की किस्तान-हाक रूप के बनाय के
सारणो लकोश बात पार्थ के सुनाउ ई
पेच काय पावि के बलो समस्त पाउ की
युक्ति पावि पैरहुँक नारा होय छांउ सौं
देन दृष्टि जान छांउ कंकड़ीक चोट सौं

भापु पार्थ, जान स्त्रीय शक्ति की वजैत छी
व्यर्थ हो प्रहार अस्त्र शस्त्र ने लईत छी
जौं समस्त सैन्य संग राम सुद ठानवे
तौं प्रवीणता अवश्य सोर किछु जानवे
जे जनेक युक्ति अस्त्र शस्त्र मे जनेत छी
के लिखऽ प्रहार से थिलथ पौ लईत छी
व्यर्थ वीरताक बात बात से छुटत छी
छी ने युद्ध-ग्रीव युद्ध-क्षेत्र ने लईत छी
क्रोध सौं उठाय भिन्वपाल अस्त्र आनि जे
सारणो बलाउ देल बल सौं भरान से
पार्थ कैल तपऽ राहु युक्तिओ विशाल के
भक्त बात केन देल के बयाउअ जाल के
व्यर्थ काल जाण ई नेना समेक संग मे
लाजि सैन्य ने पढ़ेद सुद हीक रंग मे
पार्थ से विचारि विन युक्ति वेद जानले
सारणीक अस्त्र साथि मोहनास्त्र हानले
भूमि मे खसैत ताहि घोर घोर भेल जे
घाव काम आतुरे उग्रय राघव लेल ते
चेतना कराए ताहि मुद अस्त्र धार ने
युद्ध हेतु धीर रूप उठते पधार ने
आनि आहु काम भापु पार्थ के सुनाय के
कोधहु क वेग मध्य नीतिन जानाय के
छी पिता क मित्र पूष भाव विन आनले
घोर युत्त धारि मारि की कुछठ ठानले

साहि व्यक्ति के बिकार कोटि काटि जानिली
जन्म मानुषीक भूषि कीट मुख्य मानिली
धीक ने मनुष्य को, प्रमाण बात मान से
जीवि के कलंक बंधा सूल स्वीय कान ने
जौ ने दो फिराव आइ भद्रिका ई मानवे
भाव तात सिद्धताक ध्यान ने ने मानवे
देव चोर दण्ड ताहि ताहि सौं छोड़ायवे
की मनुष्य देह पुढ चैत्र मे गमायवे
सुनि पार्थ भापु आव आव व्यर्थ थीक ई
जाइ कीरि मोह काम सानु नोति नीक ई
पार्थ पार्थ - विद्धों हुको सुभद्रिका रहै
वीर विषय मे कहाँ हठें छोड़ाय से लहे
काम कोपि तानि बाण राम सौं चलाय के
होय जाहि युक्ति जीत धन से लगाय के
सिद्धांत अस्त्र शस्त्र मे रहै जतेक जे
त्यसि मोह के रहू प्रहार सौं कतेक से
बल जे जतेक से ने काम ताहि जायले
मानि के अथक ताहि पार्थ ई उचारले
कृष्ण पुत्र मध्य वीर की अयस्य मानले
अश्वत्थक सीख नीक भेल ताहि जानले
भापु काम, युद्ध शास्त्र मध्य बल पैल जे
आइ एहि काल मे समस्त व्यर्थ भेल से
के प्रयोग अस्त्र शस्त्र ठाव ई देखैत की
लाज सौं ई व्यक्त बात-बाण के सहेत की

आव ताहि काल युद्ध ई निवृत्त जानवे
घोर इन्द्र हरि जे प्रयात प्राण ठानवे
आतमा एतैं ओते अयस्य मोह पाओते
लोक देवलोक मे कतौ त कीर्ति गाओते
भाषि तानि तानि बाण जोर सौं बलउ से
बल जीतपाक जे दुह स्वचित लाव से
ने निवृत्त होय अस्त्र काम पार्थ हाथ सौं
धार वेसुमार जे सहेत वाम माथ सौं
चोट जे दुह दुष्टक से दुष्ट बचाव जे
युद्ध बालुरी दुष्टक विन्य भाव लाव जे
देखि ई दया दुष्टक जुन्य देव - रामको
काव्यकार धारि मौन छोड़ से बजानयो
ताहि कल दूर धाट मध्य उल धूर जे
भूषि अम्बरो समस्त धूम रूप पूर से
युद्ध सौं निवृत्त जे दुह तौ निरेखले
की विधिध थीक ई सुविषय ताहि पेछले
देखि के पताफ विन्ध लेल ताहि जानि के
हस्तिनापुरेश हीक सैन्य आव मानि के
यादवीय सैन्य हर्ष मानले अपार ई
शस्त्र के जरैत आधि गेल धारि धार की
हस्तिनापुरेश ई समाद पंथ पाषि के
दुष्ट पार्थ भद्रिका चोराउ चुप्प आधि के
ओठ दाँत दाबि ओथ सौं करैत लाल मे
ज्याह साज त्यागि ओ बल कराल काल मे

बाद मे अधीन राज्यहुक सैन्य संग ली
ई बिचारि शीघ्रों सिंघा से उमंग पै
पार्थ एक मात्र अस्त्र शस्त्र सैन्य हीन के
की शिखर्य मारि ताहि ली ने नारि दीन के
पार्थ हेतु प्राप्त भेल वक्र काल आत्र जै
नित्र कृष्ण संग बान शत्रुनाक भाव सै
ई सुगंग शत्रु सायबाक लोक नीक जै
शोभने स्वकाज साधि ली उचीत थोक सै

आदि भीलि सैन्य सैन्य मोद चित्त पगले
दुष्ट हेतु धिरोष जोश जोर आगले
दृष्टिनापुरेश शीघ्र काम क निवारि कै
शोध वेग मध्य देल बान ई उचारि कै
ई कुकर्मिणी कोना कते कहाँ सौं आत्र कै
जे समर्थि देल मोहि लेल से योराय कै
हय तीं दृष्टाशनेक हेतुग तुलाउ जे
आधि कूर काक दाघ पाबि ली पनाउ से
वान बीरताक दुक्त पार्थ सै सुनाउ से
नोज ताव दैत जोश जोर कै जनाउ से
दुष्ट ! अत्रिका विहाय इन्द्रमस्त्य माग ने
अर्थ आय युद्ध सैन्य मध्य प्राण स्थान ने

पार्थ भापु, की शिखर्य मध्य की लटैत छी
व्याह हेतु आदि युद्ध मध्य ने हरेत ली
धरि देहि हाथी ने लाज आय देह मे
थीक सौं इनीन धूरि जाइ घृति गेह मे

खेलि बारा दास भेल ताहि ई गुमान की
जे बिराट धृत्य कृत्यमार ताहि शान की
देत गेह सौं भिकारि ताहि लीं बिसारि कै
चोर गूह चान रूप भेल आय धारि कै
जरा देश देश भूप दर्प सौं अधीन कै
विद्वान बीर बाहु शक्ति चित्त मानि हीन कै
कीरवीय कृत्य ई ने जान के लहान मे
त्याग रंग-भूमि भाग राख धाय ध्यान मे

आदि आदि लाल भेल कीरवेश कोष सौं
गेल . वैर ताहि पूर्वहुक खो बिरोध सौं
तानि जान शान सौं कमान मे बढ़ाउ से
एक दुष्ट लीन चारि पाथों बलाउ से

दृष्टिनापुरेश ई निदेश देल सैन्य के
पाण्डु पुत्र मध्य पार्थ काँट धीक नैन से
आइ ली भने फटक भाइ सौं भेलाह ई
मार मार शीघ्र मार माभि कै सलाह ई

छुनि से निदेश सैन्य शूरद शूरद पाओले
से समस्त अस्त्र शस्त्र साधिकै बलाओले
पार्थ सौं . निवारणैक चल चित्त आनले
कै प्रहार स्वीय अस्त्र घोर युद्ध आनले

सज्ज कीरवीय सैन्य युद्ध मे पदार ली
पादवीय सैन्य . अंग मे उमंग भरल सै
जंग बीच अस्त्र भीलि कै दुष्ट बलाउ जे
आदि जापु संग भेल रूप कै जनाउ से

एक दीश देखु वीर पार्थ एक माय के
 अन्य दीश में असंख्य सैन्य युद्ध पात्र के
 एक संग जो कोऊ अस्त्र के बलाउ से
 पार्थ युद्ध थातुरी लखाए के वचाउ से
 आं कतार बाण्डि बाण्ड न्यूह के वलाव जो
 पावसैक बारि दुन्द दून्द के लजाव तो
 घोर युद्ध ठातु शत्रु के करे बखान से
 सव्यसाचि पार्थ माह ने बिलम्ब ध्यान से
 धनुरहास जे बमबक चक्क मक्क देखि के
 बिज मध्य बंचलैक रूप लोभ लेखि के
 मेघ गर्जमान शब्द बाजनी जुभाउ से
 प्रचरास मानवे शतदिन्य बलाउ से
 के करे बखान जो दुद्रक इन्द्र देखि के
 राम रावणैक युद्ध तुन्द तीव्र लेखि के
 हो दुष्ट दुद्रक अस्त्र शस्त्र बल ब्यर्थ जे
 शत्रु - बाद बसरोत्तरीक हो समर्थ ते
 बाजि बाग बारि शत्रु चोट रोकि लेवि से
 के प्रहार बाण धीरि सैन्य मारि देखि से
 मध्य अजुनैक ई प्रताप देखि पाओले
 ते ने विराम तीन काज के पुराओले
 पार्थ व्यस्त तीन काज मध्य दाव पाथि के
 कौरवैरा शस्त्र चोट लातु बाहिं आधि के
 वीर पार्थ नेतना विसास ताहि शूल मे
 जीति लेल जीति लेल चोत शत्रु कुल मे

दीश दीश मार मार दुष्ट पार्थ घोर के
 कौरवैरा सैन्य के सुनाउ शोर शोर के
 देखि के अचेत पार्थ, एनि जो निदेश के
 व्यस्र दानको बहुत बिलो फलेरा मे
 भेल हा ! अकर्म भेल ! दाहको बखारले
 बन्धनो बिलुकि हेतु बल जोर हारले
 लाज - धर्म इन्द्र - युद्ध व्यस्त भद्रिस्त रहै
 पार्थ के बचाउ ! हा बचाउ !! दाहको कहै
 के बटा घमण्ड शोर सैन्य सेव घेरले
 देखि कह बाग दान दावि बाजि फेरले
 भद्रिका करे सुओचरेक बाण के रह
 ले सुगन्ध बाणु शाल पार्थ होरा के कह
 "कोह ! आइ हाय ! एक सारथी ने पाओले
 ते बिलम्ब शत्रु - सैन्य बाज मे लगाओले
 जो रहैत सारथी सुदृढ एहि काल मे
 बात काल हो मे नादा शत्रु तातकाल मे"
 "नाथ ! आज सारथी अभाव बिल आतु मे
 घोर युद्ध हस्तिनापुरेश संग ठातु मे
 नाहि बुकि जीति होय अस्त्र के बलाउ मे
 सैन्य जो समुद्र तौ अगस्त मे सुखाउने"
 बाग बाणुको समुद्राह भद्रिका कहैत ई
 पार्थ के बचाव देल काल सुनयत ई
 सारथी किदा सिखाव मोहि माइ देल जे
 आइ दिव्य काल युद्ध मे सहाय भेला से

दान थीक चिन्हीक प्राण पाणि ले जिये
 मान हेतु प्राण आन मानि दान है दिरे
 मानवान तुच्छ जान जान है जहान मे
 मान मान पैच प्राण आन आन ध्यान मे
 सृष्टि मे प्रकृतिहीक पाणि है सहायता
 पतङ्गपत्र प्राप्त होख सत्य मानु है कथा
 युद्ध व्यस्त मान होकि पार्थ भान्त मानि ली
 भद्रिका सहस्रिका जितेक योग जानि ली
 पार्थ हर्ष मानि है असूय युद्ध ठानले
 मैत्रि के कमान बाण शत्रु सैन्य हानले
 खेल श्री प्रह्लाद तीर तोषते घनापनी
 ने विलम्ब हो संहार शत्रुहीक जे अपनी
 युद्ध सैन्य तेन तक बाण हाथ धारि के
 रोक होकि पार्थ लक्ष्य पूर्ति के विचारि के
 वातुरे बलाउ जाति शत्रु लक्ष्य टारि के
 पार्थ विच जोश बाढ़ भद्रिका निहारि के
 वातुरी बमुक बीच भद्रिकाक रोषि के
 ही चक्रि बचला बलेत मान देखि के
 शत्रु-तीर, पार्थ, जाति के ने क्षमि पाण जे
 पार्थ लक्ष्य हो ने व्यर्थ जाति श्री बलाच से
 अर्जुन बाण काट गुरह लह लह जे
 भूमि मे लसे करत शत्रु महु महु से
 भीति लह लह युद्ध क्षेत्र लह पट्ट हो
 भूमि भूमि भूमि मे लखेत महु महु जो

तीर तीर वातुरी बलाउ सत्र सत्र के
 लानि शत्रु हो प्रवाह रक्त पत्र फल के
 युद्ध क्षेत्र कष्ट मुष्ट लागु उम मल को
 जोर जंग-रंग मध्य शत्रु पत्र पत्र हो
 पार्थ ली उदय मे प्रवृत्त रूप पेल ली
 अल्प काल मध्य शत्रु सैन्य नारा कैल ली
 सैन्य शत्रु मुष्ट क्षेत्र देखि चित्त आन है
 शत्रु युद्ध के किसान कटि के लसत की
 हस्तिनापुरेश स्थीय सैन्य नारा देखि के
 भीरु है प्रवृत्त शत्रु चित्त मध्य लोचि के
 खेल हाथ बाण पाण लानि के बलाचोले
 लक्ष्य पार्थ ताकि मार जे विलम्ब लाओले
 वीर वीर युद्ध मे भिद्यत भेल रोष सौं
 हो प्रहार क्रोध युक्त कस्त शस्त्र कोल सौं
 मार जो बचाव मे युद्ध रङ्ग वेहात ली
 हरि जीत के कोना विचार लाहि काल मे
 क्रोध सौं कराल काल रूप पार्थ धारले
 लानि बाण, सारथी शत्रु हयो संहारले
 हस्तिनापुरेश होय मध्य सोच गाढ़ ली
 सैन्य युद्ध भेल चित्र हीक रूप लह ली
 पार्थ मातु "आज तीर श्री गुमान भेल की
 भद्रिका विवाह होसले देखाय रेल की"
 सुनि ग्लानि-दग्ध रोष सौं गदा बलाउ से
 से निवारि पार्थ पूनि गाछिबे बलाउ जे

तीव्र तीव्र तोर मात लक्ष्य के हलाह के
 लागि कौरवरा संग संग रक्त पाटने
 रूप तासु ताहि काल देखि चित भात हो
 रेल सौं गरीत गेर धार थोक जान हो
 ओ कठोर चोट सौं खसू मही मे आधि के
 गाछ जै खसीव भंगवात भोक पाधि के
 हाय ! हाय !! भेल हा अनर्ध भेल भावि के
 होम सत्त्व दंडि ताहि लेल कोइ राखि के
 बेति ओ अचेत होधि लेधि आखि मूनि के
 राखि हीन भेल हो न याजि बाग लूनि के
 हिम्मत देराय गेल देखि कौरवरा के
 यत्र तत्र सैन्य भागु जांकि युद्ध देश के
 देखि दोष सैन्य कलेश कलान्त कौरवरा के
 यान मे नड़ाय शीघ्र भागु स्वीय देश के
 अज्ञ भक्त रक्त धार लख पख धाय ओ
 लाभ हेतु आवि जाधि मूर के मगाय ओ
 भद्रिका इसास होकि बाल राखि दिति से
 पेसु माणनाथ नेह भेन पन्थ भेलि से
 वाह चीर बालिका ! यखनु पार्थ प्रेम सौं
 मान संग प्राण भाइ राखि लेल ऐम सौं
 युद्ध क्षेत्र मे शत्रुह रक्त हीक भेल जे
 ताहि सत्य दण्ड राखिओ बहैत गेल से
 लारा पीठ काक पेसु देखि यह मान हो
 सुद नाथ के बलाय केवरेक जान हो

युद्ध युद्ध दूर दृष्टि देखि पन्थ पन्थ के
 प्रावि पावि मूरि भोज लाय लख लख के
 कुकरो स्वर्ग मे कटार कल्प ठानले
 होम परत भाइ भाइ बाप केल मानले
 श्वान श्वान युद्ध मे प्रवृत्त भेल देखि के
 स्वीय काज साथनेक काल काक लेखि के
 लाय लख पेन सौं (वर्ण है युध्द से
 भाइ के लक्ष्य के पिशून द्रव्य पाय जे
 जौं राखी रहै हने तत्राधि एक पाधि के
 आति हेतुई लखै शृगाळ दूध आवि के
 होम दण्ड युद्ध जिह राखि ताहि कादने
 लेल के ने खोज रोज मारि मारि कारखी
 इतिहासपुराणक हाल देखि लेल जे
 पादवीक कोष सेम धेई राखि देल सौं
 हारि देखि हारि फाम बाह के नड़ाउने
 पार्थ सौं लदेक हेतु जोध युक्त बाउने
 देखि ताहि पार्थ भागु, व्यर्थ की अबैत छी
 दुर्दशा महारथीक भेल से देखैत छी
 आखांरो कलोक युद्ध युक्ति सीखि लोभ जौं
 जंग मे महारथीक संग देग दीम सौं
 फाम भागु, वाजि देल बात के पुरायवे
 मे मनुष्य ताहि सौं कि चित के किरायवे
 होउ मायधान जाय बात की करैत छी
 आइ सौं जिवैत हारि मानि ने सकैत छी

निद्रा जगति पार्थ अस्त्र बाण केँ सम्हारि कै
 काम जे बलाउ बाण देल से सँहारि कै
 भाइ व्यस्त देखि शास्यकी अधीर भेल जेँ
 हारिका क हेतुयेंँ क्रियारि शीघ्र देल तँ
 जाय से सुनाइ रोहिण्य केँ सुमन्य कै
 शीघ्र काम केँ बचाउ युद्ध-क्षेत्र जाय कै
 लान्य सारथी गद्गो न युद्ध बीर मानवे
 हस्तिनापुरेश हारि गेल देश जानवे
 देखि कै असंख्य सैन्य पार्थ अग्नि अस्त्र ले
 कैल ओ प्रहार बाण अस्त्रहीन सँग के
 भस्म भेल सैन्य ग्राम संग वस्तु जे जते
 नगरहीँ क मृत्यु मौच भाष की कहु कते
 एक भूपरार देश हेतु लालचो धरे
 खान प्राण सँग जो बिनारा कीतुको करे
 हे विधे ! कराल युद्ध-अग्नि मे भिर्भल की
 मेदनीक दत्त व्यास ई ने शान्त हैम की
 प्रिय थीय भेल चेहूँ एहि रूप आहवो
 एक सँग मे असंख्य सैन्य जुगि धारवो
 पार्थ पार्थ युद्ध मे यपार्थ ई कही सही
 पार्थ सज्जन पार्थ बीर खान मे केओ मही
 युद्ध-ज्वाल युक्ति-नीति-नीर सौँ मित्राऽ जी
 जाड जाड काम केँ अवश्य केँ बचाव तँ
 मृनि रोहिण्य केँ अपार क्रोध भेल जेँ
 लाल लाल अँखि ताकि बात भाषि देल तँ

यान-अस्त्र-दस्त्र हीन छुट पार्थ भाव जे
 साहि संग मे रहै न एक गोष्ट पात्र से
 ई कोना क जीति लेल हस्तिनापुरेश केँ
 कैल की प्रयोग सिद्धि-मन्त्र केँ निषेध केँ
 साध की सुनाउ, यान कुण्डलीक पात्र से
 सारथी सुभद्रिका सुदंग सौँ बलाउ मे
 गारिहवादि अस्त्र दस्त्र निध्न साहि संग मे
 पार्थ केँ विलम्ब कोन शत्रु सैन्य संग मे
 मृनिदहि कृष्ण केँ वजाय लेल भट्ट दे
 क्रोध युक्त बात बाण ओ कनेक वट्ट दे
 पंक्ति पार्थ सौँ ई कहु कि सोइ पात्रोले
 बंरा-प्राण-कीर्ति केँ अचेत येंँ डलाओले
 थीक तौ कुक्षय ई अर्धक कैल जानले
 मित्र हेतु श्वीय बंरा मे कलंक आनले
 दे रथो पवाइलै सहायता ई कैल की
 फोम भीति शास्त्रहीन नीक पथ धेल ई
 बंरा मे कलंक भेल युद्ध मध्य दारयो
 बीर रोहिण्य केँ अखैन ई पराभवो
 जी ने युद्ध मारि कै सुभद्रिका छोड़ावने
 तौ किसे जियैत भाव मुँह केँ देखावने
 काइ पार्थ पक लेखु इन्द्र भूमि भाषि कै
 की चुनेर की यमो निदेश ताहि पात्रि कै
 एक एक कै सभेक नारा भाष जानवे
 पार्थ प्राण नारा सौँ इदँक शान्ति सानवे

(१५६) काल मान साथे कृष्ण सुनि गेल है
 हेर सख देग भय 'सम' घानि देल है
 जो अहाक हौसता सहायता प्रतच्छ मे
 हो करैक, लौ बलू लखूने ताहि पक्ष मे
 कृष्ण मे तिनोन बाव मरुते तुनाउ है
 स्वयं कृष्ण, शोध मेने, भाइ ! चित्त लात की
 दोष मोर मानकात येह रूप लेखये
 पाठ मे पकैत पाक - पात्र फोरि फेरये
 निज मानि आनि अद्रि दूर बास देल जो
 जो ताहि आदर्श कही वजाय लेग लौ
 ये कल्पित नय के प्रवेश मोह केल अ
 पक्ष काज मध्य मूल कारणे लौ भेल जो
 मेवनेक मोड़ उस्तार्थक जानि के अहाँ
 लौक की विचारि के पशउ भद्रिका तहाँ
 नान धीर पायना कुलाङ्गना पठाये के
 हे आर्तक हृदय लौ कुग्रह भेल आर के
 आर्त काज लौ आर्तक केल मरुतान है
 ताहि हेतु भेल जान पावि शुभ्य धाम है
 पार प्रेम-वश्य चित्त भद्रिकात भेल लौ
 जो प्रत्यक्ष मारणीक कारण - भार लेलि लौ
 पार्थ देश जाधि जानि यान ताहि देल जे
 बात जो विचार लौ अहाँ समझ भेल ये
 लौ अहाँ तथापि आव मोहि दोष दे रही
 श्रेष्ठ जानि थाल मानि दोषिए रही सहो

भेल है क्यतीत, वर्तमान के विचारये
 नोक एहि काल कान पंथ पैर भारये
 जो सदाह ठानि पार्थ प्राण के हरेत छी
 भद्रिका सोहाय प्राण - नारा सौ उरैत छी
 पार्थ संग पुष्ट मे अहाँक संग जायये
 बात है कयस्य ऐहि काल मे सुनायये
 विश्व मे बली कहाय स्वात नाम गान जे
 भोगि नीक शोक राखि ली मिरक शान से
 पार्थक है प्रताप स्वात देश देश मे
 जीत लेल जैरही अनेक ओ नरेश मे
 साजि शंकराक संग संगरी ने हाह ओ
 जे समच्छ पुष्ट ठान साहिके पद्याओ ओ
 कोन त्यागि के विचार थीर पुष्टि सँ करी
 आपुने लौ कोयहीक धर्म मध्य ने पवी
 जीत हारि होअ जे सुभद्रिका मे पाणये
 मे बहीत सौ विहीत परि मोह आपुने
 ने विरोध पैल यान पार्थ लौ चदाओले
 पुष्ट वीर सारथीक काज के पुराओले
 पार्थ प्राण मारा देखि से कि प्राण भारती
 नारि धर्म धीरते कवश्य ओ निराहती
 थीक है कलंक, व्यर्थ बात की कहैत लौ
 क्षात्र - धर्म, स्वीय पंश कृष्ण, ने तहेत छी
 लौ सुभद्रिका विवाह पार्थहिक संग हो
 लौ कि नाज बंध रा न जीति किहु भंग हो

पार्थ वंश श्रुता अवश्य युधि सेतु
पुत्रवो विचारि कै कुटुम्ब ताहि कैल तें
पुत्रि वैनवें वलें प्रशस्त्य पार्थ जानवे
को वरो विशेष योग्य ताकि आनवे

पानक प्रशस्त पन्ध्र स्वच्छ सभरित्रता मे
धीरता वनाई विश्व विजयी बखानवे
या १३ शुभावनो ह कन्यन छोड़ान देल
अर्जुन अवपन की मन मे ने मानवे
कौरव समस्त सैन्य नृपति विराट संग
पुत्र रवि भेल जे दशा ह्व-विस्त आनवे
पन्ध्रक विहीने दीने देश दिस, देल डेग
दुष्प्रावन पार्थ मरण पेह्र भेद लानवे

मुनि तेज माधव मुखक बाणी रोहिण्येय सुविस्त मे
मे मर्ग सौं विचारि बहु विधि रहल कोच निवृत्त मे
कोनामि अलाव चढ़ल भीषण मारुहोक स्वरूप जे
शोकप्रसन्न वचन कहि मो भेल शक्तिरूप से

कह्यो पन्ध्र अर्जुन ई सम्मति पूर्व समय नहि देले
हम १४ दुष्प्रावन पर उलग मानि हृदय मे लेले
विष पटाखोल, आबि कहल से ली बरिशाती ओला
त्रिभि विराट के जान आबि कै मारि खण पर जैता
पुनः १५ ककरा के कहइइ कण्ठ कहल ई जाने
नीचक सौं पेह्र देखइत छो जग जन कन अलि ख्याने
की मुनः १६ पार्थ सौं कौरव केतु हेतु मन आनी
हम १७ वन विभव जुड़िहुँ मे हुनका हीने मामी

तेज मे तरधि बल बाणु सौं बाधि युधु
धीरता धरनि सन अवश जानु
भीष्म सौं सिंगल निज प्रशक्त पालन किया,
पुत्रि शुभ शुभ सौं तुलित मान

माइ मे भक्ति लघुता करै लक्ष्मणहि
शत्रु दल दहन दहनक समाने
पार्थ सन पार्थहिक देव उपमा उचित
जानु जग तीनि नहि एहन जाने

कहल बलभद्रो बिलसि फट्ट कण्ठ की कर्ताय
नहि बुझी एहि काल से की आबि गेल भविष्य
अर्जुन जे किछु उचित जानी करु सैह उपाय
रहै निज कुल लाज पुनि ई राखि जाय भेटाय

मौन पारि किछु काल सोचल मनमोहन मनहि
भायल वचन रसाल खाल-जाल जनु जल पखल

मद जाउ शासकी अर्ह कहि देन पार्थ कै ई
की मित्र भाव रखता करताइ शत्रुता को
जग बाधि वैभवो बल नहिणें बनी शुभानी
की मित्र पालको सौं समुचित लड़ा खनी

जो लोक कौरवक बल धीरता बखाने
मुनि लागु धीरता मे जनु ठेस बिल माने
हरि लेल जो सुभद्रा १८ राख देतु जानी
आनेक दोष आतक सिर पर चिपेल माने

विनु दुःखे विषये पद देने पड़े पराभव भारी
मित्र मानि करि भाव करव हन नहिँ उचित बिचारी
दुःख-जन-प्रेम प्राण सह छाड़ि सन गहिँ सन अनुमानी
दिन खसला पर तब छाड़ि मम सम लफरा केँ जानी

पाइव दुःख जन अनु जानधि कृत चीर अभिमानो
मुखान्तर दशां दधि केँ नख पर राखल गिरिवर आनी
वतनदरक बल विरय विदित जे की नहिँ हुनका शावे ?
देगो सौ पुरचलि करव सन दुःखिज हुनक बलावे

रही अजना अजन यनन ई साथ परनपर राखव धीक
अर्थ दुःख नानधु सम्पत्ति ओ मानधु रक्षा नीति पुष्पिनीक
फानि केँ आयधु यत्न करव से जेँ पुरि जाय हुनक जेँ आरा
केँ हूँ मम पाव फला से नहिँ जे नहिँ भिन्नक कर विश्वास

मानहु मम बलाए कदर्थ आत्र ओ तनु लइधु
लायधु प्राय लेआए भिन्न हमर मन नानि केँ

मानधि सकल पाव मुनि लेव
दूरवर दीहिँ दुःख - बल गेल
दुर सौ सीमाहिँ देल देखाए
मेल पताका हाथ उठाए

दखिनहिँ कजुन धनु धए देल
दसो बाण समरिष लेल
गकड़ पंखि जनु पसरल दीस
कल्पित कन समदल सन शेषि

सात्वकि आवि कहल सम्वाद
शान्त भेल ततछनहिँ विवाद
राए परिणाम ऐह नौ भेल
विरो देल विपदा भी गेल

सब जम सर्वहिक मुख केँ ताक
भी गेल सेना लयधुँ अयाक
बलु चहुँ होएल संगल रीत
दाम कवीरक उनदल गीत

जे सेना धा विज संग्राम
मे सन्ध्यातो भेल परिणाम
मोक्षक धा लेल मोड़ अशेष
पार्थक प्रति भेल प्रीति विशेष

हाथक कन्धन देल खोलाए
सावधि मे पुनु चहुँ हरपाय
विधि विचित्र फरतव केँ जान
हो निमेष मे आनक आन

भीकधुक कौतुक कला कही कोना केँ आन
प्राण हरण प्रण सजि करधि दहिनांक सनुमान

॥ इति हादश सर्ग ॥

द्विज क्षाण्ड पाण्डन सदा जते
शत्रु मन्दिर रूप अनूप सते
बहु रत्नहि सौ निरमाधोल से
'रत्नाकर सीध' कदाभोल से
नृप 'के' तहें आशिय दे फल ले
तहें नमहि पत्र समर्पण से
लिपि बाँधनि सोस्तुक मोर लह
नृप बाह्य के सन्मानि रह
धलरामक आपद मानि वृपो
मन मे बुझि ई आदेश कपो
निज वर्ग दजाय मुगाभोल से
द्विज के सतकारि पठाभोल से
अभिलाष बरातक वस्तु जते
भमवृज दुरन्तहि भेल सते
बहु भाँतिफ बाजन बाजि रहै
नट भाटक वृन्ध विराजि रहै
कुलदेव गुरु पर पुत्रि नते
लखि लम्बा शुभोदय शास्त्र मते
बहु भूप सरूप अनूपहुँ सौ
बधि मातु पुरन्दर रूपहुँ सौ
बहु न्योतल भूप अनेक जहाँ
अनुजोषाख सेवक वृन्ध तहाँ
परिआत असंख्य बखानत के
मखताबलि के गनि जानत के

गति शीघ्रहि पंख सिधारवि से
उपराम विलम्ब ने लाचवि से
उमड़े अभिलाष प्रवाह तहाँ
मिलवा दित उत्सव सिन्धु जहाँ
किछु वृद्धि सौ लखु द्वारनती
जसु रोभ सिंगारमयी युवती
टक लाच बरात निरेखत में
किछु मोहन - वन्ध निकेतन मे
परिआतक बाजन बाज जहाँ
मुनि पाओल से पुर लोक तहाँ
परिआतक साज समारल से
मिलि के नृप नाम सिधारल से
सब साजि चलू परिआत तहाँ
कत के रहु कौतुक पंख तहाँ
मुह मीलु प्रमोद प्रवाह गती
मुपमाधि प्रवेश, द्वारनती
गत गज गुनू मकरादि तहाँ
बहु खेल तुरंग तरङ्ग जहाँ
तट द्वारनती धरि जाए किरै
फिरि के तहें हेतुहि केरि किरै
बहु पाधिक के लखु जीन मनो
करिणी - रथ सैह तहाँ तरापी
बहु मोदहि बाजन बाज जतै
धिक शब्द समुद्रक मातु ततै

अरिभ्राति बराति नल मुख सौ
मुद तन् वन जे कह के मुख सौ
बहु आदर सौ पहुँचाव तहाँ
जन - वासक सजित धाम जहाँ
सब सौ मिल पार्य मुदे मन सौ
शिथि से वन के अयलोकन सौ
निधि सिन्धुक बीच हंरायल से
तट भाग्य तरंगहि आपल से
कुशलादि परस्पर भेल कते
दुरयोधन बुढ़ कुठाठ जते
सुनि धर्म प्रसंसल पार्य तहाँ
हुल कीर्ति कलापर मूर्ति जहाँ
रूप धाम महोत्सव राजि रहै
मठ नाचव बाजन बाजि रहै
कर कौतुक कौतुककार कते
लखि मुग्ध रहै तहाँ लोक जते
रनिवास हुलास प्रवाह कहै
भत कौतुक मे रत नारि रहै
गिरिगाइनि सोहर गाव जहाँ
रह रूँजि मनोहर तान तहाँ
कत नारि कुमारि छिगारि रहै
रचना क अनूपमता के कहै
पट भूषण सौ बहु भाँति सजे
रति हल रतीहु न ताहि जने

सखे संग सिधाठ महीप - सुता
नखतावलि से नलु चन्द्र यथा
सभ आइति गौरि क धामहि मे
जहँ पूर अनोरथ कामहि मे
गणनाथ क जाइ क जानहि सौ
रूपजा कह पूजन आनहि सौ
कर-बढ़हि शीश नवाभोलि से
निज आरा इदेक सुनाओलि से
जग भारि महामुख मालु एते
पति पुत्र क प्रेम प्रसोद रतें
ललि से मुख मे नित मग्न जहाँ
बर मादव की हम आन तहाँ
करुणामय स्तोत्र सुनाओलि से
मन मे इह आरा लगाओलि से
मुद सौ फरकै हग धाम जहाँ
मन आनन पूरत काम तहाँ
कप पूजन ओ मिल गोह नेली
हुल रीति क सुख अश्रुत भेलो
सखि कीधि - विधान पुराब तते
कहि व्यक्त क बात सुनाव कते
सुख लम्ब विवाह क सोधित मे
बहु पंडित बोधित सम्मल से
जत दान विधान क बस्तु जहाँ
बलदेव कर समवृत्त तहाँ

मुद सौ पर आनक हेतु बख
हरि, राम बरतहिं आबि मिल
सजि साज समस्त समैक भते
वर रूपहिं पार्थ सिधाह तते
पहुँचाओल सै हरि द्वार नतै
निधि पस्तुहि छै तिय आउ कते
परिलै प्रमुदे पुर नारि तहाँ
कत पौनुक गानहुँ मस्त मदा
हंसि ज्यङ्ग कवा कर कृष्ण प्रिया
कहु चोरहिं देख कि राजधिय
बहु लोकक बात कोना ने कर
जग धीन हँसो सहधो हँ बर
बहु गीतहिं गारि मुनाइ तहाँ
वर पार्थहिं मरडप लाउ जहाँ
नृप पूजल भूषण रत्नहिं सौ
जस्त शास्त्रक रीति प्रयत्नहिं सौ
बहु भाति पुराओल पूर्व किया
मधुबा पर आनल राजधिया
छवि देखि देखि दिधि देव-तिया
तिहुँलोकक नागरि लाडु दिया
पुति दम्पति विजय देखेत तते
नपमा रति कानक होष कते !
उपमेय विचारि नौ ताहि कही
तन छीनहिं होनहिं मौन रही

तनया कर पार्थ करोपरि कै
हर फूल फलो जल सौ भरि कै
नृप दानहिं है मुद पाओल जे
कवि सौ नहि आप्ण गओल से
३८ पार्थ कनी भगिनी हरि जे
गुण आकर है गुण आगरि से
उदवाहक बन्धन जोषि रहै
विधिओ नमुदेनक भाव्य नहै
वरियातक मोद बखानल के
दिनि दुन्दुभि देन बजावत जे
सभ आगतहीन समावर कै
रह लोक सोहागक आशिय दे
दग दम्पति भै एकवा चकरी
पित बाह मिलैक समै भल है
गुरु शाज निशा अवरोधल जे
अभिलाष अछेत न मोलल सै
हुतु कैल किया हपनादि फले
कुलदीपक सत पशदि जसे
भै गेल विवाहक पुति किया
तहँ दम्पतिनक जुड़ाव दिया
नृप भै कृतकृत्य महा सुख सौ
नच गद्गद ने निकसे मुख सौ
जग माचक तोप करु धन सौ
जन एक भै निर्धन से जन सौ

पटशाल दोशाल गने ने तहाँ
रतनादि सुदायधि भूप जहाँ
जल ने बधि ने होखी ने कई
महिपाल क ई वरा गावि रहै
गमिवाम महोत्सव भीवि रह
सुख सिन्धु क दिव्य प्रवाह पद
लक्ष दम्पति भागारि युध साह
पहुँचाओल कोवर रोह जहाँ
किछु व्यक्त कथा कर कृष्ण - प्रिया
हँसि कै पुतु पुछ कह रसिया
भए नारि विराट जोसै अपने
राखने रहि लाज कोना मरने
पदा तक परे पुर नारि दिया
कहु जोपल की बूझि भूप धिया
पहि वंश समन्वहि विषय यशी
नहि तीं जग दांष्ट पूर्ण हँसो
गुरु व्यर्थ कथा कहवे कि कर
अपनीलहि जेँ सद्दे इ कर
कुल मध्य अहाँक कुलीति जतै
तई चोर क काजहिँ लाज कतै
सुनि उत्तर पार्थ कहु हँसि कै
मति ई मन भेल एतै बसि कै
अहँ कृष्ण क अन्न खोओलहुँ जेँ
विपथी पथ मे पद देलहुँ मै

कत हास विनोद कथा कहि कै
किछुए जन कृष्ण प्रिया रहि कै
उपदेश कर कए आनुरता
अलथाक जनाए कै आनुरता
मद मत्त अली रस - लोलुपतेँ
कर, कंतहि कौतुक कूर कते
पुनि आवि सिरीष प्रसूनहिँ से
बद धारधि तीं अति धीरहिँ से
धन पाधि कमे कम भोग करी
नहिँ उल्लस कर्महिँ धिक् धरी
चिर काल सुखी रहि होइ यशी
गति आनुरतेँ जग मध्य हँसो
धन स्वीय सदा रहते घर मे
अति आनुर मै म. पक्षी भ्रम मे
अहँ नीति हृदे विच राखय ई
रस आव धिरोपहुँ भाषय को
कहि भेलि विदा, गृह कृत्य भेने
नथ दम्पति मोद समे मिलने
कत लाज मनोभष इन्द्र रथे
विष - हीतल अद्भुत खेति मरै
नथ भागारि नागर सन्नम लीं
विरतो रह प्रेयसि अकम लीं
कर भाव प्रकाशय कद तेना
रह गन्द चमू चित्त जोरा जेना

कहु प्रेयसि कानहि पार्थ तहाँ
सुँह भूमि रही सुख बेरि कहाँ
रजनी अदि जगति लाजहि मे
यद चिन्त सुभ्रू रस काजहि मे
छल जे द्विष मे अभिलाष ओते
रस जीतष मे कर यत्न जते
मज भाग्यहि पाओल ई सुपरी
उपहारक बेरि मे लाज करी
रग - रंगहि शत्रुक चोट जते
रस गुरूपहि काटल की ने ? तते
कई को कर दास चलायष जे
गुरु भाग्यहु काम सतायष ते
निज अंगहि अंग सतलष जे
अरधाङ्गिनि ! की यश पायष से
नहि आष विरोध लडाउ अहाँ
रस भोगक ते रस मोष महा
मान उल्लुक उत्तर हेतु भेली
भद्र सोचि पुनः सकुचाय भेली
हुनि भूखल याचक आति कथा
रह द्रव्य अवेतहुँ सोम यथा
रह लाज मदी मजदूर जते
नगुराद चमूक चदाइ तते
लनु प्रेमक प्युहहि दूटल से
सभ सम्पति नारिक छटल से

विजयी गढ़ तोड़ि ने मानत जे
रस रंग महा तहँ ठानल ते
पद पाइल रूपहि देखि कही
भय भेलि पराभित नारि सही
यदि इन्द्र एकान्तहिँ भेल जहाँ
नहिँ आनक हो परवेश तहाँ
मन कल्पित बात बखानल के
अनुमान प्रमानहुँ मानत के
पुनि इन्द्रक आन्तहिँ भेल कथा
सुनि नागरि कोभि जनाष व्यथा
रस - रसनि रोष गुलामीति से
किन्तु काल कला दरशाओलि से
पुनः मानल मानिनि बात कोना
रूप हारल सँ गति होअ जेना
विसराओलि चैर विरोध जते
तहँ प्रेम सही तहँ रोष कते ?
गृहिणी गुन जागरि पावि गृही
वदि स्वर्गि सौ सुख मातु मदी
सुहु मोद मदीरवि मन्त्र महा
परमेश - पदो - सुख तुच्छ तहाँ

मधुमास मधुमय सुभत सौरभ महब मोद बढ़ाव
मधु मत्त कोकिल मधुर कुहु कुहु मदन जगाउ
मधु जीवनक मधु मोति दम्पति निरत मधु परिहाम
मधु-शामिनी मधु-भिलन मधु क्षति जगत मधुमय भास

मति काम कला-रस मे सुख सौं
मधु पात्र छुटे न बुझ मुख सौं
नहि ब्याक मुधा पुरने छन मे
रहि जाय दुःख त्रिधा मन मे

बहि गेल विनोदहिं रीति कोना
तुपितो जन पाणिक पानि नेना
बिबसो सुकि दम्पति हारि रहै
चिरहो सुख के कवि गावि फहै

रेन-रासिक विभिर-पट कै नितुर छेने हाथ
मुन्दरी सेफालिका के रहै मति मिलाय
तोहि भाषा नवल जोरी बिछ मोर चकोर
कल अनर्थ मे करण नित प्रति महापापी मोर

मोर प्रेम विभोर दम्पति विकल सुनि खग गान
बोकि उठि दुष्ट निन्द मिशिकै मन बिछोड़क कान
हार टटल संधि संधिहिं बलति तजि भिय संग
नय गच्छे दुखिद पिणित करण लाज अनंग

निधुवन निरत नव जागरिक सिन्दुर पसर मे भाल
गगनक मुकुर मे सैह की प्रतिफलित प्राप्त काल
सुन्दर मदन अति आलसहिं दधि छीन देखना जाय
चन्द्र राका दिवस उपगत रूप रह दरसाय

बलु अजुन कोबर कोतुक के
वरियात विदाइक योतुक से
नय देल, महासुद पावि रह
पलाराम विने युत बाठ कह

दिन बारह पणक कोप जते
रहि पार्थ विलासु ताहि एते
अभिलाष, बुधिभिर सौं कह से
हउ जानि विछोड़ व्यथा सहु से

वरियातक संग बुधिभिर सौं
बलु अजुन कै तजि सिन्दुरसे
मन माइक प्रेमहिं रासि एते
तन जाय हठे निज देरा जते

एत हो नित रंग सरंग महा
नव कौमुक मे पित काल सदा
निय गावधि गारिक गीत कने
बिहँसे सुनि अजुन मोर मते

मन पार्थक मोनहिं मस्त जहाँ
दिन कोप विरत विलम्ब कहा
मुख काल पहचानै चादि गरु
सुख पासर सौं लण मात्र ठर

अखन मन पड़ माय भाइक बिल प्रेम जगाइ
छनहि छन उद्वेग निज घर हेतु पार्थहिं पाइ
अवधि-कल्पनि अम्बुधर कै छनहि कम लमिचाउ
मुख-चरी चित-बिहै चरितहुं बास रिस टक लाउ

पार्थ कह नहिं उचित रहि बल वैसले रहि जाइ
श्वसुर नामहिं होय परिषय कुलक कीर्ति मसाइ
नित अवदा क्रमहिं सम्भव जगत के नहिं जाग
श्वसुर सदनहिं सतत रहनहिं रथान सन मनुमान

विनय युत भर्तृन वलीनें ई वचन कदि देल
प्रथ पुरक दिन आब हमरा अति निकट भै गेल
उचित थिक जे पाबि अनुमति काह हम निज देश
नाय भाइ समाज धित सौ छुटए कष्ट करोरा

हो भायू बाछी मधुर रस सानी विनय सौ
मने भानी कोहो गमन इठ ठानी एतय सौ
थिको कै अज्ञानी हम ने किछु जानी कि अथितो
अहाँ की लानी वै ब्रम्ह युति भानी नमित भै

पार्थ ई वलभद्र वच सुनि कहल अति हरषाय
अनेक कृत सम्मान के नित से कहल की जाय ?
तेँ अथित नहिँ थोक ई जे प्रणक सुधि विसरण
रहे थिकमि हम आव अनतय ई ने अथित सुभाय

गन्धि दिवस नित भाय गन्धि दिन वृष आता गन
भन गाला मे दिवस द्रौपदी गन्धि छनहिँ छन
प्रजा पुत्र गनि रहे अन्धध दिन हुन सौ दारे
जम मन जागद सबहिँ निन्दि सभ छन थिकारे
पल पल पर पलटि कै देखा गमन पथ नहिँ धरी
समान जगद नहिँ होयत की बहुत आव हम की कही

हनि वचन पलटायो मानल सभभिति कैलहिँ उचित विचार
गन्धायहुँ मे छपरि पदाशोल संचित होष वस्तु व्यवहार
अन्नपुर में आयोयन हो थिकिय वस्तु के करत सुमार
वस्तु विदाइक शहर सै ले सोठल बहुविधि भारक भार

खसुर घर दुहिता गमन धित देवकी सुनि लेलि
वात्तिकाक वियोग सुमि से अति बेकाहुति भेलि
काहि पतन अनेक सौ कत बरष पोषण कैत
से सिनेहक टुकी कै हा ! लय वक्ष पथ खेल

आब केकरा पाल प्रेमक करब हम व्यवहार
आब ककरा प्रात उठि के करब चार सिंगार
आब ककरा कान्य कौशल रीति गीति सिखाय
बासिका कलिका विकच ललि नयन लेब लुझाय

अनय सौ कत पतन पोशल सुखक आशा लगाय
दिरलि किछुओ दुखित देलहुँ राति राति बिताय
तरुणहिँ सै चहु अपरिचित सोनि आशा फूल
बिधि लिखल थिकि भाग्य पाला माय काचक तूल
सोचि जग युवतीक गति ललि भैरव हिय मे धेलि
से विनिध अपदेश अनुपम भद्रिका कै कैलि
कहलि तिय तम पाबि जगसे वेह जानय नीति
भय सुहागिनि जाइ सासुर लिखी पति कुल रीति

खसुर गृह कुल वधुक हित थिक अपर जन्म स्वरूप
छुट दिता कुल रीति हो पति कुलकहिँक अनुरूप
सावधानहिँ चलष राजय काज मे मन दाँअ
पद कुपथ पथ हुनव हो नहिँ भाग्य राखष होष

दम्त पंक्तिव बीच रसना करै निति दिन नास
रात सौ पथितहुँ दुखो रह दुखी दाँतक पास
कुल जनक कटु वचन सहिना सहष नीकक आश
धेय सेवा निरत रहि नित करष सासुर बास

स्वगुरु पितामह भानि सासुकेँ माता मानव
पतिक सहोदर भाई तनिक तिव भगिनी मानव
लौकिक संगति ननदि सखी मानव परिवारे
समस्त संग सम समय सरल राखन न्ययहारे

पति के मानव देवता प्रेम सहित सेवा करके
पहि लौकिक परलौकिको गहन गहन सुखसो सरल
पृथ्वी में गृह कार्य कुरावता सम खन मनमे लावी
पाक पटल पटुता पौनहिपर परहुँ प्रसादा पावी
पट परिहन रचन सुवि नव सब कला कुराव दरशावी
पावी पति पर परम प्रतिष्ठा प्रीति रीति अपनावी

प्रभा रूपहिँ गुणवन्तहिँ करज जोवन दान
भजनपूर्ण सदश सुधितक हेतु मन प्रदान
रोग पीडित जनक सेवा रूप निशिदिन छद
बोन दुखिया दुख हरण मे निरत प्रेम प्रगाढ़
गौर उगयक हेतु छाया शान्त व्यजन समान
आन हन आरवान बाग्या शत्रु चबडी जान
मनन निज उदार शायब बचन मधु मन भान
प्राप्ती हेतुक शुद्ध लक्ष्मी रति करव कल्याण

पति तपेँ कन कन उपदेशक घनन देवकी बेल सुनाव
पत्नी सिया दुह दुह विशुरन दुख असह सहन कर कहल ने जाय
प्राप्त समय शुभ लान महोदय शुभ शुभ मंगल गीतक गान
गावि पुष्पाञ्जन करवि नारि गए जे विधान धिक समय पयान
सखि सख्यनिधि जननी भगिनी रोदन केँ निज नेह जनाय
वदे प्रियार्क वेदन क्षीनल मिलनक सुख दुर होइछ जाय
मिलि भाव मनसो व्याकुल भावहिँ बिलखि सुभद्रा रोदन छान
दान्य दुख श्रिय जन विश्लेषक असह जानिकेँ केँ नहिँ कान ?

भद्रा हीतल प्रेम पतिक पद प्रतिपल प्रवल रूप मे जाग
नेह नैहरक मोर न्याज सौ नयनक पथ सौ कप रहु रयाग
करवि विदा कुजरीति-मतहिँ सभ भूषण बसतहिँ केँ सन्मान
शास कथासिनि दासी शिपिका संग बस्तु दय जानो खान
कत कत धन वै रहु अजुन केँ हलधर मान कहल नहिँ जाय
विदा समय सहितहुँ विछोह से नअहिँ रहु कत विनय सुनाय
कैल विदा बहुविधि आदर सौ कतिराव प्रेम भाव दरसाव
विछुरन दुख सह विदल मे पत कृष्ण संग भै बलता भाव

पथ विश्रामो विसह व्यग्रतेँ निज मन्दिर मन लागल ध्यान
पत्नी दिन अवसान जानि जेँ आतुर कर निज बास पयान
बाट बटोही मान-पद फट धनि धनि रमनी क्याहु नरेश
सहित सोहागहिँ सुत पुन सुख सौ रदधि शुभाशिर देधि अशेष

पार्थ आगम दिखस मन गुनि मोद कत मन जागु
इन्द्रप्रस्थहिँ साज साजन भव्य पुर जन लागु
माइ भूवक संग कुशिक द्विप द्विप अधिकार
तुपद-तनपा मनक गति जे से कहल नहिँ जाय
नगर सरि मे मधु महोत्सव ध्वज-धताका शठ
स्वच्छ सुरभित सतिल सिंचित सभ सदक लघु पाट
यस सौ रवि रवि सनारल सबहुँ निज निज धाम
बदल शोभा इन्द्रपुर सौ इन्द्रप्रस्थ सलगम
आगतपतिका सदश प्रसाधन नागरि नगरिक भेल
पदहत छल जे बिरह-भक्तिमता से सहजहिँ दुरि गे
डगर डगर पर-पर नर-नर मे बहल पहल दरसाव
कनु समगति उल्लासक तद नय कम्पद वेग लखाव

पार्थ प्रत्यक्ष दिन पुरल मन मुनि प्रजा प्रमुदित भेल
कल्प मन चल-पल विताय्य ज्ञान मुनि सभ गेल
छनहि छन सब पथ ताकर धित बिन ने पाउ
ईद दिन मे यवन जहिना यान दिश टक लाउ

अनुनौक आगमो वषार बार मोद सौ
बाद श्यामनौक बादि भीद मे निनोद सौ
बासनो बजित हर्षनाद सुनि लेहु ई
पार्थ चन्द्र हेतु प्रेम सिन्धु कउ वेहु की

वीथ बाटहि मे समारम भेल पार्थक संग
भावि जय-जय सबहुँ हैरतु माल प्रेम वसंग
पार्थ नृप पद प्रखल तत्रहिँ साक गद्गद भेल
मेह नौर बदैत हुनका अंक मे गदि लेल

पार्थ सौ परसैत पद तहँ भीम लेज उठाय
कउच सम तन मध्य मान् प्राथ पलटल आय
नकुल को सहदेव कैलहि पार्थ पदहिँ प्रणाम
पुलक पुरल मुख्य दुहु जन मूक चित्र ललाम -

प्रजा समूहो अभिवादनो करे
पूरैत पार्थो कुजलो मुदो भरे
रने रने से नगरे पथे बह
कहै भला के सुपमा जये सह

नगर नारि धटारि चढ़ि-चढ़ि देखि मुद मन पाउ
न्यायनक दशाक्ष सूचक फूल बहु बरिसाउ
दाम टारहिँ आरतीहुँक अमल ज्वि वरसाय
नगर मोद महोत्सवहिँ मे मगन बुभुजा जाय

हुन्ती संगहि कुन कामनि गए भवन द्वार पर ऐली
दम्पति परिक्रम हेतु सबहि मिलि यन्तु साजि कै लेली
गादिनि मीत गाव समयोचित मुनि सुनि मुद मन पागे
कावन जलध मुन्दर नव जोंकी जानुरता अनि जोगी

पार्थ स्त्रीप्र जाधि कै प्रमाण कैल माय कै
माय हाथ राखु मा विजेय मोद पाए कै
दीरव को थिछोद यामिनी अमाश्रसान मे
भानु रूप मासमान भेल मुद ज्ञान मे

रहु दम्पतीक विश तटि औपही देने
मुद लहरि दोर मे विपल कुञ्ज कण देने
कर चुरी शीश मिन्दुर इनर शिवि राजधु
मम प्रति सिनेह पति चटल जगत धर भागधु

कुलक रीति परिक्रम कै दम्पति ले बल्लो रतिधाम
नागरि गए मिलि विवि विधान सभ पुरवधि गावि हुलास
विजगण हृषीकेश सौ आशिष बंश चरनक देल
शुभ शुभ गावि शुभाचोन मे रत नारि सुहागिनि भेलि

कै समान विधि विधान
नारि शृन्द कर पयान
पार्थ मोद मगन भेल
औपहीक भवन गेल

पाञ्चाली ललि पार्थ आगत तहँ उठे करु वन्दना
पार्थो प्रीति प्रणव मोदित मने भापु मुन दे प्रिये !
ई सन्देश विदेशहुँक अनलो प्रेमे करी अर्पणो
आह्वानविधि मे सदैव रहती इच्छाहिँ कै त्याग कै

कह कृष्ण, सन्देश नयीने प्रेमहि पाविय दान
एहन रत्न के केने भला कहु सत्त करत सन्मान
पद अनुकूल त्याग कैन्हुँ पर मन राखन अनुकूल
दक्षिण भै दक्षिण पद पूरन होय नहिँ प्रतिकूल

पार्थ मुदित त्रिहुँसेत बल आगन सौं
आधि सभा भै भिल प्रजा परिजन सौं
पुद्गधि सेवकहुँ पुराल कहधि पुन सव सौं
नगर महल रह गूँजि महोत्सव - रव सौं

वसु विमोदक मयडली कहुँ कृष्ण के लप संग
कह उमंगहिँ सवहुँ भिलि-निलि सार हासक व्यङ्ग
वही पार्थक कहन कठगर तकर त्यागि विचार
पुद्गल हरि सौं कहुँ धीपनि धरक भातक स्वाद

धीकृष्ण कहलन्हि, बाल धयसहिँ स्वाहु बारिक भात
पल्लो पितर कहुँ फकर धीवरि भात पोखल गात
पुनि प्रसन्न कह वसुदेव, हुत की धिकहुँ नन्दक लाल ?
करिछान कह सन्देश मूढहिँ में उठल शैदि काल

त्रिहुँसि हरि कहु, पिता सुप्रो नन्द पालक मान
करक हुत के ककर जनमल से कहत के छान
सुनि सकल समाज हरि - बच मुग्धता गहिँ लेल
ललि सुप्रिष्टर लतए अवज्ञत से सभा बढि गेल

अयोध वाट सौं देखल नयु मोद महानि
पाथों पुर प्रत्यागम कैलन्हि अनुमाने
जाइ अवश नरपति पहुँ मन नय्य विचार
नभ - पथ तजि इन्द्रस्थ अपिराज पथारु

तृपो नारदो आगतो सुनि कै
मिश्र भाइ सँगे शुभे गूनि कै
करे भक्ति - भावार्चना लाए कै
रही मोद शंका बुद्ध छार कै

मुनिवर शुभागको सुनि कुन्ती नवल नभू ले
तहँ आधि नव करु सिर धिनती कहु मुदित भै
पद कल्पतह अहँक ५५ विस्तमरालिक समाने
कह आशिपहिँ कृताय वर माँगवे की आने
कहल मुनिवर, अहँक अभिमत आय भूष पुरि लैत
धनवर्दिनि मद्रिका सुत किलकि कोर छेलैत
आल्यधयसहिँ देत से यल र्वर्ष दुष्ट नराय
दिवस-निशि जग जगमगित बस रहत स्वर्गहुँ छाय

आधि शैवरी भक्ति भाव सौं मुनि केँ कैल प्रणाम
सौम्य भाव सौं देखिहि आशिष, पुरत सकल मन काम
हुहु सपरिक उर - गंगा में बाड़ी प्रेम - प्रवाह
एहि कुज नय्य दृथा को माद्री यथा करु निवर्वाह

मुनीशो कह पाण्डवो सौं कथा ई
लखी आगमी आशुनी जलयो ई
नभो मार्ग कोनुहले" त्यागली जै"
कहो इन्द्र सौं जाए शीमे बली तै"

कह अर्जुन, मुनि ! कथा-तरी यल तरलहुँ अवधिक उरधि महान
सकलिक नीकक धाँ केँ इच्छा रह जानी आधया अज्ञान
तै" हसरहुँ सव अधमक उतर अतिरुय कृपा कैल मन मान
जलव कि उसर उर्वर भूमिक बर्षा नय्य करे थिलगान

कहल गुनीश विश्व मे अर्जुन ! ई उज्ज्वल यश लेल मदा
पाति प्रणे पुरुषार्थहि पौलहुं पद प्रातः स्मरणीय अहाँ
जीवु जे जग शत्रु - भाव धर नीर बंशधर प्राप्त कर
भांगु राज्य अखण्ड सबहुँ मिलि धर्म गृहस्थक जनु बिसरु

करु प्रेम निज धन्यु - बर्ग मे सतनेहो किछु पद बर
पहुँ भ्रमहुँ नहि विदुन प्रपञ्चहि धर्म मार्ग केँ जनु बिसरु
हरु दुख दुखानि देखि कै भग - पथ मे प्राप्त प्राय पद
हरु प्रभु सौँ पैर्य परु जग पुरुष धिक्हुँ पुरुषार्थ करु

संज शक राजित कर सुर गण सेवहि सुनि बित भाव
भोगी शयन रमा - रत निज प्रति पूज्य प्रजापति राज्य
गोपालक विश्वम्भर पूरक प्रण यश जग अनुर
आश्रय आश्रम आश्रमस्थ गृहि नर नारायण रूप

तलै बिहैसैत कृष्णो आशि गेला
मुनिक संग लोकि कर नत माथ भेला
पदहि पर - कंज मुनि ई नम्र भाष
अवन साधा क जालो समष्टि राखू

हे कृष्ण ! नृपि गृह नाटक सूत्रधार
माया नटीक बरा जीवक नृत्यकार
कर्मनुसार कहुँ रूपक स्वांग लाव
भानु बिने जनु कैसाबिध मोहि भाव

कृष्णहि सौँ मुनि नम्र बितै कण पाण्डव सौँ पुनु दं बजला
आन बली असुरेशपुरी कर बीण बसण्डलु लै चलला
सोदर संगहि भूष पङ्क पद - पद्महि नारद बेरि बिरा
ई 'हचिरा' शिष्य दैत बख भोरखु सदा, शुभगाथु सदा

इति श्री 'सुभद्राहरण' महाकाव्ये पार्थपुनरागमननाम

त्रयोदशः सर्गः ॥

श्री भंगलमयि मूर्तिमती मा ! भंगलकारिणि विनय करी
भंगलमय नम धवन रचन ई भंगलदायक करहि धरी
भंगल काव्य प्रसाद अहिध धिक नत रघुमन्दन मोगि रही
भंगल मोद रसिक जन पावथु भंगलमय हो सकल मदी



व्योम रस वसु चन्द्र (१८६०) धत्तर शाजिवाहन भूप
शारदी हुर्गोत्सवक तिवि शम्भु परम अनूप
दिवस रवि मुत पूरि पुस्तक पूजि पद् जगदम्भ
कैल अर्पण नमित मस्तक आरा शुभ अवलम्भ

—101161—



कवि-वंश-परिचय

नान्यदेव कर्णाट - नृपति - कुल - रवि सन मानी
मिथिला देराक निशि - अराज नशि प्रगटल मानी
निज प्रमुत्त बल देश विदेहक शासक भेला
राज्य व्यवस्था सहित धर्म-ध्वज धिर कै देला
दुखित दशा निज देरादिक देखि दया कर आनि कै
अवतरला पुन जनक जनु लोक रहै अनुमानि कै

चित्रगुप्त - वंशीय कर्ण कर्णाटक वासी
मूल बल्लभन 'लक्ष्मीकर' बीजी मुख रासी
सम वंशज कायस्थ कगल कुल मंत्री श्रीधर
संग आनि नृप नान्यदेव मिथिला शासन कर
श्रीधर 'श्रीधर' मूर्ति कै अम्हराऊदी माम मे
स्थापित कै मुरपुर गेला उम्हल कै निज नाम के

'बोधिदास' पर - दार - इष्य - हिंसा परित्यागी
गिरा गौरवित भानु गंगदिक प्रति भद्र भागी
"गंगे ! याहि पवित्रताम्" ई वचन सुनाओल
'पुरुषपरीक्षा' मध्य ताहि विद्यावति गाओल
अति प्रशंस सम वंशदिक ओ जनु अवतरो जला
धर्म चरित्रक बलहि से परमछाहुँ मे लय भेला

ओइनवार - कुल - नृप - किराट शिवसिंह प्रतापी
जनिक 'अभियंकर' सचिव 'बोधि' वंशज यश व्यापी
मिथिला राजक अभय दान ओ पुमि लै आओल
गाढ़ समय मन्त्रित्व धर्म पालक यश पाओल
हुनक रचित कविता कलित कीरतिकै राखल अपल
जनिक गुणावलि गाव ने विद्यावति ई पद रचल

"कोति त्रिपुर गुणनाथ" शोक के अतिशय आगर
कोष काव्य आकाश आदिक अभिधारक सागर
सबकर कर सम्मान पुजन सौ नेह कदाचि
विप्र दीन अति दुग्री सधैं की विपद कोशविष
कायस्थ मीह दुर सिद्ध भद्र चन्द्र गुण इव राशिधर
'कविचंद्रहार' कल उचरइ अमिय वररत्न 'कविधर'।

'अच्युत' सुत नृपति सचिव पद प्राप्त "विजयधर"
तनिक ततव 'रघुनाथ' सदा से सेवक रघुवर
पुत्र • रत्न कर प्राप्त 'कृष्णकर' सन भद्र भागी
'केशनरायण' नृपति सचिव • हरि पद अनुरागी
'अच्युत' 'भीमादिक' सनय तनिक भूप सेवा निरत
कुल परम्परा धर्म के पालन मानधि परम प्रत

कल उचरइ कमत प्रभाकर महिष महेसे
जे विद्या बल प्राप्त कैत भिविला सन देशे
नृप 'राघव' राघव समान तेहि कुल से जानू
थो 'अच्युत' सुत 'नाथ' 'यछाई' सचिव • अनुमान
नृप सखास वीरु रहै पावि अनुग्रह धनक भद्र
नृप अनुरासन स्वामि से 'वीरुसाई' क गहल पद

नरपति 'राघव' कुल युद्ध करने चित धेलन्हि
दल बल पयसी प्रेपि नाश तकरो कै देलन्हि
केल प्रदर्शन सुजन 'यछाई' क 'काली' बुझि बल
पावि विजय नृप हर्षहि देलन्हि महि सेवा फल
तनिक वंशधर गल ततहि बसला मोद अपर मे
नृपक देल महि पूर्वजहि भोगी हम "टहुकार" मे

• राख विशारो दास—मिथिला दर्पण

† सुहृद भाषयसी—नि० भा० इतिहास

'नाथ' सनय रहू नाम 'लालमणि' वंशक मणि सन
तनिक पुत्र हरि भक्त नृपक सेवक 'नारायण'
'हरण सिंह' तसु सनय तपहि मे निरत सदाचन
'जयजयराम' क सन सुपुत्र जै पाउ विचक्षण
'भाइशाल' पुत्र 'वलटसिंह' जयजयरामक पुत्रवर
एक सेबल नृप कइ कै तनिक अनुज गण के अपर

'वलटसिंह' हरिमकिक बल दुइ पुत्रो पाओल
'रघुनन्दन' 'हरिनन्दन' दुहु जन नाम धराओल
'कटसिंह' नृप सुत 'गोपीधर' अतिराय हागी
काव्य रसिक, कवि, कविसमाज बसि तेहि सनुमानो
बालहुँ मय मे कै कृपा विष्ट जीविका देल से
फान्मकला रुचि कमहि मोहि संसर्गक फल भेल जे

नृपकुल सेवा निरत बहुत निज बयस बिलाओल
कवि जन संगहि कमहि काव्य रचना मन लाओल
जखन जेहन मति देखि अश्विका से रचि खेलहुँ
मैथिलि हिन्दी बचन मध्य बहु रचना कैलहुँ
नोक भेल अथलाइ वा अम्ब कृपा फल थीक ई
मुघ जन सैह विचारि कै अपनाबधि से नोक ई

बसि सल्लशदे प्राप्त प्रन्व मैथिली में रचल
नत तिर कोटि प्रणाम करिज मैथिली चरण मे

—॥ इति अनुभूयाम् ॥—